Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

नयी शिक्षा नीति 2020 में गांधीवादी विचार

रिंकू सुखवाल
पूर्व व्याख्याता
शिक्षा विभाग
हाड़ी रानी टी.टी कॉलेज
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर, राजस्थान, भारत

Social Research Foundation, Kanpur

"Gandhiji has secured a unique place in the galaxy of the great teachers who have brought fresh light in the field of education-"

- Dr.M.S.Patel

किसी भी देश का विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा राष्ट्रीय विकास का प्रमुख साधन है। शिक्षा की प्रगति विकास के मापदंड को निर्धारित करती है। शिक्षा नीति किसी भी राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देती है। हमारी शिक्षा नीति 1986 से चली आ रही थी। बदलती आवश्यकताओं और परिवेश में इसमें बदलाव आवश्यक था। क्योंकि कोई भी शिक्षा नीति पूर्ण और निश्चित नहीं होती। बदलते वैश्विक परिवेश में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति करने तथा वैश्विक स्तर पर भारतीय शिक्षा व्यवस्था की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा नीति में परिवर्तन आवश्यक था। ऐसे में केंद्रीय सरकार के द्वारा 29 जुलाई 2020 में एक नई शिक्षा नीति की घोषणा की गई। इसमें प्राथमिक बाल्यावस्था से लेकर उच्च एवं उच्चतर स्तर तक कई महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं। प्रत्येक शिक्षा नीति अपने देश की वर्तमान आवश्यकताओं, परिस्थितियों तथा दर्शन पर आधारित होती है। इसी प्रकार नई शिक्षा नीति 2020 भी आधुनिक शैक्षिक विचार धाराओं, दर्शन ,आधुनिक आवश्यकताओं

के साथ–साथ गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है। आज से लगभग 100 साल पहले गांधीजी ने शिक्षा संबंधी जो अपने विचार, दर्शन प्रस्तुत किए थे, आज उन्हें नई शिक्षा नीति 2020 में क्रियान्वित करने का प्रयास किया जा रहा है। इस नीति में ऐसे बहुत से पहलू है जो गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है।

गांधी जी का शिक्षा दर्शन उनके जीवन दर्शन पर आधारित है। उनके अनुसार सत्य, अहिंसा, त्याग, निष्ठा एवं सहानुभूति आदि मानवीय गुणों को शिक्षा द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने शिक्षा की गतिशीलता के पक्ष को अपने शिक्षा दर्शन में समाहित किया था। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक को शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, बौद्धिक एवं अध्यात्मिक गुणों को उत्तेजित करके उसका समुचित विकास करना होना चाहिए। जिससे वह भविष्य में अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सकें और समाज का उपयोगी अंग बन सकें। वह ऐसी शिक्षा चाहते थे जो बालक को स्वावलंबी बना सकें, जो स्वयं आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक सभी प्रकार से स्वावलंबी हो। इसके अलावा शिक्षा का लक्ष्य बालक में नागरिक गुणों जैसे– सामाजिकता, कर्तव्यपरायणता, कर्म निष्ठा, कर्तव्य पालन, उत्तरदायित्व को समझना तथा प्रेम, सत्य, सहानुभूति सहयोग आदि गुणों को विकसित कर सकें। उनके अनुसार शिक्षा रुचिकर और उपयोगी होनी चाहिए जो बालक को क्रियाशील होने के अवसर दें उसका स्वतंत्र विकास होने दें। बालक को किसी भी स्थानीय उद्योग एवं हस्तशिल्प के माध्यम से शिक्षा दी जाए जिससे बालक अपने भावी जीवन में स्वावलंबी बन सकें। शिक्षा के इस उद्देश्य से गांधीजी का तात्पर्य बालकों को मजदूर बनाना नहीं था बल्कि वह चाहते थे कि प्रत्येक बालक कमाते हुए कुछ सीखें और सीखते हुए कुछ कमाए। उनका मानना था कि सभी विषयों की शिक्षा किसी स्थानीय उद्योग के माध्यम द्वारा दी जानी चाहिए। गांधीजी की क्रियाशीलता तथा ''करके सीखना सिद्धांत'' में विश्वास करते थे। क्रिया को उन्होंने शिक्षण में बहुत महत्व दिया और कहा कि बिना क्रिया के सीखना संभव नहीं है।

Social Research Foundation, Kanpur

उनकी बेसिक शिक्षा बालकों को क्रियाशीलता से जोड़ती है। क्रिया द्वारा बालक को अनुभव प्राप्त होगा। बालक को कार्य प्रयोग एवं खुद के द्वारा उसकी शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करवाना चाहिए। उन्होंने शिक्षा को जीविकोपार्जन का प्रमुख उद्देश्य माना है। वह शिक्षा जो रोजी–रोटी ना दे सके, आत्मनिर्भर ना बनाए, बेरोजगार रहने दे।, वह व्यर्थ है, बिना आत्मनिर्भरता के व्यक्तित्व का कोई पक्ष विकसित नहीं हो सकता। तथा गांधीजी के अनुसार हस्त कला को चुनते समय बालक के सामाजिक, प्राकृतिक परिवेश, उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति तथा रुचि को ध्यान में रखा जाना चाहिए। गांधी जी की शिक्षा योजना मुख्यतः प्राथमिक एवं लघु माध्यमिक कक्षा स्तर तक ही सीमित है।

नयी शिक्षा नीति 2020 में अध्याय प्रथम जो कि प्राथमिक शिक्षा से संबंधित है। इसमें लचीली, बहुआयामी, बहुस्तरीय खेल आधारित, गतिविधि आधारित तथा खोज आधारित शिक्षा पर बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त, ''भाषा, अक्षर, गिनती संख्या, रंग, आकार, इंडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियां और तार्किक सोच, समस्या समझाने की कला, चित्रकला, अन्य दृश्य कला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल किया गया है। इसके साथ–साथ अन्य कार्य जैसे सामाजिक कार्य, स्वच्छता, समूह में कार्य करना, मानवीय संवेदना, अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्ति और सार्वजनिक स्वच्छता और आपसी सहयोग को विकसित किए जाने पर भी शिक्षा नीति में ध्यान केंद्रित किया जाएगा और प्रारंभिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का शारीरिक, संख्यात्मक, समाजिक, संवेगात्मक, सांस्कृतिक विकास, प्रारंभिक भाषा, कला, कहानियां, कविता खेल को इसमें शामिल करना होगा (1.2)।'' इसके अलावा राज्यों को कला व विज्ञान मानविकी भाषा के शिल्प और व्यवसायिक विषयों सहित व्यापक श्रेणी के विषयों को अधिक से अधिक लचीला बनाने के लिए ध्यान देना होगा।

शिक्षा नीति का अध्याय दो बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पर बल देता है। शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 तक प्राथमिक

Social Research Foundation, Kanpur

विद्यालयों में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करना होगा। सीखने की बुनियादी आवश्यकता (अर्थात मूलभूत स्तर पर पढ़ना, लिखना और अंकगणित) को हासिल करने पर ही विद्यार्थियों के लिए बाकी नीति प्रासंगिक होगी। गांधी जी ने भी दैनिक जीवन की व्यावहारिक समस्याओं को हल करने के लिए अंकगणित, एवं लिखना, पढ़ना आवश्यक माना है। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है, ''लिखने से पहले पढ़ना सिखाया जाए। और वर्णमाला के अक्षर सिखाने से पहले ड्राइंग सिखाई जाए।''

शिक्षा नीति का अध्याय चार बहुभाषावाद से संबंधित है। स्थानीय एवं मातृभाषा को इसमें विशेष महत्व दिया गया है। गांधी जी को भी अपनी मातृभूमि और मातृभाषा से अटूट स्नेह था। वह भी प्रत्येक बालक को मातृभाषा में शिक्षा देने के हित में थे। स्थानीय भाषा ,प्रांतीय भाषा के पक्षधर थे। इसलिए वह स्थानीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाना चाहते थे। उनके शब्दों में, "मुझे तो लगता है कि हमें अपनी सभी भाषाओं को चमकाना चाहिए। प्रत्येक पढ़े–लिखे भारतीयों को अपनी भाषा का ज्ञान होना चाहिए और राष्ट्रभाषा हिंदी का ज्ञान तो सबको होना ही चाहिए।" नयी शिक्षा नीति में भी इस बात को स्वीकारा गया है कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से बच्चे अपेक्षाकृत अच्छे ढंग से आत्मसात कर सकेंगे। अंत: नयी शिक्षा नीति के अंतर्गत, "पांचवी कक्षा तक मातृभाषा, स्थानीय, क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया जाएगा। इसे कक्षा आठ या इससे भी आगे बढ़ाया जा सकता है (4.1)।" तथा विदेशी भाषा की पढ़ाई सेकेंडरी लेवल से करने का प्रावधान है। सभी भारतीय भाषाओं को संगठित, विकसित और जीवंत बनाने के लिए प्रयास किया जाएगा। ''त्रिभाषा फार्मूला रखा जाएगा तथा भाषाओं के विकल्प चुनने के लिए छात्र स्वतंत्र होंगे (4.3)।" केवल विद्यालय स्तर ही नहीं उच्च शिक्षण संस्थानों में भी बहुभाषावाद पर ध्यान केंद्रित किया गया है। ''सभी भारतीय भाषाओं की मजबूती उपयोग एवं जीवंतता को प्रोत्साहित करने के लिए उच्चतर शिक्षण संस्थानों तथा उच्चतर शिक्षा के कार्यक्रमों में मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग किया जाएगा और इसके लिए

Social Research Foundation, Kanpur

निजी प्रशिक्षण संस्थानों को भी प्रोत्साहित किया जाएगा (22.10)।" तथा भारतीय भाषाओं को स्कूल एवं उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की जरूरत पर बल दिया गया है। इसके अलावा यह भी व्यवस्था की जाएगी कि ''भारतीय भाषाओ, कला और संस्कृति के अध्ययन के लिए सभी आयु के लोगों के लिए छात्रवृत्ति की स्थापना की जा सके, जिससे भारतीय भाषाओं को विकास का अवसर मिल सकें (22.20)।

अध्याय ग्यारह समग्र और बहुविषयक शिक्षा पर बल देता है। गांधी जी ने भी शिक्षा में हस्त शिल्प एवं कौशल शिक्षा के साथ–साथ सभी विषयों को समान महत्व दिया है। गणित, रेखा गणित, वाणिज्य, सामाजिक अध्ययन, सामान्य विज्ञान, शारीरिक शिक्षा, संगीत, चित्रकला तथा भाषा। इसके अलावा कौशल एवं हस्तकला को ध्यान में रखते हुए पुस्तक कला, गृह विज्ञान, लकड़ी का काम, बागवानी, कृषि मिट्टी के बर्तन आदि को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर बल दिया था। उनका मानना था कि सभी विषयों की शिक्षा स्थानीय उद्योग के माध्यम द्वारा दी जानी चाहिए। उन्होंने सभी विषयों में समन्वय स्थापित करने पर बल दिया। जीवन की आवश्यकताओं और शिक्षा के उद्देश्यों में समरूपता होनी चाहिए। हस्तकला को अन्य सैद्धांतिक विषयों से संबंध स्थापित करके शिक्षण कराना चाहिए। गांधीजी के अनुसार पढ़ाई जाने वाले विभिन्न विषयों में परस्पर तारतम्य होना चाहिए जिससे सुसंगठित ज्ञान प्राप्त हो सके। बालक को ज्ञान बिखरे हुए रूप में ना मिलकर संगठित रूप में मिलें, जिससे उसके व्यक्तित्व का विकास एक इकाई के रूप में संभव हो पाए। दूसरे इससे विभिन्न विषयों का परस्पर संबंध स्थापित होगा जिससे सीखने का हस्तांतरण सरल हो सकेगा। अलग–अलग विषयों को आपस में संबंधित कर देने से ही शिक्षा के अनुभव सिद्ध सिद्धांतों की रक्षा हो सकती है।

नयी शिक्षा नीति 2020 में भी, "देश के विभिन्न उच्चतर शिक्षण संस्थाओं में भाषा, साहित्य, संगीत, दर्शन, भारत विधा, कला, नृत्य, नाट्य कला, शिक्षा, गणित, सांख्यिकी, सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक विज्ञान ,समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र ,खेल, अनुवाद एवं व्याख्या आदि विषयों को शामिल करने पर

Social Research Foundation, Kanpur

बल दिया गया है (11.7)।" तथा "मूल्य आधारित शिक्षा में मानवीय, नैतिक संवैधानिक तथा सार्वभौमिक मूल्य जैसे सत्य, नेक आचरण, शांति, अहिंसा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नागरिक मूल्य और जीवन कौशल तथा सामुदायिक कार्यक्रमों में सहभागिता समग्र शिक्षा का अंग होगी। उच्चतर शिक्षा संस्थानों में इंटर्नशिप के अवसर भी उपलब्ध कराए जाएंगे (11.8)।" व्यावसायिक शिक्षा समग्र उच्चतर शिक्षा प्रणाली का ही अंग होगा। बाकी विषयों से अलग नहीं होगा। व्यवसायिक या सामान्य शिक्षा प्रदान करने वाले सभी शिक्षा संस्थान 2030 तक समेकित रूप से दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थान एवं संस्थान समूह के रूप में कार्य करेंगे।

अध्याय सोलह व्यवसायिक शिक्षा से जुड़ा है, इसमें व्यवसायिक शिक्षा के प्रसार में तेजी लाने की आवश्यकता को स्वीकारा गया है। गांधी जी के शब्दो में "व्यवसाय या अनेक व्यवसाय एक लड़के लड़की के सर्वांगीण विकास का सर्वोत्तम माध्यम है और इसलिए जहां तक संभव हो पाठ्यक्रम व्यवसायिक प्रशिक्षण के चारों ओर होना चाहिए। इससे बालक विभिन्न विषयों की शिक्षा प्राप्त करने के साथ–साथ इस योग्य बन जाएगा कि भविष्य में विशेष हस्त कला में पारंगत हो कर अपनी जीविका भी उपार्जन कर सकें।" नई शिक्षा नीति 2020 में भी छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति में छठी कक्षा से व्यवसायिक कोर्स शुरु कर दिए जाएंगे जिसमें इच्छुक छात्रों को छठी कक्षा के बाद से ही इंटर्नशिप करवाई जाएगी। "प्रत्येक विद्यार्थी ग्रेड 6 और 8 से राज्य और स्थानीय समुदायों द्वारा तय किए गए और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप कोई आनंदमयी कोर्स करेंगे, जिसमें कि महत्वपूर्ण व्यवसायिक शिल्प जैसे कि बढ़ईगिरी, बिजली का काम, धातु का काम, बागवानी, मिट्टी के बर्तन निर्माण, आदि शामिल होंगें। इसके अलावा वर्ष भर में बस्ता रहित दिनों में विभिन्न कलाओं, खेल और व्यवसायिक हस्तकला को प्रोत्साहन दिया जाएगा (4.26)।"

नयी शिक्षा नीति के अनुसार, "शिक्षण संस्थानों, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालयों को चरणबद्ध तरीके से व्यवसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को

Social Research Foundation, Kanpur

मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करना होगा और इसकी शुरुआत प्रारंभिक वर्षों से ही व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करके की जाएगी, जिससे कि प्रत्येक बच्चा कम से कम एक व्यवसाय से जुड़े कौशल को सीख सके और अन्य कई व्यवसायों से भी परिचित हो सकें (16.4)।" उच्चतर शिक्षण संस्थान सॉफ्ट स्किल्स सहित विभिन्न कौशलो में कोर्स शुरू कर सकेंगे इसके जरिए भारत में विकसित महत्वपूर्ण व्यवसायिक ज्ञान से जुड़े विषयों को व्यवसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम में एकीकरण के माध्यम से जोड़ा जाएगा। तथा ''वर्ष 2025 तक स्कूल और उच्चतर शिक्षण संस्थाओं में कम से कम 50% छात्रों को व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया है (16.5)।" व्यावसायिक शिक्षा तथा अन्य शिक्षा का विकास साथ साथ होगा। ''अगले दशक में व्यवसायिक शिक्षा को चरणबद्ध तरीके से सभी स्कूलों और उच्चतम शिक्षा संस्थानों में एकीकृत कर दिया जाएगा (16.5)।" विद्यालय शिक्षा और उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में समता, समानता एवं समावेश से जुड़ा समान दृष्टिकोण रखा जाएगा।

गांधीजी के बुनियादी शिक्षा सिद्धांत का सर्वप्रथम सिद्धांत

जनसाधारण को शिक्षित बनाना निर्धारित किया गया था। ''जनसाधारण की अशिक्षा भारत का पाप और कलंक है। अतः उसका अंत किया जाना अनिवार्य है।" नई शिक्षा नीति में भी 2030 तक सभी के लिए समावेशी वर्तमान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखा गया है किसी भी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले शिक्षार्थियों को समान रूप से सर्वोच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध होगी।

अंत: गांधीवादी शैक्षिक दर्शन आज भी प्रबल है तथा वर्तमान आवश्यकताओं के अनुकूल है। वह ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे जो बालक को सभी प्रकार से आत्मनिर्भर बनाकर समाज के साथ भली प्रकार समायोजन करते हुए भविष्य में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सकें। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय जीवन को दृष्टि में रखते हुए वातावरण के अनुसार ऐसी शिक्षा योजना प्रस्तुत की जिस को कार्य रूप में परिणत करने

Social Research Foundation, Kanpur

से भारतीय समाज में एक नया जीवन आने की संभावना देखी गयी। अतः नई शिक्षा नीति 2020 में पूरा प्रयास किया गया है कि गांधीवादी दर्शन के उन सभी पक्षों को क्रियान्वित किया जाए जिससे भारत का प्रत्येक नागरिक शिक्षित एवं आत्मनिर्भरता बन सकें और वर्तमान वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप अपने आप को ढाल पाए और देश विश्व पटल पर अपनी एक नई पहचान बना सकें। यह तो आने वाला समय ही तय करेगा कि देश और वैश्विक आवश्यकताओं को पूरा करने में यह कितनी कारगर सिद्ध होती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धांत, लेखक– एन. आर. स्वरूप सक्सेना और संजय कुमार 2008 ,. आर . लाल. बुक डिपो, मेरठ।*
2. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार।*

Social Research Foundation, Kanpur

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

Women Dignity and Social Change

Nidhi Mehta
Assistant Professor
National College of Education
Sirsa, Haryana, India

Social Research Foundation, Kanpur

Abstract

The number of male and female in the world is almost equal. Women are an equal contributor in the transformation of society. Women play different roles at different time depending upon situations. Woman carries equal capability and potential for the upliftment of the society and nation. These different characters as a daughter, mother, working women, and entrepreneur etc. should be respected and dignified. Every invisible including all genders have the basic right to live in dignity- free of fear, violence and discrimination. India is a vast country. It is known as the country of diversity. Through centuries Indian people have developed various types of customs, traditions and practices.

These customs good as well as bad have become a part of our society. Women are worshipped like goddesses they also have given great importance to be as our daughters, sisters, wives, and mothers and other roles they play in the society. Violence against women is not inevitable. Gradually she started losing her liberty and liabilities. She started losing her own identity in the course of time. Society as a whole has still not accepted women as being equal to men and crimes or abuses against women are still on the rise. For that to change the society's age- old deep rooted mindset needs to be changed through social conditioning and awareness programmers

Every woman has equal power and equal human rights. Dignity is the right of every person. Dignity means everyone is valued and respected. So that women have the right to live with dignity such as free of fear, violence, harassment, exploitation and discrimination

Keywords: Dignity, diversity, liabilities, violence, awareness.

Introduction

Half of the total world population constitutes female, therefore half of the responsibility on the shoulder of women. Women are equal stakeholders and partner in the development of society. Equality is fundamental human right. Gender equality and equity is linked to the sustainable development, so it is a crucial factor for the development of any society and nation. Women also deserve same dignity as the men, besides equal opportunities in all spheres of life. When men and women enjoy the same rights, resources, care, support, respect, participation etc., as a result of this the society will become happier, healthier and nation becomes stronger. A strong nation is that where all types of gender live a dignified life. But harassment against weaker sections is widespread in all corners of the world. It is a bitter reality that every year thousands of women become victims of women trafficking, forced marriages, dowry etc. Any type of violence and harassment should be stopped. To maintain the dignity of women, the women should be empowered. Empowered women bring a radical change in the social pattern and relations.

Meaning of Women Dignity

Everyone has the right to live and lead a respected, dignified life. When women live in fearless environment, participate in all kinds of social activities, fulfill her own potential and capability is called dignified society. Women dignity means every woman has the right to live with the dignity that brings positive, optimistic change in the society. So women should be respected honoured and valued by every individual of the society, because they are the equal partner of the society.

Social Research Foundation, Kanpur

Meaning of Social Change

Social change is the transformation of the society in improved way. Society is a web of human interactions. So that social change is change in social relationships in a desirable way. Social relationships are the integration of social processes, social patterns and social interactions.

Women Dignity and Social Change

Society is composed of a vast and complex network of human interactions in which all men and women participate. Everyone has some potential to bring desirable changes in the society. Society can be better, improved and developed with equal sharing of duties and responsibilities between all genders. Human society is constituted of human beings. Mutual understanding between men and women takes place is a sign of social change. Respect and honour of women brings variations in the society.

Women's Rights are Human Rights

This phrase was first used in the 1980s and early 1990s. "Human rights are women's rights and women's rights are human rights". These rights include the right to live free from fear, violence and discrimination etc. Human rights are rights inherent to all human beings including men and women. Women also have the right to be educated, right to vote, and to earn equal wage. These rights claimed for women and girls worldwide and they form the basis for the women's right movement in the 19th Century and the feminist movements during the 20th and 21st centuries.

Global Feminism and Social Reforms

Movement of women's rights by social activists on a global scale is called global feminism. Feminism believes in social, economic and political equality for women. This equality in different areas brings a constant change in society. Women's decision making power creates a stronger nation. The series of campaigns occurred for reforms on some traditional issues such as discrimination, stereotypes, unequal pay and domestic violence etc. These

Social Research Foundation, Kanpur

modifications by awareness programs make a gradual change in the society.

Safety and Dignity for Women and Girls

Action Aid India promotes women's collectives that provide economic, social and political independence to women. Action Aid India recent achievements: More than 30,000 women are now part of collectives we support, 11,000 girls were trained on sexual health rights, 9,000 women were provided skills training- including craft making, weaving, zardozi work and driving, 700 women suwivors of violence received our support from various resource centres linked to Action Aid and India's first One-stop Crisis centre was set up by MP government in Collaboration with Action Aid and similar tie ups are happening in other states as well. A similar initiative called Asha- Jyoti Kendra is now underway in Uttar Pradesh.

Women Dignity for Sustainable Development

The sustainable development goals (SDGs), are also known as global goals, were adopted by all United Nations members state in 2015 as a universal call to action to end poverty, protect the planet and ensure that all people enjoy peace and prosperity by 2030. They are 17 in numbers. The goal 5 "Achieve gender equality and empower all people". Gender equality is not only a basic human right, but a strong base for a healthy, wealthy and sustainable world. Various schemes have been launched by the Government of India to achieve gender equality and women empowerment : Beti Bacho, Beti Padhao Sukanya Samriddhi Account, One Stop Center, Pradhan Mantri Ujjwala Yojana, Mahila Haat, Maternity Benefit Scheme and Women's Helpline 1091 etc.

Suggestions to Improve Women's Dignity

1. Education
2. Awareness
3. Equality and equity
4. Raise your voice
5. Support each another
6. Share the responsibilities and duties

Social Research Foundation, Kanpur

7. Get involved in social issues
8. Educate the future generation
9. Know your constitutional rights
10. Join the movements to empower women
11. Be a part of feminism
12. Actively participate in various programs launched for equality and equity

The Influence of Women's Dignity in Social Change

Sociologists define social change as changes in human interactions and relationships that transform cultural and social institutions.

A number of studies have shown that social change is impossible without women's empowerment and gender equality. Gender equality is both a human rights issue and a precondition for social change.

Social Change by Educating Girl Child

Women's education leads to significant social development. Improved cognitive abilities increase the quality of life for women. Educated women are better able to make decisions in various issues related to themselves and their children. Because of various governmental initiatives female literacy rate is increasing but will it is less than male literacy rate. Social upliftment is done by educating girl child. Education is the only instrument which gives women equal status, rights and opportunities etc.

Social Change through Women Empowerment

Women empowerment is essential for the achievement of sustainable development of society. It refers to making women powerful, made them aware of their rights and how they must make their own place in society rather than depending on a man. Social progress can occur by only empowering women.

Role of Women in Social Change

Women have been agents of social change. Education has made women Independent and they are no longer dependent on men

Social Research Foundation, Kanpur

to lead their lives. Because of social change there is a huge change in life of women. Women play essential role in human advancement and have a notable place in the society. They are not at all subordinate to men.

They have equal potential to sharing all the responsibilities of life. Men and Women are just like two sides of same coin. Women make family, Family builds home, Home becomes Society and Society creates a nation. Its direct meaning is that women's contribution is everywhere; it is useless to imagine society by ignoring the capacities of women. Without education and women's empowerment, there can be no development of family, society and country. In many countries now women are the head of the state. Business laws have changed to allow more women in the workplace and giving them a comfortable environment to work.

Equality and Equity and Social Change

Freedom and equality are foundational values for a social mobility. Equality and equity focuses on welfare of the society. Equality means sameness and equity means fairness. Our society is continuing to make steps towards equality and equity. For development of a society and nation we must ensure for these i.e. equal treatment and giving treatment what they need, in order to make things fair.

Conclusion

Women have been successful in improving their status in India. Social workers and political and legal environment enabled them to prove themselves as an equal partner in promoting social economic and political development of the society. There is optimistic change in the opinion of women in contemporary Indian society. Various factors such as education, awareness, modernization, social mobility, equality, equity and new economic patterns are responsible for making better position of women in a society. In this modern era women are valued and respected. In present scenario the social

Social Research Foundation, Kanpur

change for women in a desirable manner and in a better way is the need of the hour.

References

1. *Burn, S.M. (1996). The Social psychology of gender. New York McGraw-Hill.*
2. *Freedman, E. B. (2002). No turning back: The history of feminism and the future of women. New York: Ballantine Books.*
3. *Mohanty M. (ed) (2004), Caste Class Gender, Sage Publication, New Delhi.*
4. *Bordia, A. (2007). Education for gender equity: The Lok Jumbish experience, p 313-329.*
   Chatterji, S. A. (1993). The Indian Women in perspective. New Delhi: Vikas Publishing.
   Devendra, K. (1994). Changing status of women in India. New Delhi: Vikas Publishing House.
5. *Gupta, A. K. (1986). Women and Society. New Delhi: Sterling Publications.*
6. *Ministry of Education (1959). Report of National Committtee of Women's Education. New Delhi.*
7. *Ruhela, S. (1988). Understanding the Indian Women today. Delhi: Indian Publishers Distributors*
   Sharma, K.K., Miglani, P. & Sheokand, P.K. (2016). Gender School and Society. Twenty First Century Publications Patiala, Punjab.
8. *Goyal, S. (2017). Gender, School and Society. Twenty First Century Publications Patiala, Punjab.*
9. *Narula, J. & Kumar, S. (2016). Gender, School and Society. Ludhiana. Vijaya Publication:*
10. *Kumari, P. (2018). Gender, School & Society. Patiala, Punjab, Twenty First Century Publications.*
11. *www.actionaidindia.org*
12. *www.undp.org*
13. *www.womensweb.in*

Social Research Foundation, Kanpur

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

भारत–बांग्लादेश संबंध : प्रमुख विवाद

सत्येन्द्र सिंह
सहायक आचार्य
राजनीति विज्ञान विभाग
श्री राधेश्याम आर. मोरारका
राजकीय महाविद्यालय
झुंझुनूं राज. भारत

Social Research Foundation, Kanpur

16 दिसम्बर, 1971 को पाकिस्तान के विभाजन के परिणामस्वरूप बांग्लादेश का निर्माण हुआ। बांग्लादेश के निर्माण में भारत ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत ने सर्वप्रथम बांग्लादेश को मान्यता दी। भारत और बांग्लादेश के संबंध आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक आधार पर जुड़े हैं क्योंकि 1947 में भारत के विभाजन से पूर्व भारत, पाकिस्तान एवं बांग्लादेश, भारत के ही अंग थे। 1947 में भारत के विभाजन से पाकिस्तान का निर्माण हुआ। पाकिस्तान दो हिस्सों में विभक्त था पश्चिमी पाकिस्तान तथा पूर्वी पाकिस्तान एवं इनके मध्य भौगोलिक दूरी के साथ–साथ सांस्कृतिक विभिन्नता भी थी। भारत के पूर्व एवं पश्चिम में दोनों ओर पाकिस्तान का होना किसी भी दृष्टिकोण से भारत के हित में नहीं था। पूर्वी पाकिस्तान तथा पश्चिमी पाकिस्तान के बीच झगड़े का प्रभाव भारत पर पड़ने लगा था। पूर्वी बंगाल में पाकिस्तान की सैनिक कार्यवाही के परिणामस्वरूप लाखों की संख्या में शरणार्थी के रूप में पूर्वी बंगाल के लोग भारत में अवैध रूप से सीमा पार कर आने लगे इससे भारत की राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और सुरक्षा की समस्या उभरकर सामने आयी। शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में बांग्लादेशी लोग एवं मुक्तिवाहिनी सेना बांग्लादेश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे। पाकिस्तान ने धीरे–धीरे पूर्वी बंगाल में अपनी स्थिति को मजबूत कर लिया था। पश्चिमी सीमान्त पर पाकिस्तानी सेना के जमाव ने स्थिति को और विस्फोटक बना दिया। [3]

दिसम्बर, 1971 को पाकिस्तान ने पठानकोट, अमृतसर, जोधपुर, आगरा और श्रीनगर के हवाई अड्डों पर बमबारी करके युद्ध छेड़ दिया। 16 दिसम्बर, 1971 को पाकिस्तानी सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया। भारतीय सेना ने मुक्तिवाहिनी से मिलकर 16 दिसम्बर, 1971 को स्वतंत्र बांग्लादेश का निर्माण करवाया। 9 जनवरी, 1972 को मुजीबुर्रहमान को पाकिस्तान जेल से रिहा कर दिया गया। 10 जनवरी, 1972 को भारत पहुँचने पर बांग्लादेश की स्वतंत्रता में सहयोग करने हेतु शेख मुजीबुर्रहमान ने भारत का आभार व्यक्त किया।

बांग्लादेश की स्वतंत्रता से लेकर शेख मुजीबुर्रहमान के कार्यकाल में भारत एवं बांग्लादेश के संबंध मित्रतापूर्ण रहे। दोनों राष्ट्रों ने गुटनिरपेक्षता, धर्मनिरपेक्षता एवं पंचशील के सिद्धान्तों का समर्थन किया। दोनों ही राष्ट्र हिन्द महासागर क्षेत्र में शान्ति बनाए रखना चाहते थे। मार्च, 1972 में भारत एवं बांग्लादेश के मध्य मैत्री सन्धि की गई। इस सन्धि द्वारा दोनों के बीच आपसी संबंधों के संचालन सम्बन्धी प्रावधान किए गए। मार्च 1972 में भारत एवं बांग्लादेश के बीच एक व्यापारिक समझौता तथा सांस्कृतिक समझौता भी किया गया। मई, 1974 में बांग्लादेश एवं भारत के बीच सीमांकन संबंधी समझौता हुआ इसके अनुसार भारत ने दाहग्राम और अमरकोट का क्षेत्र बांग्लादेश को दे दिया और बांग्लादेश ने बेरूबाड़ी पर भारतीय अधिकार स्वीकार कर लिया।

अगस्त, 1975 में शेख मुजीबुर्रहमान की हत्या के पश्चात भारत–बांग्लादेश संबंध तनावपूर्ण हो गये। इन तनावपूर्ण संबंधों के लिए दोनों राष्ट्रों के बीच कई विवाद हैं–

सीमा विवाद

भारत एवं बांग्लादेश के बीच सीमा विवाद के कारण कई बार संबंधों में कटुता उत्पन्न हुई है। दोनों देशों के बीच लम्बी सीमा है जिसका कुछ स्थानों पर सीमांकन नहीं किया जा सका है। सीमा विवाद के कारण अप्रैल, 2001 में बांग्लादेश राइफल्स ने भारतीय सीमा सुरक्षा बल के 16 जवानों की हत्या कर दी थी। सितम्बर, 2011 में भारत एवं बांग्लादेश ने

Social Research Foundation, Kanpur

वर्षों पुराने सीमा विवाद को हल करने के लिए सीमांकन समझौते पर हस्ताक्षर किए। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की दो दिवसीय ढाका यात्रा के दौरान दोनों देशों में 162 क्षेत्रों के आदान–प्रदान पर सहमति बनी। ये ऐसे क्षेत्र हैं जो अपने देश की सरकारों से कटे हुए हैं। वर्ष 2015 में इन क्षेत्रों का आदान–प्रदान किया गया। इन 162 एनक्लेवों में से 111 बांग्लादेश को मिले तथा 51 भारत को। 31 जुलाई, 2015 को इन्हें अपनी राष्ट्रीय पहचान एवं नागरिकता मिली। बांग्लादेश एवं भारत के बीच समुद्र संबंधी कानूनों पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय के अनुबंध VII के अन्तर्गत ट्रिब्यूनल ने जुलाई, 2014 में निर्णय दिया। समुद्री सीमा के समाधान हो जाने से भारत और बांग्लादेश के बीच लम्बे समय से लम्बित मुद्दे को हल किया जा सकेगा।

फरक्का विवाद

फरक्का बांध कोलकाता बंदरगाह की रक्षा के लिए बनाया गया है। यह बांध पश्चिम बंगाल में गंगा नदी पर बना है। इस बांध का निर्माण कोलकाता बंदरगाह के संरक्षण और रख रखाव तथा इसे गाद मुक्त कराने के लिए किया गया था। कोलकाता हुगली नदी पर स्थित एक मुख्य बंदरगाह है। ग्रीष्मकाल में हुगली नदी में पानी की मात्रा कम हो जाती है जिसके कारण बंदरगाह पर जहाजों का आवागमन आसानी से नहीं हो पाता है। ग्रीष्म ऋतु में हुगली नदी में पानी के बहाव को निरन्तर बनाए रखने के लिए गंगा नदी के पानी के एक हिस्से को फरक्का बांध के द्वारा हुगली नदी में मोड़ दिया जाता है। इस पानी के वितरण के कारण भारत एवं बांग्लादेश में विवाद की स्थिति उत्पन्न हुई इसे फरक्का विवाद के नाम से जाना जाता है। फरक्का बांध के निर्माण के कारण गंगा नदी में पानी की मात्रा कम हो गयी। जिसके कारण बांग्लादेश में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो गयी। इन समस्याओं का निराकरण करने के लिए सितम्बर, 1977 में भारत एवं बांग्लादेश के बीच एक समझौता किया गया इसे फरक्का समझौता कहा जाता है। इस समझौते में अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन दो प्रकार के प्रावधान किए गए थे।

Social Research Foundation, Kanpur

बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना दिसम्बर, 1996 में भारत की सरकारी यात्रा पर आयी। इस यात्रा के दौरान भारत के प्रधानमंत्री और बांग्लादेश की प्रधानमंत्री ने गंगा जल बंटवारे से संबंधित संधि पर हस्ताक्षर किए। इस संधि की अवधि 30 वर्ष रखी गई है तथा पाँच वर्ष की अवधि के पश्चात अथवा दोनों पक्षों में से किसी एक के अनुरोध पर दो वर्ष पश्चात इसकी समीक्षा की जा सकती है। इस संधि द्वारा यह प्रावधान किए गए हैं कि यदि नदी में जल की मात्रा 70 हजार क्यूसेक या इससे कम रहती है तो दोनों देशों के बीच जल का आधा–आधा बंटवारा किया जाएगा। यदि जल की मात्रा 70 हजार से 75 हजार क्यूसेक के बीच है तो बांग्लादेश को 35 हजार क्यूसेक जल मिलेगा और शेष भारत का हिस्सा होगा। यदि जल की मात्रा 75 हजार क्यूसेक से अधिक है तो 40 हजार क्यूसेक पानी भारत को मिलेगा और शेष बचे पानी पर बांग्लादेश का अधिकार होगा। इस संधि को लागू करने के लिए एक संयुक्त समिति गठित करने का निर्णय लिया गया। इस समिति द्वारा किसी विवाद का समाधान नहीं कर पाने की स्थिति में इसे भारत–बांग्लादेश नदी जल आयोग के पास भेजा जाएगा।

नवमूर द्वीप विवाद

नवमूर द्वीप बंगाल की खाड़ी में एक द्वीप है। नवमूर द्वीप के स्वामित्व के संबंध में भारत एवं बांग्लादेश के बीच विवाद है। इस द्वीप की खोज भारत द्वारा 1971 में की गई थी। भारत के अधिकार वाले इस द्वीप पर बांग्लादेश ने सन् 1997 में अपना दावा प्रस्तुत किया। इसके कारण भारत एवं बांग्लादेश के मध्य विवाद का प्रारम्भ हुआ। इस विवाद का प्रमुख कारण भारत–बांग्लादेश के बीच समुद्री सीमा का निर्धारण नहीं किया जाना है।

चकमा शरणार्थियों की समस्या

चकमा शरणार्थी भारत में बांग्लादेश से आए हैं। चकमा शरणार्थी बांग्लादेश के चटगाँव के निवासी हैं। बांग्लादेश में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक अस्थिरता के कारण एक बड़ी संख्या में बांग्लादेशी भारत में शरणार्थियों के रूप में उत्तरी–पूर्वी भारत एवं पश्चिम बंगाल में शरण लिए

Social Research Foundation, Kanpur

हुए हैं। चटगाँव क्षेत्र में चकमाओं के उत्पीड़न के कारण इन चकमा शरणार्थियों ने भारत के उत्तरी–पूर्वी राज्यों मणिपुर, त्रिपुरा, असम, मिजोरम, मेघालय तथा अरूणाचल प्रदेश में आकर बस गए। चकमा शरणार्थियों के कारण भारत के उत्तर–पूर्वी राज्यों में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो गयी। भारत सरकार ने इस सन्दर्भ में बांग्लादेश से बातचीत की तो बांग्लादेश ने आश्वासन दिया किस इन चकमा शरणार्थियों को भारत से वापस बुलाकर बांग्लादेश के चटगाँव पहाड़ी क्षेत्र में उनके पुनर्वास की व्यवस्था की जाएगी। लेकिन बांग्लादेश द्वारा अभी तक इन चकमा शरणार्थियों की वापसी की कोई योजना तैयार नहीं की है तथा दोनों देशों के बीच यह विवाद बना हुआ है।

तीस्ता नदी जल विवाद

तीस्ता नदी का उद्‌गम हिमालय में तिब्बत में है। यह नदी उत्तरी बंगाल से बहती हुई बांग्लादेश में प्रवेश कर बांग्लादेश में जमुना (ब्रह्मपुत्र) से मिलती है। यह नदी बांग्लादेश के क्षेत्र के हजारों लोगों की जल संबंधी आवश्यकताएं पूरी करती है। पश्चिम बंगाल के लिए भी तीस्ता नदी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी बांग्लादेश के लिए। भारत और बांग्लादेश के बीच तीस्ता नदी में पानी के बँटवारे को लेकर लम्बे समय से विवाद है। दोनों देशों के बीच सितम्बर, 2011 में जल साझाकरण समझौते पर हस्ताक्षर अंतिम प्रक्रिया में थे लेकिन कुछ कारणों से यह समझौता नहीं हो सका क्योंकि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इस समझौते पर आपत्ति जताई। तीस्ता नदी जल बँटवारे का मुद्‌दा अभी तक नहीं सुलझ पाया है।

फेनी नदी विवाद

फेनी नदी का उद्‌गम दक्षिण त्रिपुरा जिले से होता है यह सबरूम शहर से बहती हुई बांग्लादेश में प्रवेश करती है। फेनी नदी दक्षिण त्रिपुरा की प्राकृतिक सीमा बनाने वाली नदी है जिसका कुल जल संभरण क्षेत्र लगभग 1147 वर्ग किमी. है जिसमें से 535 वर्ग किमी. भारत में तथा शेष बांग्लादेश में पड़ता है। दोनों देशों के मध्य जल बंटवारे और पेयजल

Social Research Foundation, Kanpur

आपूर्ति की समस्या से जूझ रहे क्षेत्रों के लिए यह नदी महत्त्वपूर्ण है। फेनी नदी के जल बंटवारे का विवाद दोनों देशों के बीच बना हुआ है।

भारत एवं बांग्लादेश दोनों पड़ौसी राष्ट्र हैं। बांग्लादेश का उद्‌भव 1971 में पाकिस्तान के विभाजन के परिणामस्वरूप हुआ था। बांग्लादेश के स्वतंत्रता आंदोलन में शेख मुजीर्बुरहमान एवं मुक्तिवाहिनी सेना ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। बांग्लादेश की स्वतंत्रता में भारत का भी प्रमुख योगदान रहा है। भारत एवं बांग्लादेश के मध्य सीमा विवाद, फरक्का विवाद, नवमूर द्वीप विवाद, चकमा शरणार्थियों की समस्या, तीस्ता नदी जल विवाद तथा फेनी नदी विवाद प्रमुख विवाद हैं। इन विवादों के कारण भारत–बांग्लादेश संबंधों में कई बार तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। वर्ष 2015 में सीमा विवाद के समाधान के लिए 162 एनक्लेवों का आदान–प्रदान किया किया। इनमें से 111 बांग्लादेश को मिले तथा 51 भारत को। इसके लिए भारतीय संविधान में 100वाँ संविधान संशोधन किया गया। फरक्का विवाद के समाधान के लिए 1977 में भारत एवं बांग्लादेश के बीच एक समझौता किया गया तथा 1996 में गंगाजल बंटवारे को लेकर एक तीस वर्षीय संधि भारत एवं बांग्लादेश के बीच की गयी। बांग्लादेश से अवैध रूप से सीमा पार कर आए शरणार्थियों के कारण भारत के उत्तरी–पूर्वी राज्यों एवं पश्चिम बंगाल में एक बड़ी समस्या बनी हुई है। इन शरणार्थियों को वापस लेने के लिए बांग्लादेश सरकार ने कोई प्रभावी नीति नहीं बनायी है। तीस्ता नदी एवं फेनी नदी जल विवादों का भी समाधान नहीं हो पाया है। इन सभी विवादों को भारत एवं बांग्लादेश को आपसी बातचीत एवं सहमति के आधार पर निपटारा किया जाना चाहिए ताकि भारत एवं बांग्लादेश के बीच तनाव के बिन्दुओं का समाधान कर आपसी संबंधों को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाया जा सके।

भारत एवं बांग्लादेश के मध्य इन विवादों के होते हुए भी आपसी संबंधों में सुधार के प्रयास निरन्तर रूप से जारी हैं। मार्च, 1972 में दोनों देशों के बीच मित्रता, सहयोग तथा शांति की 25 वर्षीय संधि पर हस्ताक्षर किये गए। मार्च, 1972 में एक व्यापार समझौता हुआ। भारत एवं बांग्लादेश

Social Research Foundation, Kanpur

की सीमा पर व्यापार को अधिक सुगम बनाने के लिए समन्वित चैक पोस्ट, कार पास्ट सिस्टम, भू–सीमा शुल्क स्टेशन तथा सीमा हाट स्थापित किए गए हैं। साझे इतिहास और साझी संस्कृति होने के कारण दोनों देशों के लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान मैत्री की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। सरकार ने संगीत, रंगमंच, कला, चित्रकला एवं पुस्तकों के आदान–प्रदान पर जोर दिया है। वर्ष 2011 में रवीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं वर्षगांठ को मनाने के लिए बांग्लादेश एवं भारत संयुक्त रूप से एक वर्ष के लिए स्मरणोत्सव गतिविधियों का आयोजन किया गया। भारत और बांग्लादेश के बीच अप्रैल, 2008 में ढ़ाका–कोलकाता मैत्री एक्सप्रेस का संचालन आरम्भ किया गया। भारत एवं बांग्लादेश के बीच अक्टूबर, 2013 में प्रत्यर्पण संधि की गई।

भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2015 में बांग्लादेश की यात्रा की तथा द्विपक्षीय संबंधों में प्रमुख समस्या भूमि सीमा विवाद के ऐतिहासिक समझौते पर मुहर लगाई। इस अवसर पर बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना तथा पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की उपस्थिति में सीमा समझौते से जुड़े दस्तावेजों का आदान–प्रदान किया गया। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री श्रीमती शेख हसीना एवं भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच सुरक्षा, कारोबार एवं सम्पर्क सहित दोनों देशों के बीच विविध आयामों पर चर्चा की और संबंधों को गहरा बनाने पर जोर दिया। भारत एवं बांग्लादेश द्वारा आपसी वार्ताओं के माध्यम से विवादों का समाधान करने के प्रयास किये जाने चाहिए ताकि दोनों राष्ट्रों के मध्य संबंधों को और अधिक सौहार्दपूर्ण बनाया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ. पुष्पेश पंत, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2016–17*
2. *डॉ. वी.पी. दत्त, बदलती दुनियां में भारत की विदेश नीति–भाग–2, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, 2015*
3. *डॉ. बी.एल. फड़िया, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन, आगरा, 2016*

Social Research Foundation, Kanpur

4. जयंता कुमार एण्ड मुन्तासिर ममून, इण्डिया बांग्लादेश रिलेशंस करेन्ट परस्पेक्टिव, के.डब्ल्यु. पब्लिकेशन, न्यू देहली, 2011
5. मैरी मैक्गवर्न, इण्डिया बांग्लादेश रिलेशंस ऑन बार्डर मैनेजमेन्ट पॉलिटिक्स, एल्फा एडिशन, 2018
6. वर्ल्ड फोकस जर्नल, नई दिल्ली
7. इण्डिया टुडे पत्रिका
8. फ्रन्ट लाईन पत्रिका
9. द हिन्दू समाचार पत्र
10. राजस्थान पत्रिका समाचार पत्र

Social Research Foundation, Kanpur

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

A Study of the Behaviour of the Closing Prices and Returns Data on Nifty Fifty Index in India in the Pandemic Situation

Madhuchhanda Lahiri
Assistant Professor
P. N. Das College
Palta, West Bengal, India

Social Research Foundation, Kanpur

Introduction

The debate in the branch of financial economics seems to be unending, especially in regard to the efficiency of the stock market. With a gradual flow of new information in an efficient market characterised by instantaneous price adjustment, successive price changes are random. The Efficient Market Hypothesis (EMH) states that stock prices reflect all available information so that prices are near their intrinsic value. Market efficiency has an influence on the investment strategy of an investor.

A market is considered to be weak-form efficient if current share prices fully reflect all information contained in their historical prices. This implies that no investor in stock market can devise a trading rule based solely on past share price patterns to earn abnormal returns.

In the early writings, dating back to the beginning of the last century, empirical justification was sought for the initial form of the EMH theory, namely the Random Walk Hypothesis [Bachelier (1900)]. The random walk which contends that successive price changes are independent to each other, occupied a significant proportion of research till the late 1960s [Cowles and Jones (1937); Kendall (1953); Osborne (1959); Granger and Morgenstern (1963); Cootner (1962)

and (1964); Moore (1964)]. There was plenty of empirical evidence but what was lacking was a formal theory. This was filled up by a more general model based on the concept of efficiency of the markets in which shares are traded – the Efficient Market Hypothesis (EMH) [Fama (1965)]. The EMH relies on the efficient use of information by investors and is often referred to as 'informational efficiency'. Fama (1970) defined three forms of market efficiency, namely, weak, semi-strong and strong forms. Each one is concerned with the adjustment of stock prices to one relevant information subset. The weak form of the hypothesis states that prices efficiently reflect all information contained in the past series of stock prices. In this case it is impossible to earn abnormal profit by using past stock price data. The lower is the market efficiency; the greater is the predictability of stock price changes. Despite earlier evidences on the randomness of stock price changes [Kendall (1953); Mandelbrot (1961); Moore (1964); Fama (1965); Fama, Fisher, Jensen and Roll (1965); MacDonald and Fisher (1972)], there are pieces of evidence of anomalous price behaviour where certain series appeared to follow predictable paths [Ball and Brown (1968), Ibbotson and Jaffe (1975), Solnik (1973)]. Due to these anomalies, there is necessity to carefully review both the acceptance of the efficient market theory and the methodological procedures of it.

An overwhelmingly significant proportion of studies on weak-form of stock market efficiency [Bachelier (1900), Osborne (1959), Moore (1964), Kendall (1953), Mandelbrot (1965), Fama (1970), MacDonald-Fisher (1971), Ibbotson and Jaffe (1975), Solnik (1973), Sarma and Kennedy (1977), Rao and Mukherjee (1979), Balla (1983), Sharma (1983), Yalawar (1988), Rao (1988), Amitabh Gupta (1991), Saxena (1992), Obaidullah (1992), Rao and Geetha (1996), Poshakwale (1996), Gupta and Gupta (1997), Chaturvedi (2000) Ahmad, Ashraf and Ahmad (2006) etc. have used either.

1. Normality Test or
2. Autocorrelation Test or
3. Run Test or any combination of these three tests together.

Social Research Foundation, Kanpur

Several other tests for establishing statistical independence in a stock price time series are also available, though sparingly used. In the parametric tests besides the autocorrelation tests, unit root tests, Ljung–Box (Q) statistic and GARCH model are also used. In the non-parametric group, Kolmogorov – Smirnov (K-S) test is also used along with the Runs Test.

Objectives of the Study

The basic objective of the study is to examine the behaviour of the Nifty Fifty stock Index after the introduction of the complete economic shutdown following the arrival and spread of the coronavirus pandemic in India in early February 2020. This was followed up by successive partial opening ups of the different sectors of the economy for the next few months which produced myriad impacts hitherto unseen of before. This provided us ample scope to examine whether the efficiency of the Indian stock market has been affected over this period. We aim to study the stationarity of the original series, whether it conforms to the normal distribution and further how to make the initially non-stationary series, a stationary one. Finally, we check the weak form efficiency of the stationary series. Thus, we have formulated the following main testable hypothesis:

The Indian stock market is efficient in its weak-form over the entire period of our study.

Database

Stock market efficiency is an important parameter to examine the nature of financial system in any country. I have selected the S & P CNX Nifty which is an index of well-diversified 50 stocks index accounting for 21 sectors of the economy.The traded value for the last six months of all Nifty stocks is approximately 44.89% of the traded value of all stocks on the NSE; moreover, Nifty stocks represent about 58.64% of the total market capitalisation as on Dec 31, 2020. The period of study has been so selected that it entails the most radical economic lockdown in the history of world as well as India.

Social Research Foundation, Kanpur

Data for the Nifty Fifty Index comprising of 50 constituent companies were collected for our study period from 1st January 2020 to 31st December 2020. The daily closing prices of the Nifty Fifty index were collected from the NSE website for our study period of 1st January 2020 to 31st December 2020 (omitting those days when there was no trading of the stock or the stock exchange was closed for a particular day). Further, we also collected the weekly closing prices of each stock to compare the volatility of the daily and weekly price and return data. This is done by considering the closing price of the stocks traded on the last working day of the week (which is normally a Friday or the preceding day, if Friday is a holiday). The daily/weekly price data has been transformed by taking natural log and then their first differences. This is nothing but the transformation of price data into weekly return data: $\ln (P_t/P_{t-1}) = \ln (P_t) - \ln (P_{t-1}) = r_t$; where r_t is the continuously compounded rate of change in the stock price, i.e., return for the week t; P_t is the price of the stock for the week t; P_{t-1} is the same for the preceding week and ln is the natural logarithm. The transformation of the price data has been justified by Granger and Morgenstern (1970) on the following basis: a) the distribution of prices is bounded from below at 0 but unbounded from above. The logarithmic transformation results in a distribution which is symmetrically unbounded and b) the transformed data is more stable and stationary in terms of mean and variance.

Methodology

To illustrate the notion of random walk, we assume that the price of a stock at time t is equal to its price at time (t-1) plus a random shock u_t which is a white noise error term with 0 mean and variance σ^2.

$y_t = y_{t-1} + u_t$

Substituting backwards from y_{t-1}, y_{t-2} etc leads to

$$Y_t = y_0 + \sum_{t=1}^{t} u_t$$

Social Research Foundation, Kanpur

where y_0 is some initial value of yt. The term $\sum_{t=1} u_t$represents the stochastic trend in y_t.

We find that the mean of y is equal to its initial value y_0 (which is a constant but its variance $t\sigma^2$, increases indefinitely as t increases. Thus, RWM without drift is non-stationary process. Introducing a drift parameter σ in the RWM gives the equation $y_t = \sigma + y_{t-1} + u_t$..Here, mean of y, $E(y_t)$ is $y_0 + t\sigma$ while $var(y_t)$ is $t\sigma^2$.Thus, RWM with drift has both mean and variance increasing overtime, again violating the condition of stationarity. Thus, Random Walk Model with or without drift is a non-stationary stochastic process. An interesting feature of RWM is the persistence of random shocks since $y_t$is the sum of initial value y_0 plus the sum of random shocks. So, the impact of a particular shock does not die away and consequently random walk is said to have an infinite memory. We also note that though $y_t$is non-stationary, its first difference is stationary $\Delta y_t = y_t - y_{t-1} = u_t$.

Analysis

The sequence plot of the daily close prices over our study has been plotted in Fig 1. It shows that there exists marked trend in the daily close prices of the nifty fifty index prices. Thus,the original time series appear to be non-stationary. The corresponding correlograms of the ACF and PACF for the original series are plotted in Fig 2. The PACF is significant at lag 1 but thereafter, it becomes insignificant; however, the ACF coefficients are significant till lag 6 and shows gradual dampening effect. Thus, we can conclude that the original series is non-stationary. The results of the Augmented Dicky-Fuller Test are shown in Fig 4(a) and Fig 4(b). The ADF tests –with drift but without trend, and with drift as well as with trend - are conducted. Here the Null hypothesis H_0 states that the Close Price series is non-stationary, i.e., it has a unit root. As the p-value of the test- statistic is greater than 0.05,(p= 0.9248), we accept the Null Hypothesis that the original series is non-stationary. Fig 4 and Fig 5 give the results of the normality tests conducted on the original close

Sonia Research Foundation, Kanpur

price series. One sample Kolmogorov-Smirnov Test shows that the distribution does not conform to the normal distribution.

Following one of the basic assumptions of the random walk model that if the stock prices as well as the stock indices exhibit random walk then they will be non-stationary series,but their first differences (i.e., the stock returns or returns of the indices) will be stationary series.So,to make the original series stationary, we difference it once and plot the corresponding sequence plot of the first differenced series in Fig 6. We find that the differenced series has become stationary without any trend component. The correlogram plot of the ACF and PACF of the first differenced series is shown in Fig 8 while the ADF Test result for both the first differenced series with a without trend is shown in Fig 7 (a) and 7 (b). We find that the p value is less than 0.05 in both the cases, so the differenced series has become stationary. Consequently, we plot the sequence plot of the Daily Close Returns of the Nifty Fifty Index in Fig 9. We find that the daily return series is stationary over a constant mean and the ADF test results in Fig 10(a) and Fig 10(b). We find that as the p values are both less than 0.05, so we cannot accept the null hypothesis of the presence of unit root and conclude that that the daily return series is stationary in both the forms of the Augmented Dicky Fuller Test. The correlograms of the ACF and PACF corresponding to the daily return series also lie well within the significant limits for all sixteen lags except for lags 4, 5 and 6and may be treated as a case arising out of the existence of the outliers. The one sample K-S test has a p- value less than 0.05, showing that the daily return series does not conform to the normal distribution (Fig. We now perform the Run Test to check the weak-form efficiency of the daily returns of the nifty fifty index over our study period. We find that the

We repeat the stationary test for the corresponding series of weekly close prices of the Nifty Fifty index. The weekly close prices have been derived from the daily close prices by considering the last closing day of the week, which is generally a Friday or any other preceding day, if Friday is a holiday. The non-stationarity of the

Social Research Foundation Kanpur

weekly close prices has been shown in Fig 14 (the time plot showing a steep trend); the ADF test statistic value lying outside the critical region thereby accepting the null hypothesis that the series is non-stationary and has a unit root (in Fig 15). The gradual damping effect observed of the significant ACF coefficients over the initial first few lags (till lag 7) along with the presence of a significant spike at lag 1 of the PACF coefficient also points towards the non-stationarity of the weekly close price series. The one sample Kolmogorov – Smirnov test statistic lies within the acceptance region, so we accept the null hypothesis that the weekly close prices follow a normal distribution (Fig 17). Thus, we find that the weekly close prices behave identically with the daily close prices. We now plot the time plot of the weekly close returns which have been calculated as per the method described in the above section. We find that the weekly close return series has become stationary as shown in Fig 18. Furthermore, in Fig 19 and Fig 20, we find that all the ACF and PACF coefficients are well within the lower and upper bounds till lag 16. unlike daily close returns. Thus the weekly returns has lesser volatility The ADF test results (Fig 21) also confirm the stationarity of the weekly return series with the test statistic not lying within the critical region (p = . Presenting a comparative tabulated result on the normality test comprising of the one sample Kolmogorov – Smirnov Test and Shapira- Wilk test for daily close prices and daily returns as well as weekly close prices and weekly returns in Fig 23, we find that the weekly return series follows normal distribution as both the p-values of the K-S test and Shapiro -wilk test are less than 0.05, so that we accept our null hypothesis of normality assumption. Finally, we check the weak form efficiency of the weekly return series. The result of the runs test is presented in Fig 24. We find that as the p- value of the runs test is greater than 0.05 (p = .779), we cannot reject the null hypothesis and accept that the nifty fifty weekly returns index is week form efficient.

Social Research Foundation, Kanpur

Conclusion

A detailed study of the daily stock prices of the nifty fifty stock index showed that the series is non-stationary and has a unit root. Differencing the series once makes it stationary. The same feature is noticed in case of the weekly close prices.Consequently, the analysis of weak efficiency of the nifty fifty index over our study period during these pandemic times from January, 2020 to December, 2020 is based on the daily close returns and weekly close returns. Both the return series are stationary. However, we find that the daily close prices have high short-term volatilities. Similarly, the daily return series have a few significant ACF and PACF coefficients but the corresponding coefficients for weekly return series are within the lower and upper bounds for all 16 lags. However, though the daily return series does not follow the normal distribution, the weekly return series conforms to the normal distribution. Finally, as regards the efficiency of the nifty fifty index, we find that it is efficient in weak – form. The severe economic lockdown measures undertaken in the pandemic year 2020 has failed to make the nifty fifty index inefficient. Consequently, on the basis of our weak – form test results we can conclude that it is not possible to reap abnormal profit during these times.

References

1. *Fama, E. . (1970): A Review of Theory and Empirical Work, Journal of Finance, Vol 26, (May).*
2. *---------(1991): Efficient Capital Markets II, Journal of Finance, Vol.46, No.5.*
3. *----------(1995): Random walks in Stock Market Prices, Financial Analysts Journal, (January/February).*
4. *----------(1998): Market Efficiency, Long-Term Returns, and Behavioural Finance, Journal of Financial Economics (September).*
5. *Fama, E.; Fisher,L.; Jensen, M. and Roll, R. (1969): The Adjustment of Stock Prices to New Information, International Economic Review, Vol.10, (February).*

Social Research Foundation, Kanpur

6. *Foster, G.; Olsen, C and Shevlin, T (1984): Earnings Releases, Anomalies, and the Behaviour of Security Returns, Accounting Review, Vol.59 (October).*
7. *Obaidullah, M. (1990a): Stock Prices Adjustment to Half-Yearly Earnings Announcements – A Test of Market Efficiency, Chartered Accountant, Vol.38.*
8. *---------(1991): Stock Market Efficiency in India: A Statistical Inquiry, Chartered Financial Analyst, July.*
9. *Poshakwale, S. (1996): Evidence on the Weak-Form Efficiency and the Day-of-the Week-Effect in the Indian stock Market, Finance India, Vol.10, No.3.*

Fig. 1: Time Plot of Daily Closing Prices of Nifty Fifty Index in India

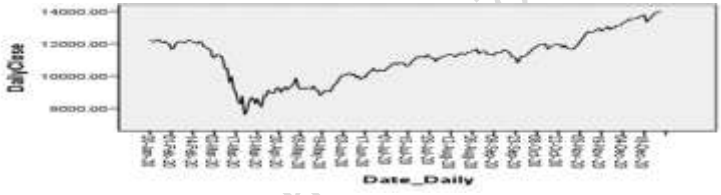

Fig 2: Correlograms of ACF and PACF of the Original Close Price Time Series of Nifty Fifty Stock Index

Sample: 1/02/2020 12/31/2020

Included observations: 251

Autocorrelation	Partial Correlation		AC	PAC	Q-Stat	Prob
.|*******	.|*******	1	0.982	0.982	244.75	0.000
.|*******	.|. |	2	0.965	0.045	482.34	0.000
.|*******	.|. |	3	0.947	-0.042	712.18	0.000
.|*******	.|. |	4	0.928	-0.047	933.78	0.000
.|*******	.|. |	5	0.910	0.002	1147.5	0.000

Social Research Foundation, Kanpur

				-		
.|******|	*|. |	6	0.887	0.118	1351.6	0.000
.|******|	.|* |	7	0.869	0.093	1548.1	0.000
				-		
.|******|	*|. |	8	0.848	0.066	1736.0	0.000
				-		
.|******|	*|. |	9	0.824	0.095	1914.3	0.000
				-		
.|******|	.|. |	10	0.801	0.006	2083.4	0.000
				-		
.|******|	.|. |	11	0.776	0.056	2242.6	0.000
.|***** |	.|. |	12	0.754	0.056	2393.5	0.000
				-		
.|***** |	.|. |	13	0.729	0.043	2535.4	0.000
.|***** |	.|. |	14	0.706	0.009	2669.0	0.000
				-		
.|***** |	.|. |	15	0.683	0.013	2794.6	0.000
				-		
.|***** |	*|. |	16	0.658	0.067	2911.5	0.000
.|***** |	.|. |	17	0.635	0.043	3021.0	0.000
.|**** |	.|. |	18	0.612	0.001	3123.0	0.000
.|**** |	.|. |	19	0.592	0.057	3218.8	0.000
				-		
.|**** |	.|. |	20	0.572	0.005	3308.7	0.000
				-		
.|**** |	.|. |	21	0.551	0.022	3392.4	0.000
				-		
.|**** |	.|. |	22	0.530	0.054	3470.4	0.000
.|**** |	.|. |	23	0.511	0.050	3543.0	0.000
				-		
.|**** |	.|. |	24	0.492	0.011	3610.6	0.000
.|*** |	.|. |	25	0.474	0.037	3673.7	0.000
.|*** |	*|. |	26	0.453	-	3731.7	0.000

Social Research Foundation, Kanpur

				0.103		
				-0.020	3785.1	0.000
.|*** |	.|. |	27	0.434			
				-0.001	3834.1	0.000
.|*** |	.|. |	28	0.415			
.|*** |	.|. |	29	0.396	0.002	3878.9	0.000
				-0.048	3919.4	0.000
.|*** |	.|. |	30	0.375			
				-0.016	3955.7	0.000
.|*** |	.|. |	31	0.355			
				-0.001	3988.4	0.000
.|** |	.|. |	32	0.336			
.|** |	.|. |	33	0.317	0.008	4017.7	0.000
.|** |	.|. |	34	0.299	0.013	4043.9	0.000
				-0.042	4067.0	0.000
.|** |	.|. |	35	0.280			
				-0.090	4086.7	0.000
.|** |	*|. |	36	0.258			

Null Hypothesis: CLOSE has a unit root

Exogenous: Constant
Lag Length: 0 (Automatic - based on SIC, maxlag=15)

	t-Statistic	Prob.*
Augmented Dickey-Fuller test statistic	-0.277535	0.9248
Test critical values: 1% level	-3.456408	
5% level	-2.872904	
10% level	-2.572900	

*MacKinnon (1996) one-sided p-values.

Social Research Foundation, Kanpur

Fig 3(b): Results of Augmented Dicky Fuller Test for the Original Series with a Constant and Trend

Null Hypothesis: CLOSE has a unit root

Exogenous: Constant, Linear Trend

Lag Length: 0 (Automatic - based on SIC, maxlag=15)

	t-Statistic	Prob.*
Augmented Dickey-Fuller test statistic	-1.543458	0.8120
Test critical values: 1% level	-3.995189	
5% level	-3.427902	
10% level	-3.137310	

*MacKinnon (1996) one-sided p-values.

Fig.4: Histogram and Normal Curveto the Original Series

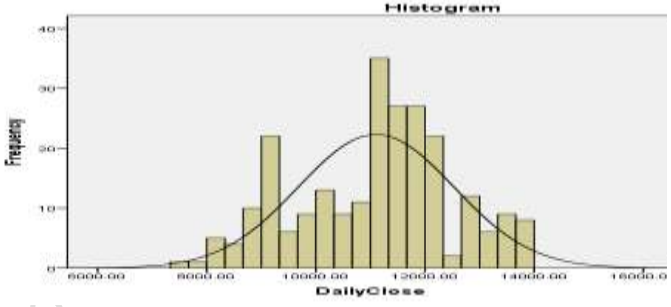

Fig 5: Result of the Kolmogorov- Smirnov Test for the Original Close Price Series

Fig 3(a): Results of Augmented Dicky Fuller Test for the Original Series with a Constant

Hypothesis Test Summary

	Null Hypothesis	Test	Sig.	Decision
1	The categories of Date occur with equal probabilities.	One-Sample Chi-Square Test	1.000	Retain the null hypothesis.
2	The distribution of ClosePrice is normal with mean 11,157.41 and standard deviation 1,412.47.	One-Sample Kolmogorov-Smirnov Test	.006	Reject the null hypothesis.

Asymptotic significances are displayed. The significance level is .05.

Fig 6: Sequence Time Plot of First Difference of Daily Closing Prices of Nifty Fifty Index in India during our Study Period

Fig 7(a): Results of Augmented Dicky Fuller Test for the First Differenced Time Series with Constant

Null Hypothesis: D(CLOSE) has a unit root
Exogenous: Constant
Lag Length: 0 (Automatic - based on SIC, maxlag=15)

		t-Statistic	Prob.*
Augmented Dickey-Fuller test statistic		-17.41921	0.0000
Test critical values:	1% level	-3.456514	
	5% level	-2.872950	
	10% level	-2.572925	

Fig 7(b): Results of Augmented Dicky Fuller Test of the First Differenced Equation with Constant and Trend

Null Hypothesis: D(CLOSE) has a unit root
Exogenous: Constant, Linear Trend
Lag Length: 0 (Automatic - based on SIC, maxlag=15)

		t-Statistic	Prob.*
Augmented Dickey-Fuller test statistic		-17.79351	0.0000
Test critical values:	1% level	-3.995340	
	5% level	-3.427975	

Social Research Foundation, Kanpur

10% level	-3.137353

*MacKinnon (1996) one-sided p-values.

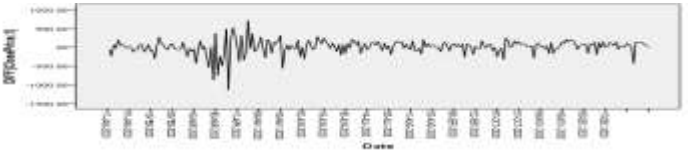

Social Research Foundation, Kanpur

iFig8: Correlograms of ACF & PACF of the First Differenced Time SSeries

Included observations: 250

Autocorrelation	Partial Correlation		AC	PAC	Q-Stat	Prob
*|. |	*|. |	1	-0.102	-0.102	2.6481	0.104
.|* |	.|* |	2	0.116	0.107	6.0594	0.048
.|* |	.|* |	3	0.078	0.102	7.6299	0.054
.|. |	.|. |	4	0.012	0.018	7.6686	0.104
.|** |	.|** |	5	0.245	0.234	23.065	0.000
*|. |	*|. |	6	-0.193	-0.169	32.709	0.000
.|* |	.|* |	7	0.176	0.102	40.699	0.000
.|. |	.|. |	8	0.013	0.032	40.741	0.000
.|. |	.|. |	9	-0.030	-0.043	40.977	0.000
.|* |	.|* |	10	0.143	0.085	46.347	0.000
*|. |	*|. |	11	-0.148	-0.073	52.095	0.000
.|* |	.|. |	12	0.139	0.024	57.200	0.000
.|. |	.|. |	13	-0.031	0.025	57.456	0.000
.|. |	.|. |	14	-0.015	-0.026	57.513	0.000
.|* |	.|* |	15	0.125	0.075	61.719	0.000
*|. |	.|. |	16	-0.133	-0.050	66.455	0.000
.|. |	.|. |	17	0.070	-0.049	67.794	0.000
*|. |	*|. |	18	-0.128	-0.084	72.211	0.000
.|. |	.|. |	19	0.007	-0.011	72.225	0.000
.|. |	.|. |	20	0.069	0.042	73.528	0.000
.|. |	.|* |	21	0.000	0.126	73.528	0.000
.|. |	.|. |	22	0.018	-0.059	73.613	0.000
.|. |	.|. |	23	-0.044	0.010	74.148	0.000
*|. |	*|. |	24	-0.078	-0.139	75.833	0.000
.|* |	.|* |	25	0.098	0.080	78.506	0.000
.|. |	.|. |	26	-0.029	0.044	78.747	0.000
.|. |	.|. |	27	0.015	-0.001	78.813	0.000
.|. |	.|. |	28	0.013	0.030	78.859	0.000

Social Research Foundation, Kanpur

.|.	|	.|.	|	29	0.011	0.023	78.892	0.000
.|.	|	.|.	|	30	0.032	-0.048	79.178	0.000
.|.	|	.|.	|	31	-0.056	0.011	80.095	0.000
.|.	|	.|.	|	32	-0.003	-0.038	80.097	0.000
.|.	|	.|.	|	33	-0.012	-0.019	80.139	0.000
.|.	|	.|*	|	34	0.048	0.077	80.805	0.000
.|*	|	.|*	|	35	0.168	0.166	89.039	0.000
.|.	|	.|.	|	36	0.025	0.069	89.227	0.000

Fig 9: Sequence Time Plot of Daily Closing Returns of Nifty Fifty

Index in India

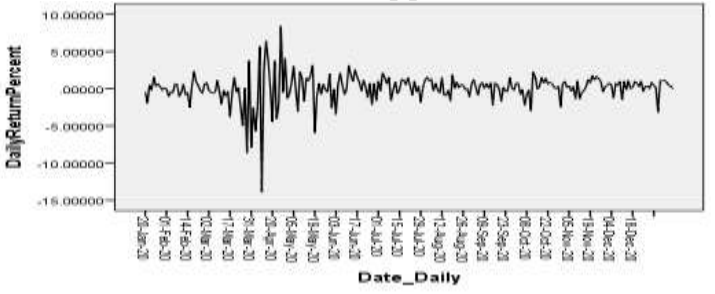

Fig 10(a): Results of Augmented Dicky Fuller Test of the Daily Returns of Nifty Fifty Index over our Study Periodwith Constant

Null Hypothesis: DAILYRETURNS has a unit root
Exogenous: Constant
Lag Length: 5 (Automatic - based on SIC, maxlag=15)

		t-Statistic	Prob.*
Augmented Dickey-Fuller test statistic		-5.660709	0.0000
Test critical values:	1% level	-3.457173	
	5% level	-2.873240	
	10% level	-2.573080	

*MacKinnon (1996) one-sided p-values.

Fig 10(b): Results of Augmented Dicky Fuller Test of the Daily Returns of Nifty Fifty Index over our Study Period with Constant and Trend

Null Hypothesis: DAILYRETURNS has a unit root

Exogenous: Constant, Linear Trend

Lag Length: 0 (Automatic - based on SIC, maxlag=15)

		t-Statistic	Prob.*
Augmented Dickey-Fuller test statistic		-18.24656	0.0000
Test critical values:	1% level	-3.995492	
	5% level	-3.428049	
	10% level	-3.137397	

*MacKinnon (1996) one-sided p-values.

Social Research Foundation, Kanpur

Fig 11(a): Correlogram of ACF of the Daily Returns of Nifty Fifty Index over our Study Period

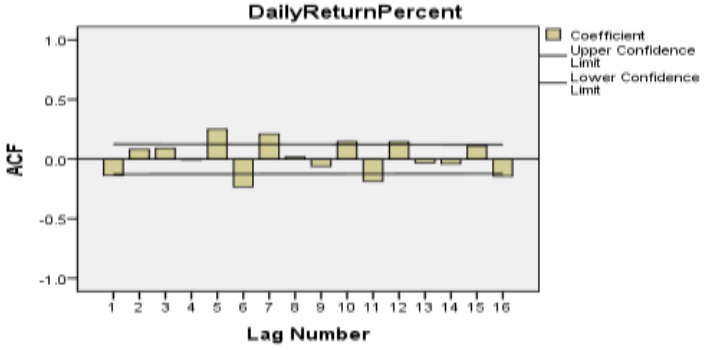

Fig 11(b): Correlogram of PACF of the Daily Returns of Nifty Fifty Index over our Study Period

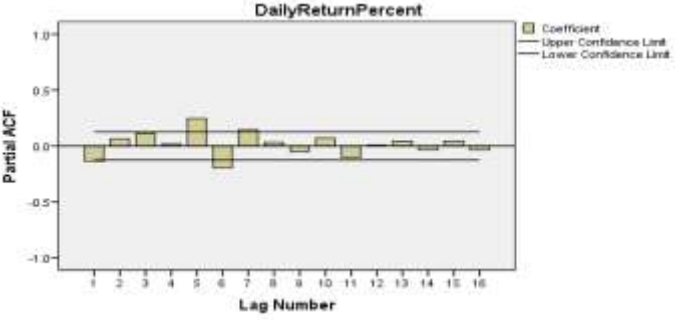

Fig 12: Normality Test of the Daily Returns of Nifty Fifty Index over our Study Period

One-Sample Kolmogorov-Smirnov Test

	ClosePrice	ReturnPercent
N	251	250

Normal Parameters[a,b]	Mean	11157.4070	.051841
	Std. Deviation	141 2.47234	2.00 5069 2
Most Extreme Differences	Absolute	.108	.160
	Positive	.075	.132
	Negative	-.108	-.160
Kolmogorov-Smirnov Z		1.710	2.532
Asymp. Sig. (2-tailed)		.006	.000

a. Test distribution is Normal.

b. Calculated from data.

Fig 13:Result of Run Test of the Daily Returns of Nifty Fifty Index over our Study Period

Runs Test

	ReturnPercent
Test Value[a]	.2393
Cases < Test Value	125
Cases >= Test Value	125
Total Cases	250
Number of Runs	121
Z	-.634
Asymp. Sig. (2-tailed)	.526

a. Median

Fig 14: Sequence Plot of the Weekly Close Prices of Nifty Fifty Index over our Study Period

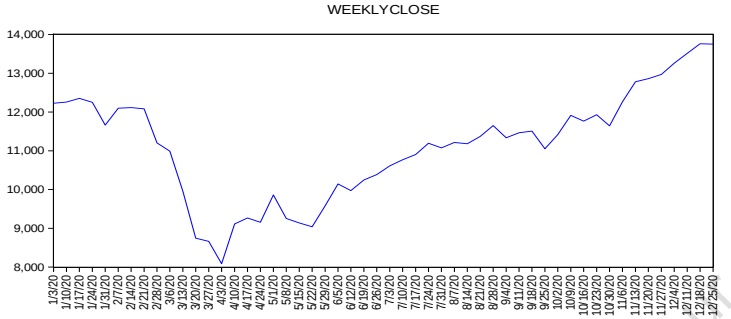

Fig 15: Results of the Augmented Dicky Fuller Test of Weekly Close Prices of Nifty Fifty Index over our Study Period

Null Hypothesis: WEEKLYCLOSE has a unit root

Exogenous: Constant, linear trend

Lag Length: 0 (Automatic - based on SIC, maxlag=10)

		t-Statistic	Prob.*
Augmented Dickey-Fuller test statistic		-0.390972	0.9027
Test critical values:	1% level	-3.565430	
	5% level	-2.919952	
	10% level	-2.597905	

*MacKinnon (1996) one-sided p-values.

Social Research Foundation, Kanpur

Sample: 1/03/2020 12/25/2020
Included observations: 52

Autocorrelation	Partial Correlation		AC	PAC	Q-Stat	Prob
. |*******	. |*******	1	0.914	0.914	46.007	0.000
. |******|	.*| . |	2	0.816	-0.117	83.438	0.000
. |***** |	.*| . |	3	0.706	-0.125	112.04	0.000
. |**** |	.*| . |	4	0.593	-0.081	132.59	0.000
. |**** |	. |*. |	5	0.505	0.099	147.81	0.000
. |*** |	.*| . |	6	0.398	-0.194	157.50	0.000
. |** |	. | . |	7	0.309	0.032	163.46	0.000
. |** |	.*| . |	8	0.219	-0.079	166.53	0.000
. |*. |	. | . |	9	0.143	0.034	167.87	0.000
. | . |	.*| . |	10	0.063	-0.157	168.14	0.000
. | . |	. |*. |	11	0.000	0.089	168.14	0.000
. | . |	. | . |	12	-0.043	0.006	168.27	0.000
.*| . |	. | . |	13	-0.079	0.007	168.72	0.000
.*| . |	. | . |	14	-0.086	0.063	169.26	0.000
.*| . |	.*| . |	15	-0.109	-0.117	170.16	0.000
.*| . |	.*| . |	16	-0.136	-0.093	171.61	0.000
.*| . |	. | . |	17	-0.153	0.040	173.49	0.000
.*| . |	.*| . |	18	-0.186	-0.119	176.36	0.000
.*| . |	. | . |	19	-0.197	0.059	179.66	0.000
**| . |	. | . |	20	-0.208	-0.029	183.45	0.000
**| . |	.*| . |	21	-0.224	-0.068	187.99	0.000
**| . |	. | . |	22	-0.229	0.000	192.91	0.000
**| . |	.*| . |	23	-0.248	-0.087	198.87	0.000
**| . |	. | . |	24	-0.262	-0.010	205.74	0.000

Social Research Foundation, Kanpur

Fig 16(a): Correlogram of the ACF of Weekly Close Prices of Nifty Fifty Index over our Study Period

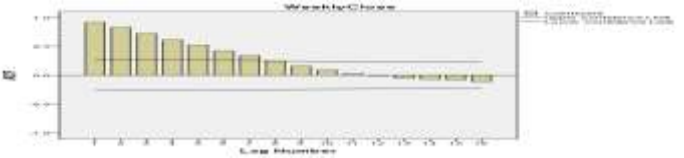

Fig 16(b): Correlogram of the PACF of Weekly Close Prices of Nifty Fifty Index over our Study Period

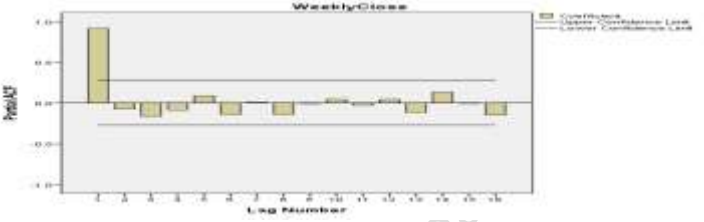

Fig 17: Histogram and Normal Curve fitted to Weekly Close Prices of Nifty Fifty Index over our Study Period

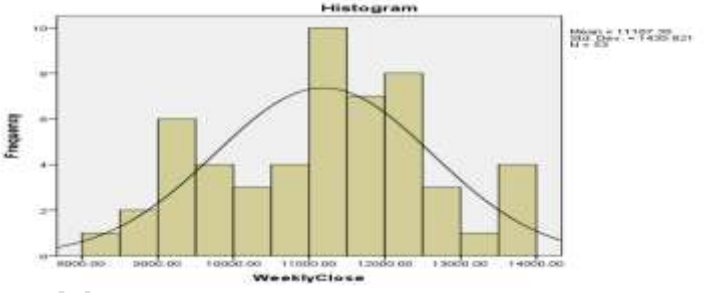

One-Sample Kolmogorov-Smirnov Test

		WeeklyClosePrice
N		53
Normal Parameters[a,b]	Mean	11187.3528

		Std. Deviation	1435.82128
Most Differences	Extreme	Absolute	.087
		Positive	.079
		Negative	-.087
Kolmogorov-Smirnov Z			.631
Asymp. Sig. (2-tailed)			.821

a. Test distribution is Normal.

b. Calculated from data.

Fig 18: Time Plot fitted to Weekly Return of Nifty Fifty Index over our Study Period

Fig 17: Result of One Sample Kolmogorov- Smirnov Test for Weekly Close Prices of Nifty Fifty Index over our Study Period

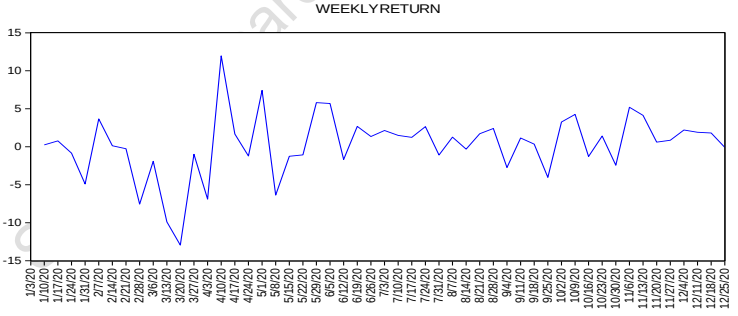

Fig 19: ACF and PACF values of the Weekly Return of the Nifty Fifty Index

Sample: 1/03/2020 12/25/2020

Included observations: 51

Autocorrelation	Partial Correlation	AC	PAC	Q-Stat	Prob

. |*. |	. |*. |	1	0.093	0.093	0.4653	0.495
. |*. |	. |*. |	2	0.189	0.182	2.4458	0.294
. |*. |	. | . |	3	0.101	0.072	3.0151	0.389
.*| . |	**| . |	4	-0.203	-0.262	5.3846	0.250
. |*. |	. |*. |	5	0.170	0.193	7.0855	0.214
.*| . |	.*| . |	6	-0.204	-0.181	9.5819	0.143
. |*. |	. |** |	7	0.189	0.250	11.775	0.108
. |*. |	. | . |	8	0.132	0.056	12.876	0.116
. | . |	. | . |	9	-0.022	-0.001	12.908	0.167
. | . |	**| . |	10	-0.027	-0.280	12.956	0.226
.*| . |	. | . |	11	-0.149	0.071	14.450	0.209
. | . |	. | . |	12	0.068	0.073	14.771	0.254
.*| . |	.*| . |	13	-0.154	-0.094	16.468	0.225
.*| . |	.*| . |	14	-0.077	-0.142	16.901	0.262
. | . |	. | . |	15	0.020	0.059	16.930	0.323
.*| . |	. | . |	16	-0.075	-0.057	17.366	0.362
. | . |	. | . |	17	-0.011	-0.042	17.374	0.429
.*| . |	. | . |	18	-0.092	0.040	18.065	0.451
. | . |	. |*. |	19	0.062	0.094	18.389	0.497
. | . |	. | . |	20	0.041	-0.051	18.536	0.552
.*| . |	.*| . |	21	-0.143	-0.163	20.372	0.498
. | . |	. |*. |	22	0.036	0.122	20.494	0.552
. | . |	. |*. |	23	0.035	0.120	20.614	0.605
. | . |	.*| . |	24	-0.025	-0.133	20.676	0.658

Fig 20: Correlogram of the ACF of the Weekly Return of the Nifty Fifty Index over our Study Period

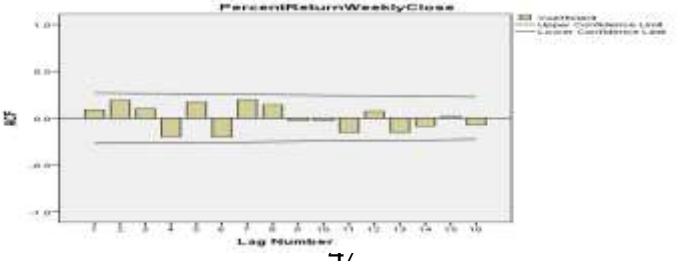

Social Research Foundation, Kanpur

Fig 21: Correlogram of the PACF of the Weekly Return of the Nifty Fifty Index over our Study Period

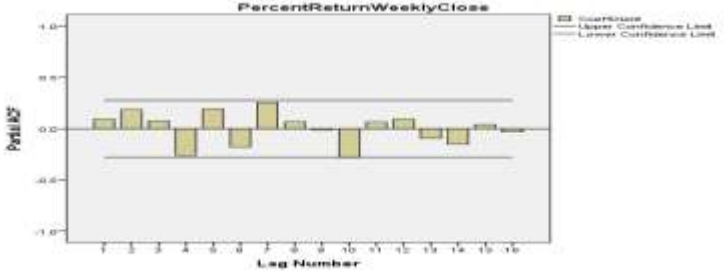

Fig 21: Results of the ADF Test of the Weekly Return of the Nifty Fifty Index over our Study Period

Null Hypothesis: WEEKLYRETURNS has a unit root

Exogenous: Constant

Lag Length: 0 (Automatic - based on SIC, maxlag=10)

		t-Statistic	Prob.*
Augmented Dickey-Fuller test statistic		-6.312241	0.0000
Test critical values:	1% level	-3.568308	
	5% level	-2.921175	
	10% level	-2.598551	

*MacKinnon (1996) one-sided p-values.

Null Hypothesis: WEEKLYRETURNS has a unit root

Exogenous: Constant, Linear Trend

Social Research Foundation, Kol...

Lag Length: 0 (Automatic - based on SIC, maxlag=10)

		t-Statistic	Prob.*
Augmented Dickey-Fuller test statistic		-6.729412	0.0000
Test critical values:	1% level	-4.152511	
	5% level	-3.502373	
	10% level	-3.180699	

*MacKinnon (1996) one-sided p-values.

Fig 22: Results of the Kolmogorov-Smirnov Test of the Weekly Return of the Nifty Fifty Index over our Study Period

One-Sample Kolmogorov-Smirnov Test

		PercentReturn WeeklyClose
N		52
Normal Parameters[a,b]	Mean	.2579518
	Std. Deviation	4.16506411
Most Extreme Differences	Absolute	.144
	Positive	.107
	Negative	-.144
Kolmogorov-Smirnov Z		1.040
Asymp. Sig. (2-tailed)		.229

a. Test distribution is Normal.

b. Calculated from data.

Fig 23: Result of the Normality Tests of Daily and Weekly Prices and Return Data of Nifty Fifty Index over our Study Period

Tests of Normality

	Kolmogorov-Smirnov[a]			Shapiro-Wilk		
	Statistic	df	Sig.	Statistic	df	Sig.
DailyClosePrice	.104	239	.000	.975	239	.000
DailyCloseReturn	.159	238	.000	.821	238	.000
WeeklyClosePrice	.087	53	.200*	.977	53	.389

WeeklyReturn	.144	52	.009	.938	52	.010

*. This is a lower bound of the true significance.

a. Lilliefors Significance Correction

Fig 24: Result of Run Test of the Weekly Returns of Nifty Fifty Index over our Study Period

Runs Test

	WeeklyReturn
Test Value[a]	.81378
Cases < Test Value	26
Cases >= Test Value	26
Total Cases	52
Number of Runs	26
Z	-.280
Asymp. Sig. (2-tailed)	.779

a. Median

Social Research Foundation, Kanpur

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

गुरु ग्रंथ साहिब में स्त्री का स्थान

कुलदीप कौर
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
गोखले मेमोरियल गर्ल्स कॉलेज
कलकत्ता, पं बंगाल, भारत

Social Research Foundation Kanpur

'गुरु ग्रंथ साहिब' मध्य युग की धर्म साधना का एक अपूर्व ग्रंथ है। 1430 पृष्ठों में रचित 'गुरु ग्रंथ साहिब' का संपादन पाँचवें गुरु, अर्जुन देव ने 1604 ई. में किया था। इस ग्रंथ में बारहवीं शताब्दी से लेकर सत्रहवीं शताब्दी तक के गुरुओं के एवं संतों की वाणी संग्रहीत है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में 6 गुरु साहिब' 15 भगत 11 भट एवं 4 गुरुसिखों की वाणी संगृहीत है। प्रस्तुत ग्रंथ पाँच शताब्दियों की सांस्कृतिक परंपराओं, सामाजिक समस्याओं, धार्मिक मतों, धार्मिक रुढ़ियों, राजनीतिक समस्याओं. आपसी मतभेद, बाह्य आक्रमणों को प्रकट करने के साथ–साथ मानव–मात्र की भलाई तथा ईश्वर एक है, के सिद्धांत को प्रस्तुत करता है। गुरु अर्जुन देव ने इस ग्रंथ का संकलन और संपादन करते समय 'खत्री' ब्राह्मण, सूद, वैस, उपदेसु चहुँ वर्णा कऊ साँझा' 1 के समन्वयकारी उद्देश्य को सामने रखा। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में उत्तर–दक्षिण, पूर्व–पश्चिम चारों दिशाओं से ईश्वरस्तुति की वाणी सम्मिलित हुई है। नामदेव और परमानंद महाराष्ट्र के थे तो त्रिलोचन गुजरात के। रामानंद दक्षिण में पैदा हुए तो जयदेव बंगाल से थे। धन्ना राजस्थान से, शेख फरीद पश्चिमी सीमांत और सधना सिंध से थे। भारत के भौगोलिक समन्वय को यह ग्रंथ प्रस्तुत करता है।

किसी भी समाज की स्थिति का सही आकलन उस समाज की स्त्रियों की स्थिति से भी लगाया जाता है। वैदिक काल में इस देश में नारी को सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त था। वे सभी कार्यों में पुरुषों का साथ देती

थी। किन्तु स्मृति और पुराण काल आते नारी की स्थिति में परिवर्तन दिखाई देने लगा। उसे आध्यात्मिक प्रगति में बाधक माना जाने लगा। पुरुषों और स्त्रियों की स्थिति में असमानता बढ़ने लगी। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियाँ सामाजिक–आर्थिक अधिकारों से वंचित थी। इनका जीवन घर की चारदीवारी में सीमित होने लगा। परिवार में कन्या का जन्म बोझ माना जाता था। छोटी उम्र में लड़कियों का विवाह कर दिया जाता था। विधवादृविवाह की आज्ञा नहीं थी। हिन्दू समाज की स्थिति शोचनीय थी। मुस्लिम समाज में भी पाखंड भर गए थे। अज्ञानता का अंधकार, जाति–पाँति के कठोर नियम, देश में मुसलमानी शासन से बढ़ती असुरक्षा ने स्त्रियों की स्थिति को शोचनीय बना दिया था। बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा, सती–प्रथा समाज में मौजूद थे।

गुरु नानक जी के समय बाबर और इब्राहीम लोदी के बीच युद्ध हुआ था। युद्ध के दुष्प्रभाव को सामान्य लोगों को झेलना पड़ा। स्त्रियाँ इसकी सबसे अधिक शिकार हुई। इस राजनीतिक उच्छखृंलता को रोकने वाला कोई नहीं था। विजेताओं द्वारा विजित जाति की स्त्रियों की दुर्दशा हुई। गुरु नानक के इस स्थिति का वर्णन किया है–

जिनि सिरि सोहनि पट्टीआ माँगी पाई संधूर॥
से सिरकाती मुनीअनि गल विचि आवै धूड़ि॥
महला अंदरि होदीआं हुणि वहिण ने मिलनि हदूर॥ [2]

इस युद्ध की मार हिन्दू, मुसलमान सब स्त्रियों को झेलना पड़ा। स्त्रियों की मार्मिक स्थिति का वर्णन गुरु नानक ने इस प्रकार किया है–

इक हिंदुवाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठुकराणी॥
इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी॥ [3]

तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति दयनीय थी। मध्ययुगीन संत काव्य में स्त्री की निंदा का स्वर भी मिलता है। स्त्री को प्रभु–प्राप्ति के मार्ग में बाधक माना गया। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में स्त्रियों को समाज का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। स्त्री को साथिन, पत्नी, माँ एवं बहन के रुप

Social Research Foundation, Kanpur

में देखा गया है। गुरु साहिबों ने स्त्री दृ पुरुष दोनों में अंतर को समाप्त करने का प्रयत्न किया है। "नारी प्रमुख पुरख सभ नारी सभ एकों पुरख मुरारै" दृ कहकर गुरु रामदास ने नारी–पुरुष का अंतर ही समाप्त कर दिया। स्त्री की सामाजिक एवं पारिवारिक महता का वर्णन किया गया है। गुरु नानक ने स्त्रियों को सामाजिक कार्यों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। गुरु नानक देव ने कहा दृ नारी से हमारा जन्म होता है। नारी हमारा पालन–पोषण करती है। नारी से विवाह माँगा जाता है, उसी से दोस्ती होती है, उसी से संसार की राह बनती है। स्त्री से सामाजिक विधान और संबंध बनते हैं। उसे बुरा क्यों कहा जाए, जो बड़े–बड़े राजाओं को जन्म देती है–

भंडि जंमीए भंडि निभीए भंडि मंगणु वीआहु॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चले राहु ॥
भंड मूआ भंडु भालीए भंडि होवै बंधानु॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजानु॥
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोई॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोई॥
जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि॥
नानक ते मुख ऊजले तितु सचौ दरबरि॥ [4]

गुरुबाणी में सभी सांसारिक संबंधों में गृहस्थ धर्म का पालन करनेवाला स्त्री–पुरुष संबंध श्रेष्ठ माना गया है। गुरु करने वाला स्त्री–पुरुष संबंध श्रेष्ठ माना गया है। गुरु अमरदास का कथन है– 'एक जोति दुइ मूरति'। गुरुबाणी के अनुसार वर–वधू का संयोग और विवाह–कार्य ईश्वर की इच्छानुसार होता है–

हरि प्रभि काज रचाइआ, गुरुमुखि विआहणि आइआ॥
वीआहणि आइआ गुरुमुखि हरि पाइआ सा धनु कंत पिआरी॥ [5]

Social Research Foundation, Kanpur

सिख धर्म में विवाह को आनंददृकारज कहा जाता है। आनंद कारज 'गुरु ग्रंथ साहिब' के चार फेरों से सम्पन्न होता है। जिन्हें 'लावाँ फेरे' कहा जाता है। पहली लावाँ विवाह की रस्म का आरंभ और गृहस्थ जीवन में प्रवेश का प्रतीक है। दूसरी लावाँ वर–वधू के मिलन का प्रतीक है। तीसरी लावाँ दोनों के प्रेम के बंधन का प्रतीक है। चौथी लावाँ वर–वधू के गृहस्थ आश्रम के कर्तव्य एवं जिम्मेदारियाँ का प्रतीक है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' की वाणी में विवाह के लिए लग्न, मुहर्त, शकुन–अपशकुन, नक्षत्रों की गणना, जन्मपत्रियों के मिलाने आदि के लिए कोई स्थान नहीं है। सभी दिन पवित्र माने गए हैं–

साहा गणहि न करहि बीचारु॥

साहे उपरि एकंकारु॥ [6]

सामाजिक पारिवारिक मूल्यों की धुरी नारी है। गुरु नानक ने नारी की गरिमा को स्थापित करने के लिए समाज की मूल इकाई परिवार को गृहस्थी के रुप में स्वीकार किया। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में सामाजिक संबंधों–रिश्तों के बारे में उल्लेख मिलता है। माता–पिता, भाई–बहन, पुत्र–बहू, देवरानी–जिठानी, गुरु–चेला आदि के रिश्तों का वर्णन मिलता है। सारे रिश्ते–नातों से ऊपर भक्त और भगवान का रिश्ता है, जिसमें प्रेम बढ़ता ही है–

तू मेरा पिता तूं है मेरा भ्राता॥

तू मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता॥ [7]

स्त्रियों के सम्मान की रक्षा की बात भी की गई है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में कहा गया है कि पराया धन और पराई स्त्री पर दृष्टि रखने से दुख ही प्राप्त होता है।

पर धन पर नारी रतु निंदा बिखु खाई दुखु पाइआ॥ [8]

तत्कालीन समाज पतन की ओर जा रहा था। एक तरफ विदेशियों के अत्याचार और दूसरी तरफ कापालिकों की गुह्य साधनाओं में नारी की स्थिति शोचनीय थी। स्त्रियों का जीवन समस्याओं से घिरा हुआ

Social Research Foundation, Kanpur

था। गुरु नानक ने नारी को परिवार में, समाज में महत्व दिया। उन्होंने "गृहस्थ जीवन का आदर्शीकरण करके सामाजिक जीवन का पुनरुत्थान करने का प्रयास किया। " [9]

'गुरु ग्रंथ साहिब' में सामाजिक सुधार एवं स्त्रियों को समाज में समानता का अधिकार दिलाने के प्रयत्न का वर्णन मिलता है। सदियों से सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक अन्याय व भेदभाव की शिकार स्त्री–जाति के उत्थान के लिए गुरु अमरदास का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उस समय समाज में पर्दा–प्रथा का प्रचलन था। गुरु अमरदास ने पर्दा–प्रथा का विरोध किया और यह आदेश दिया कि उनके दरबार में स्त्रियाँ बिना परदे के आएँ। उन्होंने पुरुषों के साथ–साथ स्त्रियों को भी धार्मिक सभाओं में शामिल होने की अनुमति दी। धार्मिक प्रचार के लिए पुरुषों के साथ–साथ स्त्रियों को भी नियुक्त किया।

मध्ययुगीन समाज में कुप्रथाएं भी प्रचलित थी, जिनमें से दहेज–प्रथा भी एक है। भारतीय समाज में दहेज प्रथा अभी भी विकराल रुप में है। दहेज–प्रथा से मनुष्य का गृहस्थ जीवन प्रभावित होता है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में आध्यात्मिक दहेज को श्रेष्ठ बताया गया है। सांसारिक दहेज झूठा है। वधू विदा होते समय प्रभु के नाम रुपी दहेज को माँगती है–

हरि प्रभु मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मैं दाजो॥
हरि कपड़ों हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो॥ [10]

मध्यकालीन समाज में सती–प्रथा भी मौजूद थी। पति की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी को सती होना पड़ता था। विधवा को यह आश्वासन दिया जाता था कि सती होने पर उसे अनंत सुख तथा पति का साथ प्राप्त होगा। 'गुरु ग्रंथ साहिब' के अनुसार किसी को जलकर मरने के लिए बाध्य करना अत्याचार है। इसमें न तो आत्म बलिदान की भावना थी और न ही जलकर मरने से पति की निकटता प्राप्त होती है। गुरुवाणी में लिखा गया है कि जो स्त्रियाँ पति को अपना समझाती हैं, उसे पति के साथ जलने की

Social Research Foundation, Kanpur

क्या आवश्यकता है। वह तो जीवित रहते हुए भी पति की विरह–अग्नि में जलती है। इस बर्बर–व्यवस्था की वाणीकारों ने निन्दा की है। गुरु अर्जुन देव का कथन है–

जलै न पाईऐ राम सनेही॥

किरति संजोगी सती उठि होई॥ रहाउ॥

देखादेखी मनहठि जलि जाईऐ॥

प्रिअ संगु न पावै बहु जोनि भवाईऐ॥

सील संजमि प्रिअ आगिआ मानै॥

तिसु नारी कउ दुख न जमानै॥

कहु नानक जिनि प्रिउ परमेसरु करि जानिआ॥

धंनु सती दरगह परवानिआ॥ [11]

गुरु अमरदास ने भी सती–प्रथा का विरोध किया। वे सती–प्रथा जैसी अमानवीय प्रथा के विरुद्ध थे। उनके अनुसार मानव–शरीर व्यर्थ नष्ट होने के लिए नहीं है। गुरु रामदास ने भी सती–प्रथा का खुलकर विरोध किया। जब तक स्त्रियों के सामाजिक महत्व को नहीं समझा जाता है, तब तक उसके साथ हो रहे भेदभाव को कैसे दूर किया जा सकता है। गुरुवाणी में कहा गया है–

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलन्हि॥

नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि॥ [12]

भारतीय समाज में विधवाओं पर जुल्म की एक लंबी गाथा है। इस सामाजिक कुरीति को दूर करने का प्रयत्न गुरु अमरदास ने किया। उन्होंने विधवा–विवाह का समर्थन किया। साथ ही समाज में स्त्रियों को उचित स्थान प्राप्त हो, उनके साथ अन्याय न हो, इसके लिए वे प्रयत्नशील रहे।

भारत का मध्ययुगीन इतिहास यह स्पष्ट करता है कि उन दिनों समाज में नारी की स्थिति शोचनीय थी। नारी पर अत्याचार, किसी भी

Social Research Foundation, Kanpur

समाज के लिए लज्जाजनक बात है। स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार को गुरु नानक देव ने स्वीकार किया है। उनके अनुसार मासूम स्त्रियाँ दुर्बल हो गई हैं और चतुर पुरुष अत्याचारी हो गए हैं। शील, संयम और शुद्धता दूर हो गई है। शर्म तो घर से उठ कर चली गई है। बहू–बेटियों की इज्जत भी चली गई है–

रंना होईआ बोधीआ पुरस होए सईआद ॥
सीलु संजमु सुच भंनी खाणा खाजु अहाजु॥
सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि॥
नानक सचा एकु है अउरु न सचा भालि॥ [13]

वाणीकारों ने नारी को पुरुष के समान अधिकार दिलाने की बात कही है। उल्लेखनीय है कि यूरोप में यह विचार अठाहरवीं–उन्नीसवीं शताब्दी में मिलता है, जबकि भारतवर्ष में पन्द्रहवीं–सोलहवीं शताब्दी में ही स्त्री–पुरुष समानता की बात कही गई। गुरु साहिबों ने नारी–विरोधी सोच को लोगों के सामने रखकर समानता को महत्व दिया। प्रत्येक मनुष्य का, स्त्री हो या पुरुष, अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है। सबके प्रति, समान रुप से आदर व्यक्त करना, सबका सम्मान करना, प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य होता है।

समाज में स्त्री की एक बड़ी भूमिका है। समाज में स्त्रियों की भागीदारी को बढ़ाने के लिए गुरु साहिबों ने उनका उत्साह बढ़ाया। गुरु अंगद देव ने अपनी पत्नी खीवी को गुरु के लंगर की देख–रेख की जिम्मेदारी देकर उन्हें सम्मानजनक पद दिया। संगत की सेवा करने पर व्यक्ति में प्रेम और नम्रता का गुण उत्पन्न होता है। स्त्री के सम्मान को बल मिला। गुरु नानक देव की बहन नानकी, माता खीवी, बीबी अमरो, बीबी भानी, माता गुजरी आदि नारियों का योगदान प्रेरणास्पद है। इतिहास में अद्वितीय है माता गुजरी, जिन्होंने अपने पति गुरु तेग बहादुर को धर्मरक्षा हेतु शहीदी के लिए भेजा। उन्होंने छोटे साहिबजादों को धर्म–रक्षा हेतु स्वयं

Social Research Foundation, Kanpur

को कुर्बान करने की शिक्षा दी। माता गुजरी वात्सल्य, सेवा, परोपकार और नारी शक्ति की प्रतीक हैं।

किसी भी समाज का स्वरुप वहाँ भी नारी की स्थिति पर निर्भर करता है। यदि उसकी स्थिति सुदृढ़ और सम्मानजनक है तो समाज भी मजबूत होगा। सभ्यता, संस्कार और परंपरा महिलाओं के कारण ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती है। नारी का त्याग, बलिदान भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है।

'गुरु ग्रंथ साहिब' में नारी की स्थिति को पूरी संवेदना के साथ प्रस्तुत किया गया है। नारी की शोचनीय स्थिति के प्रति गुरुवाणी में चिंता भी व्यक्त की गई है। नारी को पुरुष के बराबर स्थान दिया गया है। गुरु नानक ने नारी को गरिमामय स्थान दिया। नारी को समाज में उचित स्थान दिलाने का समर्थन किया। गुरुवाणी में यह उल्लेख है कि समाज की संचालन शक्ति नारी के हाथों में है। नारी को केन्द्रीय शक्ति के रुप में चित्रित किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ — 747–748*
2. *गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ — 417*
3. *गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ — 418*
4. *गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ — 473*
5. *गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ — 775*
6. *गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ — 904*
7. *गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ — 103*
8. *गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ — 1347*
9. *सिंहल डॉ० धर्मपाल सिंह, 'बद्दन' डॉ० बलदेव सिंह, संत साहित्य विचार एवं विश्लेषण प्रथम संस्करण 2015, पृष्ठ — 138*
10. *गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ — 79*
11. *गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ — 185*
12. *गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ — 787*
13. *गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ — 1243*

Social Research Foundation Kanpur

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

Motivations behind Self-Medication: A Study on Youngsters

Manish Yadav
Student
Dept. of Management
Lovely Professional University
Jalandhar, India

Kajal Rai
Student
Dept. of Management
Lovely Professional University
Jalandhar, India

Sumeet Kumar
Student
Dept. of Management
Lovely Professional University
Jalandhar, India

Social Research Foundation, K

Introduction

A practice to consume medicines or perform medication using one's own knowledge without consulting a physician is called as self-medication. Self-medication has been gaining importance among individuals epically in those geographies where quality health care infrastructure is not available. During the period of covid-19 pandemic also, the practice of self-medication has seen lot of acceptance due to multiple reasons. Generally, self-medication is performed using the over-the-counter drugs which are easily available at pharma shops and can be purchased without the prescription from a doctor.

It is observed that individuals practicing self-medication are less concerned about the ill effects of a medicine if consumed wrongly. People have been found to resort to self-medication due to multiple reasons like that of availability of poor health care facilities or due to lake of funds or in case if facing scarcity of time to visit a physician.

Past Literature

Practicing self-medication is not wrong but the point of concern is if one not consuming the dugs rationally, the it can lead to extremely adverse effects on ones physical as well as mental health. In a study conducted by Pednekar et.al (2019),it was found that due to knowledge about different diseases and effect of different medicines on these diseases, individuals studying medicine generally go for self-medication. In this study four hundred and forty eight students in the field of study of medicine were identified and this perception regarding self-medication was studied. Those individuals were added in the study who had opted for self-medication in the past 6 months from the date of data collection by the researchers. The main reason identified for opting in self-medication was found to be lack of information. On the similar lines, Gatty (2013) traced out that it is common practice to go for self-medication in developing and under developed countries but the matter of concern is the irrational use of any drug(medicine). This study traced out those self-medication practices can be reduced with easy availability and accessibility to health care facilities. In a cross sectional study following a descriptive design, Donkar (2012) tried to find the prevalence of self-medication among students. Self-medication was found out to be a major problem among students that need attention.Azeem (2011) studied self-medication with over-the-counter drugs.

To gain information on the factors influencing self-medication with over-the-counter drugs, data was collected via face-to-face structured interview from respondents in the community pharmacy. Samples of 80 patients were selected from the community pharmacy. This study highlighted the need to carry out educational campaigns to

Social Research Foundation, Kanpur

alert the population about the use of many medicines available in the market. This study highlighted the paramount importance of active participation of health care professionals, especially physicians and pharmacist, besides the help from the pharmaceutical industry.

This highlights the need for understanding the motivations behind resorting to self-medication by people.

Government regulations and continuous inspection by the competent authorities to stop unnecessary self-medication. Although self-medication is difficult to eliminate, interventions can be made to discourage this practice and ensure safer usage of drugs. The intervention will require better patient education of public and health professionals to avoid the irrational use of drugs. Shankar (2012) found that self-medication and non-doctor prescribing of drugs is common in developing countries. Complementary and alternative medications, especially herbs, are also commonly used. This study was conducted upon 142 seventh semester medical students, using a semi-structured questionnaire. Demographic information and information on drugs used for self- medication or prescribed by a non-allopathic doctor were collected. The compounder and health assistant were common sources of medicines. Paracetamol and antimicrobials were the drugs most prescribed. In addition to allopathic drugs, herbal remedies were also commonly used for self-medication.

Education to help patients decide on the appropriateness of self-medication is required. Dawson (2011) found seventy percent of Americans search health information online, half of whom access medical content on social media websites. Despite this broad usage, the medical community underutilizes social media to distribute preventive health information.

This project aimed to highlight the promise of social media for delivering in cancer prevention messaging by hosting and quantifying the impact of an online videocontest. Elia (2013) identified measures used for assessing quality of YouTube videos related to patient health education. Publications on YouTube have advocated its

Social Research Foundation, Kanpur

potential for patient education. However, a reliable description of what could be considered as quality information for patient education on YouTube is missing. To identify topics associated with the concept of qualityinformation for patient education on YouTube in the scientific literature, full text of selected papers were analyzed looking for concepts, definitions, and topics used by its authors that focused on the quality of information on YouTube for patient education. It was found that caution should be applied when using YouTube for health promotion and patient educationalmaterial. Tesfamariamet. al (2019) identified Self-medication to be a common practice globally and the resulting irrational drug use to the raising concern. The study aimed to determine the prevalence ofself-medication practice and its influencing factors among college students using cross sectional design.

Methodology

Descriptive research design has been used in present research as it described characteristics of population under study without any thoughtful manipulation of thevariables.For the identification of sample from population under study purposive sampling has been used and the sample unit in the study is an individual who is a university student and resorted to self-medication ever in her/his life. In total the data has been collected from 100 respondents using a structured questionnaire.

Analysis

For the sake of identification of factors that motivate people into self-medication, exploratory factor analysis has been used. Exploratory factor analysis (EFA) was applied considering its primary objective of curtailing a large set of items into a relatively small set of factors. Variables identified after application of exploratory factor analysis were lesser in number compared to original variable set, but had been found proficient of accounting to a large portion of variability in the variables/items. Based on these variables different factors were identified and the identity of each factor was determined considering the items correlation with that factor.

Social Research Foundation, Kanpur

The value of KMO being 0.883 (Table 1) supported the objective of reducing several variables into fewer factors by showing measures of appropriateness of factor analysis. Hypothesis of correlation matrix being an identity matrix was not accepted considering test of sphericity (Bartlett's). Significance value lead to rejection of null hypothesis and concluded about correlations in the data set that were appropriate for EFA.

Table 1 :KMO and Bartlett's Test

Kaiser-Meyer-Olkin Measure of Sampling Adequacy.		.778
Bartlett's Test of Sphericity	Approx. Chi-Square	881.055
	df	276
	Sig.	.000

Having superior assurance about the suitability for principal component analysis, elucidation of results was approved. Now Varimax rotation which is orthogonal in nature was applied to maximize the variance of squared loadings of a factor on all items in factor matrix. In this rotation each original variable/item inclines towards one of the factors, and every factor signifies a small number of items leading to simplification of interpretation of results.

Table 2: Total Variance Explained

Compound	Initial Eigenvalues			Rotation Sums of Squared Loadings		
	Total	% of Variance	Cumulative %	Total	% of Variance	Cumulative %
1	6.669	27.789	27.789	3.14	13.083	13.083
2	2.082	8.675	36.464	2.785	11.602	24.685
3	1.697	7.072	43.535	2.638	10.992	35.677
4	1.597	6.656	50.191	2.042	8.51	44.186
5	1.423	5.928	56.119	1.792	7.467	51.653
6	1.164	4.849	60.969	1.717	7.154	58.807
7	1.003	4.18	65.149	1.522	6.342	65.149

Social Research Foundation

8	0.902	3.756	68.905			
9	0.845	3.519	72.424			
10	0.804	3.349	75.774			
11	0.726	3.023	78.796			
12	0.645	2.688	81.485			
13	0.62	2.582	84.066			
14	0.555	2.314	86.38			
15	0.495	2.063	88.443			
16	0.451	1.88	90.323			
17	0.427	1.778	92.101			
18	0.379	0.379	1.579			
19	0.34	0.34	1.418			
20	0.28	0.28	1.165			
21	0.274	0.274	1.14			
22	0.234	0.234	0.976			
23	0.208	0.208	0.868			
24	0.181	0.181	0.754			

Extraction Method: Principal Component Analysis.

Table 3: Rotated Component Matrix

	1	2	3	4	5	6
Because Lack of experienced doctors in my area	0.739					
because visiting to doctor is not safe in a pandemic	0.731					
As I do not have medical insurance	0.641					

Social Research Foundation, Kanpur

Because of Lack of trust in doctors for diagnosis and treatment	0.622					
Because I already know what the doctor would prescribe	0.577					
Because the clinic is far away from my place	0.572					
As I can find appropriate medicine for my illness by reading online about it.		0.753				
As it is more convenient to me		0.744				
As I am generally able to cure myself without visiting a doctor		0.658				
As in case on non-severe diseases, we do not need to visit a doctor		0.641				
Because I do not believe in			0.753			

Social Research Foundation, Kanpur

allopathic medicine/western medicine						
Based on the suggestions from those individuals who influence by behavior other than family			0.718			
Because it is cost effective & not able to afford doctors fee			0.673			
Due to privacy concerns				0.723		
Because I can get any medicine without any issue from the pharmacist.				0.611		
Because due to the advertisement on TV/Internet/any other Media, I am already aware about the medicine to be taken for some				0.522		

Social Research Foundation, Kanpur

illness						
when the doctor's treatment is ineffective					0.852	
When I have encountered the same illness the past (Old prescription for same illness).					0.557	
as it is a common practice in my geographical area (where I live)					0.535	
Because of the past experience of extremely rude behaviour by medical staff/doctor.						0.682
Could not wait for appointment to relieve discomfort						0.677

Reviewing the rotated component matrix suggested that six factors club the variables in a theoretically understandable manner. All these six factors have been named as explained below:

Social Research Foundation, Kanpur

Items	Name of the factor
Because Lack of experienced doctors in my area	Lack of Trust/Faith
Because visiting to doctor is not safe in a pandemic	
As I do not have medical insurance	
Because of Lack of trust in doctors for diagnosis and treatment	
Because I already know what the doctor would prescribe	
Because the clinic is far away from my place	
As I can find appropriate medicine for my illness by reading online about it.	Self-sufficiency
As it is more convenient to me	
As I am generally able to cure myself without visiting a doctor	
As in case on non-severe diseases, we do not need to visit a doctor	
Because I do not believe in allopathic medicine/western medicine	Peer Influence
Based on the suggestions from those individuals who influence by behavior other than family	
Because it is cost effective & not able to afford doctors fee	
Due to privacy concerns	Easy availability of any medicine
Because I can get any medicine without any issue from the pharmacist.	
Because due to the advertisement on TV/Internet/any other Media, I am already aware about the medicine to be taken for some illness	

Social Research Foundation, Kanpur

when the doctor's treatment is ineffective	Experiencewith illness
When I have encountered the same illness the past (Old prescription for same illness).	
as it is a common practice in my geographical area (where I live)	
Because of the past experience of extremely rude behaviour by medical staff/doctor.	Uncomfortable with meeting medical practitioners
Could not wait for appointment to relieve discomfort	

Conclusion

It has been observed that young individuals have been resorting to the practice of self-medication due to several motivations. The most important of all these motivations is the lack of trust among these individuals on the medical services and sometimes practitioners. Peer pressures from those people who influence the behavior of individuals also lead to acceptance towards self-medication. Easy availability of prescription-based drugs without needs of a prescription and in case if an individual has any past experience with some illness in the past also leads to self-medication behavior.

Bibliography

1. *Malhotra, N. K. & Dash, S., 2014. Marketing reserach: an applied orientation. New Delhi: Pearson.*
2. *Donkor, E.S., Tetteh-Quarcoo, P.B., Nartey, P. and Agyeman, I.O., 2012. Self-medication practices with antibiotics among tertiary level students in Accra, Ghana: a cross-sectional study. International journal of environmental research and public health, 9(10), pp.3519- 3529.*
3. *Kumar, N., Kanchan, T., Unnikrishnan, B., Rekha, T., Mithra, P., Kulkarni, V., Papanna, M.K., Holla, R. and Uppal, S., 2013. Perceptions and practices of self-medication among medical students in coastal South India. PloS one, 8(8), p.e72247.*

Social Research Foundation, Kanpur

4. *Shankar, P.R., Partha, P. and Shenoy, N., 2002. Self-medication and non-doctor prescription practices in Pokhara valley, Western Nepal: a questionnaire-based study. BMC family practice, 3(1), pp.1-7.*
5. *Dawson, A.L., Hamstra, A.A., Huff, L.S., Gamble, R.G., Howe, W., Kane, I. and Dellavalle, R.P., 2011. Online videos to promote sun safety: results of a contest. Dermatology Reports, 3(1).*
6. *Gabarron, E., Fernandez-Luque, L., Armayones, M. and Lau, A.Y., 2013. Identifying measures used for assessing quality of YouTube videos with patient health information: a review of current literature. Interactive journal of medical research, 2(1), p.e6.*
7. *Tesfamariam, S., Anand, I.S., Kaleab, G., Berhane, S., Woldai, B., Habte, E. and Russom, M., 2019. Self-medication with over the counter drugs, prevalence of risky practice and its associated factors in pharmacy outlets of Asmara, Eritrea. BMC public health, 19(1), p.159.*
8. *Selvi, O., Tulgar, S., Senturk, O., Topcu, D.I. and Ozer, Z., 2019. YouTube as an informational source for brachial plexus blocks: evaluation of content and educational value. Brazilian Journal of Anesthesiology (English Edition), 69(2), pp.168-176.*

Social Research Foundation, Kanpur

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

भारतीय परिदिर्श्या का साहित्य एंव संस्कृति में दिव्यांग जनों की भूमिका

विश्वेश्वर यादव
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा
द ग्रेजुएट स्कूल कॉलेज फॉर वीमेन
जमशेदपुर झारखण्ड भारत

Social Research Foundation, Kanpur

विकलांग का अर्थ नेत्रहीन, अल्प दृष्टि, कुष्ठ रोग, श्रवण दोष, मानसिक मंदता का मानसिक रोग है जो किसी चिकित्सा पदाधिकारी द्वारा प्रमाणित किया जाए कि वह 40% से कम नहीं है।

आज दुनिया में दिव्यांगों की संख्या करोड़ों में है भारत में लगभग 2.68 करोड़ लोग किसी न किसी रूप में दिव्यांग से ग्रस्त हैं भारतीय संसद में 12 दिसंबर 1995 में विकलांगों को सम्मान, सुरक्षा और समानता दिलाने के लिए एक कानून पास किया जो जम्मू कश्मीर को छोड़कर समूचे देश में लागू है।

विकलांगों के तमाम कल्याणकारी योजनाओं, चिकित्सा सुविधाओं विकल्प के तौर पर उपलब्ध उपकरणों के बावजूद विकलांग व्यक्ति अगर सामाजिक जीवन जीने में स्वयं को असमर्थ पाता है तो उसका कारण समाज की भेद दृष्टि है इस भेद दृष्टि के चलते विकलांग व्यक्ति दोहरी यातना देने को बाध्य है विकलांग को होने के कारण हीन भावना और समाज की उपेक्षा दृष्टि सभी दोनों विकलांग व्यक्ति में ना स्वाभिमान और ना आत्मविश्वास पैदा होने देते हैं ।

राष्ट्रीय सर्वेक्षण संगठन द्वारा 1991 में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार ग्रामीण निरक्षर है 70% तथा शहरी क्षेत्रों में 46% निरक्षर हैं और

ग्रामीण क्षेत्रों में मात्र 4% और शहरी क्षेत्रों में मात्र 12% विकलांग माध्यमिक स्तर तक पहुंच पाते हैं पूर्ण साक्षरता केरल जैसे राज्य में 38% विकलांग निरक्षर है ।

विकलांग समाज का सबसे उपेक्षित वर्ग है विकलांगों में लगभग आधी आबादी महिलाओं की है अगर किसी के घर में बेटी पैदा होने पर सभी लोग उदास हो जाते हैं उसमें अगर विकलांग बेटी पैदा हो गई तो सभी परिवार शोकाकुल हो जाते हैं महिला विकलांग को तो घर परिवार वाले भोजन–कपड़ा तक देने में लापरवाही करते हैं उसे पढ़ाया भी नहीं जाता विकलांग को समाज देश का नागरिक मानने को तैयार नहीं है हर जगह विकलांग के साथ भेदभाव बरता जाता है आजादी के 73 वर्षों बाद भी विकलांग को आजादी का एहसास नहीं है गांव में तो विकलांग की दशा और भी खराब है गांव वाले विकलांगों को तो कोई नाम से पुकारता भी नहीं उसे लंगड़ा अंधा गूंगा बहरा के नाम से पुकारते हैं ।

भारत वर्ष लोकतंत्र का देश है जहां समान अधिकारों के बाद तो होती है लेकिन समान अधिकार दिए नहीं जाते विकलांग आदमी से दूसरे आदमी घृणा करता है समानता की जगह असमानता दिखाई पड़ती है हकीकत है कि सहपाठी संगे संबंधियों और संवेदनहीन समाज के गैर जरूरी व अमान्य कटाक्षों के बीच अपना लक्ष्य हासिल करना विकलांग के लिए कष्टदायक होता है लेकिन विकलांग व्यक्ति भी किसी से दान के रुप में कोई भी लेना पसंद नहीं करता बल्कि वह अपनी काबिलियत को बदौलत इनाम लेना पसंद करता है।

हमारे देश में प्रत्येक 10 वर्ष पर जनगणना होती है वही दुर्भाग्यवश लोगों को विकलांग की सही जनसंख्या तक पता नहीं हो पाती है कि किस राज्य में कितने विकलांग है और कितना महिला विकलांग हमारे देश को संविधान में भी विकलांग के लिए आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं था शुरू से ही विकलांग के लिए बनाई जाने वाली योजनाएं किसी ठोस नीति पर आधारित नहीं थी संविधान लागू होने के 27 साल बाद 1977 में 1 संविधान संशोधन द्वारा विकलांग के लिए 3% आरक्षण की

Social Research Foundation, Kanpur

व्यवस्था की गई जिसमें दृष्टिहीन मुख बधिर और शारीरिक विकलांग के लिए क्रमश 1% विकलांगों के लिए क्रमश एक–एक प्रतिशत आरक्षण रखा गया तीन प्रतिशत आरक्षण भी केवल तृतीय और चतुर्थ श्रेणी की नौकरियों के लिए दिया गया इसमें साबित होता है कि समाज औरसरकार यह मानकर चलती है कि विकलांग चाहे कितना भी शिक्षित क्यों ना हो वह सिर्फ निचली श्रेणी कि नौकरी लायक होता है सरकार के इस रवैया का विभिन्न लोगो द्वारा विरोध किया गया और मांग किया गया है कि सभी श्रेणियों में विकलांग के 3% आरक्षण दिया जाए और 1995 ई में एम एक्ट पारित हुआ जिसमे सभी श्रेणी में विकलांगों को 3% आरक्षण लागू करने का निर्देश दिया गया ।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के बजट के अनुसार जाति 'अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक और विकलांगों को सहायता राशि दी जाती है जिसका सबसे छोटा हिस्सा विकलांगों को मिलता है जबकि अन्य संप्रदाय और समुदाय की आबादी से कम नहीं है दरअसल भारत में अद्रिस्य अल्पसंख्यक है विकलांग व्यक्तियों के ऊपर ध्यान नहीं दिया जाता है पर जनसंख्या इतने बड़े हिस्से को छोड़कर कोई भी देश में समाज का कल्याण और मानव विकास हो ही नहीं सकता है।

दरअसल यह दुनिया बहुत ही खूबसूरत है जिसे लोगों ने बद सूरत बना डाला है आज का इंसान बहुत ही छोटा व आत्मकेंद्रित हो गया है तथा सम्बेंदनशीलता से किनारा कर चुका है एक स्वार्थी आत्मकेंद्रित व अहंकारी व्यक्ति समाज या किसी विकासशील राष्ट्र में बाधक ही साबित होता है यही वजह है कि हिंसा अपराध बलात्कार जुर्म व अन्याय का बोलबाला है ऐसे समाज में ही क्यों परिवार को भी लोगों के बीच दूरियां बढ़ती जा रही है इसे समय का अभाव कहे या धन निन्दा लेकिन यह सच है किसी के पास दूसरों के प्रति समर्पित होने का सेवा भाव करने की फुर्सत नहीं है लोगों के पास मनोरंजन के लिए पर्याप्त समय होता है लेकिन किसी विकलांगों की सेवा सहयोग करना आवश्यक नहीं समझते

Social Research Foundation, Kanpur

शायद उन्हें ऐसा महसूस होता है कि उन्हें इससे क्या लेना देना है दुर्भाग्य कभी उनके अति प्रिय व्यक्ति को भी ऐसी जरूरत पड़ सकती है।

शिक्षा पर समक्ष नीति मुल्ता राजनीतिक इच्छाशक्ति एवं राजनीतिक दृष्टि को कार्य में बदलने का मार्ग तलाशने का प्रयास है हमारे समाज में वंचित वर्ग को शिक्षा एवं विकास को मुख्यधारा में लाना ऐसी प्रक्रिया है जिसके लिए समावेशन की राह में आने वाले सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक राजनीतिक प्रशासनिक एवं अन्य प्रकार की बाधाओं को पहचानने तथा व्यवस्थित तरीके से दूर करने की आवश्यकता है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2015 में समावेशी शिक्षा की व्यापकता समझती है भारतीय संदर्भ में समावेशी शिक्षा में अनुसूचित जाति जनजाति अल्पसंख्यक को विकलांग बच्चों एवं युवाओं और अत्यंत गरीबी तथा कठिन चुनौतीपूर्ण स्थितियों में रह रहे बच्चों की विभिन्न आवश्यकताओं को शामिल करना होगा भारत में पहली बार राष्ट्रीय नीति में समावेशी शिक्षा की भारतीय दृष्टिकोण में शामिल किया गया है जिसमें वैश्विक चिंता है जिनमें भारत प्रतिभागी है अथवा जिन पर उसने हस्ताक्षर किए हैं वह प्रमुख कारक कौन से हैं जो विकलांग बच्चों व्यक्तियों को शिक्षा की मुख्यधारा से बाहर रख सकते हैं नीतियां इस बात को नजरअंदाज करती है कि विकलांग बच्चों एवं युवाओं को शैक्षिक मुख्यधारा में शामिल किए गए सभी के लिए शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता सभी के लिए शिक्षा में प्रगति पर नजर रखने वाला ढांचा विकलांग बच्चों एवं युवाओं को अनदेखा करता है योजना प्रशासन निगरानी एवं क्रिया के स्तरों पर समावेशी शिक्षा की राह में मौजूद व्यवस्था गत बाधाओं को पहचानने एवं दूर करने में असफलता यह स्वीकार नहीं करना कि समावेशी शिक्षा पर प्रभाव डालने वाले कारक अंतरों में ही निहित है जो अनुसूचित जाति अल्पसंख्यक वर्गों के विकलांग बच्चों तथा युवाओं की शिक्षा में होते हैं एवं इन वर्गों के बच्चों के बीच भेद के रूप में होते हैं विकलांगता राज आर आई का विषय है और शिक्षा समवर्ती विषय है जिस कारण भारत के विभिन्न राज्यों में विकलांग बच्चों युवाओं को शिक्षा प्रदान करने में कठिनाई होती है विकलांग बच्चों को शिक्षा उपलब्ध

Gond Research Foundation, Kanpur

कराना दो मंत्रालयों की जिम्मेदारी है शिक्षा मानव संसाधन विकास मंत्रालय की जिम्मेदारी है तथा विशेष शिक्षा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की जिम्मेदारी है राष्ट्रों में भी ऐसी तालमेल भारी भूमिकाएं हैं इस कारण विकलांग बच्चों की शिक्षा में विरोधाभासी नीतियां तथा दिखती हैं विकलांग बच्चों को कम आयु में शिक्षा प्रदान करने की भारत में कोई नीति नहीं है आरंभिक वाले काल में देखभाल एवं विकास के सबसे बड़े कार्यक्रम एकीकृत बाल विकास सेवा आईसीडीएस में आंगनबाड़ी केंद्रों को एकीकृत आरंभिक वालकाल विकास केंद्रों के रूप में कार्य करने हेतु विकसित किया जाना तक काफी है जो स्वीकार नहीं किया गया है कि समावेशी शिक्षा समूची शिक्षा व्यवस्था को सुधारने का आरंभिक बिंदु है सकता है जिसमें सभी सीखने वालों को सीखने लाभ होगा और इसी कारण समावेशी शिक्षा की शिक्षा व्यवस्था द्वारा अतिरिक्त घटक गया है विकलांग महिलाओं कन्याओं के लिए हमारी सामाजिक सांस्कृतिक स्थितियों व अनुरूप पूर्ण वास रणनीतियों की आवश्यकता है हमें विकलांग महिलाओं की अधिकार एवं आवश्यकताओं के संदर्भ में व्यापक जागरूकता लाने की आवश्यकता है क्योंकि इस आधुनिक जगत में उन पर अधिक मार पड़ती है जहां महिला के मूल्य को समझ कर उसका सम्मान नहीं किया जाता उसके विपरीत मीडिया तथा फैशन उद्योग में जो तस्वीरें हमारे सामने आती है महिलाओं की स्थिति वास्तव में ऐसे नहीं होती विकलांगता पर वर्तमान आंकड़े जितना चलाते हैं उससे अधिक छुपाते हैं जनगणना जैसी भारी भरकम कवायद से विकलांगता पर आवश्यक जानकारी प्राप्त होने की अपेक्षा करना कठिन है क्योंकि विकलांगता की पहचान के लिए विशेष आवश्यकता है इसमें बौद्धिक एवं आवेदन संबंधी विकलांगता पहचानने वाले फैशन की दरकार होती है जो तब तक नहीं दिखती जब तक व्यक्ति उन्हें पहचानने में [10] नहीं होता भारत में हमें प्रभावी समावेशन हेतु सेवाओं की योजना बनाने के लिए विकलांगता के आंकड़ों की आवश्यकता है इसके लिए नए तरीकों की जरूरत है क्योंकि सर्वेक्षण के तरीके विकलांग व्यक्ति के संबंध में संपूर्ण सूचना नहीं दे सकते हमें विकलांग बच्चों को उसके परिवारों के अलग

Social Research Foundation, Kanpur

किए बगैर सामुदायिक स्तर पर प्रभावी समावेशन हेतु सेवाओं की योजना बनाने के लिए विकलांगता सामाजिक आर्थिक शैक्षिक रोजगार संबंधी स्थितियों प्रत्येक व्यक्ति की विभिन्न आवश्यकताओं पूर्वा संबंधी आवश्यकताओं कौशल विकास शिक्षा आदि पर सूचना चाहिए भारत को विद्यालय के एकीकृत बाल विकास योजना के स्तर पर विकलांग व्यक्तियों का पंजीकरण अनिवार्य करने की आवश्यकता है ग्राम विकलांगता विद्यालय विकलांगता आरंभ कर एवं आधार कार्ड राशन कार्ड के साथ एक अन्य कार जारी कर ऐसा किया जा सकता है इस डिजिटल सूचना का उपयोग भी किया जा सकता है जो वर्तमान काजी विकलांगता प्रमाणपत्र का स्थान ले सकते हैं भारत में सीबीआर कार्यक्रम समुदाय आधारित सेवाएं प्रदान करने के लिए ग्राम विकलांगता पांव की व्यवस्था पहले ही चल रही है समावेशन की राह में बड़ी बाधा माने जाने वाले अन्य मुद्दे निम्न वत है विकलांग बच्चे शिक्षा व्यवस्था में उपेक्षित हैं परिवारों की सहायता नहीं की जाती शिक्षकों के पास पाठ्यक्रम अपनाने योग प्रशिक्षण नेतृत्व ज्ञान एवं समाधान ही नहीं होते शिक्षा की खराब गुणवत्ता माता–पिता शिक्षकों प्रशासकों एवं नीति निर्माताओं के लिए बहुत कम ज्ञान एवं जानकारी उपलब्ध होना समावेशी शिक्षा हेतु ढांचा प्रशासन नीति योजना क्रियान्वयन एवं निगरानी ही नहीं होना समावेशी के लिए जनसमर्थन नहीं हो ना जवाब दें एवं निगरानी की व्यवस्था नहीं होना कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि विकलांग व्यक्तियों की शैक्षिक अधिकारों में जितने अधिक कमियॉ है उनके अनुरूप पर्याप्त राजनीतिक शिक्षा शक्ति एवं समावेशी शिक्षा की जवाब दे नहीं है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2015 पर ऑनलाइन बहस के दौरान विकलांग व्यक्तियों परिवारों तथा विकलांगता के क्षेत्र में काम कर रहे गैर सरकारी संगठनों द्वारा विद्यालयों को पर्याप्त सहायता की कक्षाओं सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से युक्त करने सभी शिक्षकों की विशेष विविध आवश्यकताएं पूरी करने हेतु प्रशिक्षण करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया शिक्षा से वंचित विकलांग बच्चों युवाओं तक पहुंचने में शहरी ग्रामीण खाई को इन चर्चाओं के दौरान प्रमुख चुनौती माना गया राष्ट्रीय शिक्षा

Social Research Foundation, Kanpur

नीति 2015 में शिक्षा व्यवस्था के सभी अंगों में विकलांगता को शामिल किया गया है चाहे शिक्षा में प्रवेश हो प्रवेश नीतियां हो शिक्षकों का प्रशिक्षण हो पाठ्यक्रम का विकास हो शिक्षण की रणनीति हो पठन सामग्री हो मूल्यांकन व्यवस्था हो आवा से शिक्षा माध्यम हो इसमें समावेशी नीति के मामलों में विकलांगता के बजाय शिक्षा का दृष्टिकोण अपनाया गया है यह नीति विकलांग बच्चों को अलग फलक करने के प्रचलन को समाप्त करती है यह प्रत्येक बच्चे के लिए ऐसे सक्षम तथा सहयोगी वातावरण में शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करने हेतु समावेशी दृष्टिकोण एवं लक्ष्य को विशिष्ट दिखाई देने वाले मां अपने योग एवं प्राप्त करने योग कदमों से जुड़ती है जिस वातावरण में बच्चों से विकलांगता अथवा लैंगिक आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2015 को एकदम निचले स्तर पर क्रियान्वित किया गया तो इसमें कायापलट करने की जबरदस्त संभावना है हमें ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए जिसके लिए ऐसे कार्य करने चाहिए जिसके दरवाजे सभी विकलांग विद्यार्थियों के लिए खुले हो और उनके लिए अनुकूल वातावरण हो लचीली शिक्षा व्यवस्था लर्निंग सुविधाएं प्रस्तावित स्वयं ऑनलाइन शिक्षण समावेशी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्र कौशल विकास कार्यक्रम सभी वर्तमान शिक्षकों में क्षमता निर्माण तथा अन्य उपायों से सभी के लिए शिक्षा भारत में यथार्थ बन जाएगी समाज में विकलांगों को दोमद का व्यक्ति माना जाता है सर्वत्र उनकी क्षमताओं पर शक किया जाता है इसमें परिवार समाज और सरकार तीनों ही समान सहभागी है विकलांगों को या तो आती हमदर्दी जताई जाती है या पूर्णता अलग छोड़ दिया जाता है जबकि विकलांगता की भावनाएं भी सामान्य व्यक्ति की तरह ही होती है आज एक पढ़ा–लिखा समाज ना जाने विकलांगों को अलग क्यों समझते हैं हमारे समाज में परोपकार बंधुता और दान धर्म के बड़े–बड़े दावे जरूर के जाते हैं किंतु व्यावहारिक रूप धरातल पर इसका असली रूप, से बहुत ही अलग है।

जहां कहीं विकलांग को समाज ने सहयोग किया है वहां विकलांग समाज के लिए वरदान साबित हुआ है जैसे सूरदास, हेलेन

Social Research Foundation, Kanpur

किलर लुइ ब्रेल मिल्टन जयश्री से थामस एडमिन तैमूर लंग अजन भट्टाचार्य सुधा चंद्रन कृष्णा चंद्र डे रविंद्र जैन तारा नाथ , सतीश गुर्जर रघुवंश सहाय वर्मा पायलट रूजवेल्ट निकोलाईवा की महाराणा रंजीत सिंह वेद प्रकाश मेहता जयपाल रेड्डी सुदिप्ता अधिकारी राज ठाकुर इत्यादि किसी न किसी रूप में विकलांग है जो समाज के कल्याण तथा मानव विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं।

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण 1991 में भारत सरकार सर्वेक्षण करवाया था तो पता चला कि 7000000 दिव्यांग रोजगार की तलाश में है 1959 में विकलांग का विशेष रोजगार कार्यालय मुंबई में देश का पहला कार्यालय खोला गया सयुक्त राष्ट्र ने विकलांग के कल्याण के लिए कोई पृथक विभाग नहीं खोला जिसमें व्यवसाय प्रशिक्षण एवं रोजगार का प्रयास करता है ।

आज देश में विकलांगों की समस्याओं से जुड़ी सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएं कार्यरत है जो उन्हें उनकी क्षमता के अनुसार योग बनाकर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाती है और समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाती है संस्था के सहयोग से विकलांग का अर्थ नकारापन नहीं रह गया है प्रशिछित होकर विकलांग अपनी सामर्थ्य के अनुसार समाज का पथ प्रदर्शक होता है इसलिए हमारी स्वयंसेवी संस्थाएं हमेशा सहयोग विकलांग को कर रहा है विकलांगों के लिए कार्य कर रही है मात्र 1000 सरकारी संस्थाएं है 19वीं शताब्दी में ईसाई मिसनरी ने धार्मिक भावनाओं से प्रेरित होकर शिक्षा स्वास्थ्य तथा अन्य सहायता देना शुरू किया आजादी के बाद 1953 में केंद्र सरकार समाज कल्याण बोर्ड की स्थापना की जिसमें विकलांग के स्वयंसेवी संस्थाओं के द्वारा कल्याण कार्यक्रम चलाना था आजादी से पूर्व नेत्रहीनों के लिए 32 और बधीर के लिए 30 विशेष विद्यालय इन संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे थे लेकिन अभी 250 से अधिक नेत्रहीन लगभग 500 से अधिक वधीर के विद्यालय चल रहे हैं जिसमें 100 से अधिक माध्यमिक स्तर के हैं इन संस्थाओं ने विकलांग रोकने के विकलांग का जल्दी पता लगाने विकलांग को सहायता उपकरण

Social Research Foundation, Kanpur

लगाकर कम करने शिक्षा देने विशेष प्रशिक्षण देने कृत्रिम अंग प्रदान करना रोजगार की व्यवस्था करने पत्रिका निकालने जागृति पैदा करने विकलांगों के मानसिक सामाजिक पुर्नवास के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है ।

इसमें कुछ संस्थाओं ने विशेष प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षकों को तैयार करना प्रारंभ कर दिया तो कुछ ने विकलांग के लिए सहायता उपकरण बनाना भी प्रारंभ कर दिया यह संस्थाएं निम्न है

शहर	नाम	कार्य
जयपुर	महावीर विकलांग केंद्र	जयपुर फूड
चंडीगढ़	निवेदक स्टडी सेंटर	कृतिम
हैदराबाद	ठाकुर हरिप्रसाद संस्थान गुंजा वा	मानसिक इजाजत
ओखला गांव	चेशायर होम	प्रशिक्षण
पुणे	जिला कुष्ठ समिति	कुष्ठरोगी इलाज
नरेंद्रपुर	रामकृष्ण मिशन आश्रम	प्रशिक्षण
दिल्ली	अमर ज्योति स्कूल अंचल मुस्कान	प्रशिक्षणएवं अन्य
चेन्नई	मास्टर इन रिहैबिलिटेशन आफ विजुअली हैंडीकैम	विशेष शिक्षक
मुंबई	अली यावर जंग राष्ट्रीय विधि संस्था	वधीर
देहरादून	राष्ट्र दृष्टि बधीर संस्थान	प्रशिक्षण
बंगलुरु	जे एस एस शिक्षक प्रशिक्षण	प्रशिक्षण

स्वयंसेवी संस्थाओं को मान्यता विकलांग अधिनियम पारित होने के 6 महीने के अंदर विकलांग व्यक्तियों हेतु कार्य संस्थाएं पंजीकरण प्रमाण पत्र हेतु आवेदन करेंगे या सक्षम अधिकारी द्वारा जारी किया जाएगा तथा राज्य सरकार जितनी अवधि तक इसकी मान्यता देगी सरकारी संस्थाएं के लिए इसकी प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं है 80% या उससे अधिक दिव्यांग व्यक्ति को गंभीर विकलांग व्यक्ति कहा जाता है सरकारी संस्था उनका रखरखाव करती है जहां कहीं निजी संस्थाएं सरकारी मानदंड पर इसकी व्यवस्था करती है उसे गंभीर विकलांग ग्रस्त व्यक्ति को संस्थाओं का

Social Research Foundation, Kanpur

मान्यता दी जाएगी विकलांगता के क्षेत्र में कुछ अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं भी काम कर रही है उनकी विदेशी संस्थाएं भारत की स्वयंसेवी संस्थाओं को

आर्थिक सहायता देने का कार्य करती है जून 1993 क्रिश्चियन एंड इंडिया पॉलिसी की रिपोर्ट प्रकाशित की गई थी उनके अनुसार 1988–89 में भारत में स्वयंसेवी का +500000000 की सहायता मिली थी । आर्थिक सहायता देने वाली संस्थाएं निम्न है डेनमार्क में न संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने ब्रिटिश काउंसिल जैसी संस्थाएं है उनके अलावा निजी क्षेत्र में कार्य कर रही है विकलांग के लिए लाभदायक रहा है लेकिन एक दोष भी है कि विदेशी स्वयंसेवी संस्थाएं अस्थाई तौर पर सहायता करती है अगर वह स्वयं सेवी संस्थाओं को अगले वर्ष पैसा नहीं मिला तो काम अधूरा रह जाता है जिससे विकलांग नहीं हो पाते हैं ।

वैसे भी योजनाएं कागज पर बनती है सरकार काम कम प्रचार ज्यादा करती है संस्थाएं केवल सरकार से पैसा लेने के चक्कर में अधिक और विकलांग की सहायता कम करना चाहती है जब तक पूरा समाज विकलांग को नहीं अपनाएगा तब तक विकलांग की समस्याएं समाप्त नहीं होगी।

विकलांग की दशा सुधारने के लिए सरकारी प्रयास तो हुए हैं लेकिन संतोषजनक नहीं है सरकार और हमारे बीच विचोलियां संस्थाओं के चलते विकलांगों का भला नहीं हो पा रहा है उनकी वजह से विकलांग काम समस्या पर नहीं हो पाते हैं उपरोक्त संस्थाओं विकलांग के आबादी के अपेक्षा बहुत कम है जिससे विकलांग की आवश्यकता की पूर्ति करने में असमर्थ रहते हैं।

भारत को 80% संस्थाएं केवल 9 राज्यों में है यह राज्य आंध्र प्रदेश गुजरात केरल कर्नाटक महाराष्ट्र तमिलनाडु उत्तर प्रदेश पश्चिम बंगाल दिल्ली है किंतु बिहार और उड़ीसा के विकलांग की स्थिति ज्यादा कष्टदायक है आज जिस तरह विकलांगता रोकने का काम कर रही है उपाय किए जाए जिसमें विकलांग रोकने में सहायक हो दूसरा विकलांगता के प्रति समाज का सहयोग और सहानुभूति दें ताकि विकलांग अपना

Social Research Foundation, Kanpur

जीवन बोझ न समझे वैसे कुल मिलाकर कहा जाए तो स्वयंसेवी संस्थाएं विकलांग के लिए जो काम कर रही हैं वह सकारात्मक है इक्का–दुक्का ऐसी संस्थाएं जो सुविधाओं का दुरुपयोग भी करती है लेकिन इसके लिए सभी को दोषी ठहराना ठीक नहीं है संस्थाओं को चाहिए कि विकलांगों की भावनाओं का कद्र करते हुए समाज में उसके सभी अधिकार दिला कर विकलांगों को आत्मनिर्भर बनने में सहयोग करें जी हां दिव्यांग वह व्यक्ति होता है जिसके किसी एक सारे अंग के बदले उसके किसी अंग में दिन शक्ति छुपी होती है और लगभग सभी दिव्यांगों में कोई ना कोई दिव्य योग्यता होती ही है इसमें यदि किसी को एक अंग का क्षमता से वंचित रखा है तो उसको किसी न किसी रूप में अन्य क्षमता भी प्रदान की होती है आइए अलग–अलग अंगों के आधार पर विकलांग और विज्ञान में अंतर देखते हैं जिसके हाथ ना हो वह दिव्यांग और जो हाथ होते हुए भी दूसरों की मदद के लिए ना उठे वह विकलांग जिसके पैर ना हो वह दिव्यांग और जो पैर होते हुए भी गलत रास्ते पर चल ले वह विकलांग जिसमें सुनने की क्षमता ना हो वह दिव्यांग और जो किसी मजबूर लाचार की पुकार सुनकर भी अनसुना करें वह विकलांग विकलांगों नहीं जो बोल नहीं सकता विकलांग तो वह है जो जुबान होते हुए भी गलत के खिलाफ मौन रहता है विकलांगों नहीं जिनके किसी अंग की कमी है असली विकलांग तो वह है जिनके अंदर इंसानियत नहीं है जिसकी आंख न हो वो दिव्यांग जिसकी आँख होते हुए भी बुराई करे वो विकलांग।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *ई हेलेंडर (1993)(यू एन डी पी),न्यूयोर्क*
2. *टी जॉनसन (1995) इंक्लूसिव एजुकेशन यूएनडीपी जिनेवा*
3. *डब्ल्यू सी ई एफ ए (1990) वर्ल्ड डिक्लेरेशन ऑन एजुकेशन फॉर ऑल, इंटर– एजेंसी कमीशन फॉर द वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन एजुकेशन फॉर ऑल*
4. *ग्लोरिया बरेट , मीता नंदी (1994) कन्वेंशन ऑन द राइट ऑफ द चाइल्ड, द डिसेब्लस चाइल्ड*

Social Research Foundation, Kanpur

5. बी लिंडक्विस्ट (1994) सलामाँका स्पेन में वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन स्पेशल नीड्स एजुकेशन में प्रस्तुत शोध पत्र 'स्पेशल नीड्स एजुकेशन' कॉन्सेप्चुअल फ्रेमवर्क प्लानिंग एंड पॉलिसी फैक्ट(एन यू न्यूज ऑन हेल्थ केयर इन डेवलपिंग कंट्रीज 2ध्95 अंक 9 से लिया गया)
6. टी जॉनसन (2003) सीबीआर नेटवर्क के सुदूर शिक्षा कार्यक्रम हेतु तैयार की गई इंक्लूसिव एजुकेशन सीडी
7. इंदुमती राव फ्रॉम पंचायत पार्लियामेंट (2000) सीबीआर नेटवर्क
8. इंदुमती राव (2001) अंडरस्टैंडिंग इंक्लूसिव एजुकेशन फ्रॉम हार्ट ई ई नेट न्यूजलेटर एवं वेष प्रकाशन
9. इंदुमती राव (2002) कंट्री स्टेट ऑन इंक्लूसिव एजुकेशन स्पेशल नीड्स डॉक्यूमेंटेशन गुड प्रैक्टिसेज यूनिसेफ क्षेत्रीय कार्यालय
10. इंदुमती राव एवं अन्य (2000) मूविंग अर्वे फ्रो लेवल्स अ क्लास रूम फॉर आल लर्नर्स सीबीआर नेटवर्क, बेंगलुरु
11. पोर्टिज टू एवरी विलेज 1998 सीबीआर नेटवर्क, बेंगलुरु
12. एमएनजी मनी (2000) इंक्लूसिव एजुकेशन,रामकृष्ण विद्यालय, कोयंबटूर

Social Research Foundation, Kanpur

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

जल संकट पर आशाओं की किरण

रश्मि गोयल
एसोसियेट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा,
भूगोल विभाग
शम्भु दयाल डिग्री कालेज,
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Social Research Foundation, Kanpur

जल मानव जीवन व स्वास्थ्य के लिए आवश्यक तत्व है जल के बिना जीवन जीने की कल्पना भी नहीं कर सकते। ऐसा कोई भी कार्य नहीं है जिसमें जल की आवश्यकता नहीं पड़ती हो पृथ्वी में 70% भाग पर जल ही जल है लेकिन उपयोग हेतु कुल जल का 2.5 प्रतिशत है यह पानी सिंचाई के काम में आता है बिजली ने गहराई से पानी को बाहर निकालने में मदद करी है जिसके कारण अधिक दूषित भूजल बाहर आने लगा है प्रदेश में 70% सिंचाई भूगर्भ जल पर निर्भर करती है पीने के लिए जल 80 फीसदी और 15 फीसदी औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति भूगर्भ जल से हो रही है। औरैया, गौतमबुद्ध नगर, कानपुर, गाजियाबाद, लखनऊ आदि शहरों की स्थिति काफी चिंताजनक है क्योंकि यहां भूजल स्तर में प्रतिवर्ष 77 सेंटीमीटर से 1 मीटर तक की गिरावट बताई गई है।

मानव निर्मित इस खतरे से निपटने के लिये किए जा रहे प्रयासों की गति देने से वर्ष 2021 में उम्मीदों को पंख लगेगें। जल संकट से आगाह करते रहने के लिये इस वर्ष करीब पॉच हजार किलोमीटर प्रदेश में लगाए जायेगें, जिनके जरिये भूजल स्तर का मापन डिजिटल वाटर लेवल रिकार्डर से टेलीमेट्री के माध्यम से प्रत्येक 12 घंटे के अंतराल पर किया जा सकेगा। सटीक भूजल आकलन से योजनाओं को लागू करने में मदद मिलेगी। अतिदोहित क्षेत्रों में भूजल रिचार्ज की तुलना में 100 प्रतिशत से अधिक भूजल दोहन खतरे की घंटी है। केवल पेयजल योजनाओं से 630

शहरी क्षेत्रों मे 5200 मिलियन लीटर तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 7800 मिलियन लीटर .भू–जल दोहन प्रतिदिन हो रहा है। गत 20 वर्ष में प्रदेश का औसत भूजल स्तर औसतन करीब तीन मीटर गिरना भविष्य में खतरे बता रहा है।

जलवायु परिवर्तन और दुनिया भर में गहराते जल संकट के बीच विकास की नई कहानी वही देश लिखेगा– जो पानी का धनी होगा। यानी, आज जो देश जितना पानी बचायेगा, वह भविष्य में उतनी ही बड़ी शक्ति के रूप में उभरेगा । यूनाइटेड नेशन वर्ल्ड वाटर डवलपमैन्ट रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2050 तक दुनिया के छह अरब लोगों के पास पीने का पानी उपलब्ध नहीं होगा। भारत इस समस्या की गहराई को समझते हुये जल संरक्षण की दिशा में गंभीरता से काम कर रहा है। जल शक्ति मंत्रालय का गठन इस दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। सरकार ने वर्ष 2024 तक जहॉ देश के सभी घरों में स्वच्छ पानी पहुॅचाने की योजना की है, वहीं जल स्रोतों के संरक्षण व विकास पर भी तेजी से काम हो रहा है। नमामि गंगे परियोजना के जरिये गंगा के पुनरूद्धार के साथ–साथ अन्य नदियों की सफाई का काम भी किया जा रहा है। उम्मीद है कि सरकार की मदद और निजी सहभागिता से जल संरक्षण परियोजनाओं को इस साल और गति मिलेगी।

5.745 निर्मित और निर्माणाधीन बड़े डैम हैं देशभर में	2,394 बड़े डैम (सबसे ज्यादा) हैं महाराष्ट्र में	75% डैम 20 साल से हैं पुराने	2.3 करोड़ से अधिक वाटर पंप का इस्तेमाल होता है कृषि कार्य में	70% भूगर्भ जल का सिंचाई कार्य के लिये हो रहा प्रयोग	90% पानी का उपयोग हो जाता है माइक्रो इरीगेशन के जरिये

Social Research Foundation, Kanpur

जल संरक्षण की आवश्यकता

यूनाइटेड नेशन वर्ल्ड वाटर डेवलपमैन्ट रिपोर्ट के अनुंसार वर्ष 2050 तक दुनिया की आबादी 9.4 – 10.2 अरब हो जायेगी और तब करीब छह अरब लोगों के सामने पीने के पानी की समस्या पैदा हो जायेगी। भारत में भी पानी की मॉग मे तेजी से इजाफा होगा।

जल शक्ति अभियान

केन्द्र सरकार ने जुलाई 2019 में इस अभियान की शुरूआत की थी। इसके तहत देश के 256 जिलों के 1592 विकास खंडों में गहराते पेयजल संकट को दूर करने के लिये योजना बनाई गई है। योजना से गत वर्ष तक साढ़े छह करोड़ से ज्यादा लोग जुड़ चुके थे। 75 लाख से अधिक पारंपरिक व गैर पारंपरिक जल निकायों का जीर्णोद्धार किया गया और करीब एक करोड़ जल संरक्षण व वर्षा का जल संचयन ढांचे तैयार किए जा चुके हैं। कोरोना संक्रमण की महामारी के कारण गत वर्ष इस दिशा में काम थोड़ा सुस्त पड गया था। नए साल में परियोजना के रफ्तार पकड़ने की उम्मीद है।

अटल भूजल योजना

संस्थागत संरचना को सुदृढ़ करने तथा सात राज्यों गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान व उत्तर प्रदेश में भूजल संसाधन प्रबंधन के लिये इस योजना की शुरूआत की गयी थी। इससे इन राज्यों के 78 जिलों को लाभ पहुॅचेगा। वर्ष 2024–25 तक पूरी होने वाली इस परियोजना पर 6,000 करोड़ रूपये खर्च किए जायेगें जिसका 50 प्रतिशत विश्व बैंक ऋण के रूप में प्रदान करेगा। भूजल संरक्षण व प्रंबधन की यह योजना नए साल में विस्तार लेगी।

हर घर शुद्व जल

सरकार ने वर्ष 2019 में योजना के तहत पॉच वर्षो के लिये 3.6 लाख करोड़ रूपये का बजट तय किया था, जिसका आधा हिस्सा केन्द्र व आधा राज्यों को देना है। वर्ष 2020–21 के लिये सरकार ने इस मद में 11,500 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है। फिलहाल 6.01 करोड ग्रामीण

Coral Research Foundation, Kanpur

घरो में नल के जरिये पानी पहुँच रहा है। नए साल में 3.2 करोड़ नए घरों तक नल से पानी पहुँचाने का लक्ष्य है। योजना का उद्वेश्य उपलब्ध जल संसाधन के समुचित प्रबन्धन के साथ–साथ लोगों तक स्वच्छ जल उपलब्ध कराना है।

नमामि गंगे व नदी संरक्षण

गंगा नदी के पुनरूद्धार के लिये वर्ष 2014 में नरेन्द्र मोदी सरकार ने इस परियोजना की शुरूआत की थी। इसके तहत उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, बंगाल, दिल्ली, हरियाणाा व हिमाचल प्रदेश में विभिन्न गतिविधियॉ शुरू की गई। सीवेज इंफ्रास्ट्रक्चर, नदी तट विकास, नदी सतह सफाई, घाट एवं शवदाह गृह, सांस्थानिक विकास, पौधा रोपण एवं ग्रामीण जल निकासी प्रणाली के लिये 28,0790.66 करोड़ रूपये की लागत वाली 310 परियोजनाएं स्वीकृत की गई थीं। इनमें करीब 116 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं। सरकार ने पिछले साल नमामि गंगे के लिये 800 करोड़ रूपये के बजट का प्रावधान किया था। 16 राज्यों की 33 नदियों के संरक्षण के लिये शुरू की गई परियोजना के लिये गत वर्ष 850 करोड रूपये का बजट का प्रावधान किया गया था। नए साल में गंगा व अन्य नदियों के संरक्षण के काम में तेजी आएगी।

सिंचाई प्रणाली

वर्ष 2010 में देश में फसलों की सिंचाई के लिये 688 अरब घन मीटर पानी की जरूरत पडी थी। अनुमान है कि वर्ष 2025 में इस कार्य के लिये 910 अरब घन मीटर पानी की जरूरत पडेगी। इसे देखते हुये सरकार सिंचाई की पारंपरिक पद्धति की जगह ड्रिप और स्प्रिंक्लर प्रणाली को अपनाने के लिये किसानों को प्रोत्साहित कर रही है। देश में 210 लाख हेक्टेयर से अधिक में ड्रिप और 500 लाख हेक्टेयर से अधिक में स्प्रिंकलर प्रणाली से सिंचाई की संभावना है। हालांकि, फिलहाल सिर्फ 2. 13 फीसद में ड्रिप और 3.30 फीसद में स्प्रिंकलर प्रणाली से सिंचाई हो रही है।

Social Research Foundation, Kanpur

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

भारतवर्ष में बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति :एक अध्ययन

रीता श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर
प्रशिक्षण विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव नगर निगम
महिला महाविद्यालय,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Social Research Foundation, Kanpur

किसी भी राष्ट्र की संस्कृति, धर्म, साहित्य तथा ज्ञान का स्तंभ महिलायें होती है। शिक्षित महिलायें भावी नागरिकों का निर्माण करती हैं, परिवार व समाज को सुसंस्कृत बनाकर विभिन्न रूपों में राष्ट्र की सेवा करती हैं। वर्तमान समय में महिलायें व्यावसायिक क्षेत्रों – रक्षा, चिकित्सा, विज्ञान एवम् प्रौद्योगिकी आदि में अपना अमूल्य योगदान प्रदान कर रही हैं परन्तु वर्तमान में बालिका शिक्षा की स्थिति संतोषजनक नहीं है।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं की शिक्षा में निरन्तर परिवर्तन हुए हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सन् 1951 में महिला साक्षरता 7.9 प्रतिशत थी। 1960–61 में प्राथमिक स्तर 70.9 प्रतिशत, माध्यमिक स्तर पर 85 प्रतिशत बालिकायें विद्यालय छोड़ देती थीं। सन् 2001 में इस आंकड़े में कुछ गिरावट आयी विद्यालय छोड़ने वाली बालिकाओं की संख्या प्राथमिक स्तर पर 40 प्रतिशत एवम् माध्यमिक स्तर पर 56.9 प्रतिशत हो गयी। सन् 2011 में स्त्री साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत थी जो पुरूषों से लगभग 15 प्रतिशत कम थी।

बालिकाओं की शिक्षा में बाधक तत्वों के रूप में पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन, गृह कार्य, परिवार की मर्यादा, सुरक्षा व मूलभूत

सुविधाओं की कमी, महिला शिक्षिकाओं की कभी गरीबी, माता–पिता की नकारात्मक सोच आदि के कई कारण हैं।

इन सभी समस्याओं को दूर करने हेतु भारत सरकार निरन्तर प्रयासरत् है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में बालिकाओं की समानता के लिए शिक्षा, स्त्री शिक्षा की राष्ट्रीय योजना (1988) में अपव्यय अवरोधन की दर को कम करने, स्त्री साक्षरता की दर बढ़ाने आदि कई सुझाव प्रस्तुत किये गये। राममूर्ति रिपोर्ट (1990) में पिछड़े क्षेत्रों की बालिकाओं की शिक्षा, आंगनबाडी कार्यक्रम को प्रोत्साहन, जनार्दन शिक्षा समीक्षा समिति (1992) में शिक्षा के सभी स्तरों पर महिलाओं की सहभागिता सुनिश्चित की गयी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2019) में यू0आर0जी0 (न्दकमत त्मचतमेमदजमक ळतवनच) के अन्तर्गत बालिका शिक्षा को प्राथमिकता दी गयी है तथा उनकी शैक्षिक स्थिति सुधारने हेतु विभिन्न नीतियों व योजनाओं को शीघ्र ही क्रियान्वित किया जायेगा। इसके अतिरिक्त सभी पंचवर्षीय योजनाओं में महिला शिक्षा हेतु विशेष बजट की व्यवस्था की गयी।

बेटी बचाओं – बेटी बढ़ाओं (2015) योजना में लिंग भेद, कन्या भूण हत्या आदि सामाजिक कुरीतियों को रोकने का प्रयास भारत सरकार की ओर से किया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त बालिका समृद्धि योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, कन्या सुमंगला योजना (2019), साक्षर भारत मिशन, कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना तथा अन्य छात्रवृत्ति योजनाओं के साथ ही मेधावी छात्राओं को नगद पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया जा रहा है। अनेक एन0जी0ओ0 जैसे – CARE India का बालिका शिक्षा कार्यक्रम (GEP) बालिकाओं की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु प्रतिबद्ध है।

इन सभी योजनाओं का उद्देश्य बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रेरित करना है, परन्तु ये सुविधायें उन बालिकाओं तक नहीं पहुँच पाती, जिन्हें इनकी आवश्यकता है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। अतः आवश्यकता है जन जागरण की तथा भ्रष्टाचार रहित ईमानदार कार्यकर्ताओं

Social Research Foundation, Kanpur

की जिससे जरूरत मन्द बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति को सुधारा जा सकें।

बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार होने से राष्ट्र का सांस्कृतिक आर्थिक विकास स्वयं ही हो जायेगा। जनसंख्या का नियंत्रण, बाल–विवाह, कुपोषण, घरेलू हिंसा व यौन शोषण आदि समस्यायें स्वतः ही समाप्त हो जायेंगी तथा शिशु – मातृ, मृत्यु दर में कमी आने के साथ ही स्वस्थ जीवन शैली, अच्छी आय द्वारा सामाजिक आर्थिक स्तर का उन्नयन तो होगा ही साथ ही शिक्षित महिलायें पोषक आहार, जल, स्वच्छता, पर्यावरण आदि के प्रति संवेदनशील एवं जागरूक होकर राष्ट्र की उन्नति में सहायक होगी।

मुख्य शब्द : शिक्षा, बालिका, लिंग भेद, असमानता, पारिवारिक वातावरण, सांस्कृतिक, आर्थिक, विकास में बाधाएं, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की प्रगति में महिलाओं की प्रमुख भूमिका होती है। शिक्षित महिलायें भावी नागरिकों का निर्माण करती हैं, परिवार व समाज को सुसंस्कृत बनाकर विभिन्न रूपों में राष्ट्र की सेवा करती हैं। समाज में महिलाओं की शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा था – 'आप मुझे शिक्षित और सुसंस्कृत स्त्री दो, मैं देश की तक़दीर बदल दूँगा।' जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में – 'बालक की शिक्षा एक व्यक्ति की शिक्षा है किन्तु बालिका की शिक्षा से ही शिक्षित समाज का निर्माण होता है।'

भारतवर्ष में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1951 में महिला साक्षरता 7.9ः थी। सन् 1960–61 में प्राथमिक स्तर पर 70.9ः तथा माध्यमिक स्तर पर 85ः बालिकायें विद्यालय छोड़ देती थीं। सन् 2001 में इस आंकड़े में कुछ परिवर्तन हुआ विद्यालय छोड़ने वाली बालिकाओं की संख्या प्राथमिक स्तर पर 40ः तथा माध्यमिक स्तर पर 56.9ः हो गयी। सन् 2011 में स्त्री साक्षरता दर 65.46ः थी।

Social Research Foundation, Kanpur

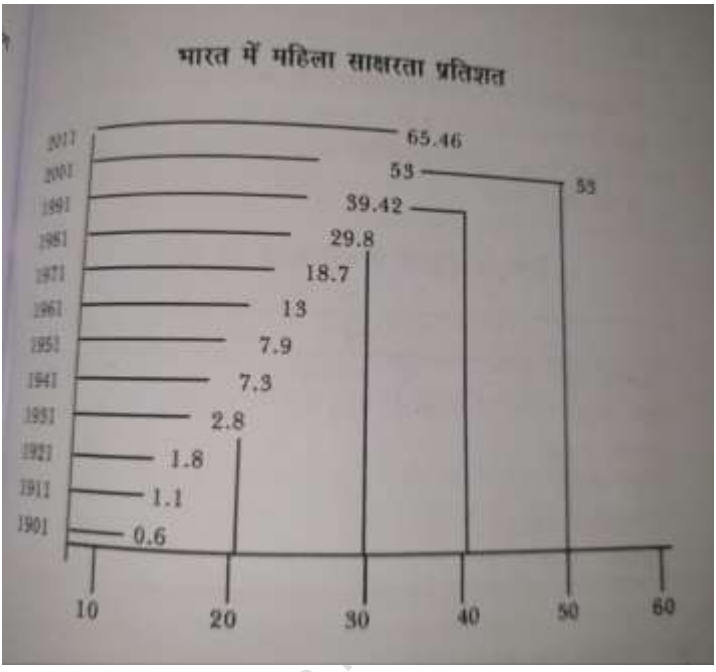

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

यदि भारतवर्ष में स्त्री शिक्षा के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने की स्वतन्त्रता थी। इस काल में महिलायें वैदिक साहित्य का अध्ययन करने के साथ ही संहिताओं की रचना तथा अपनी विद्वता के लिये प्रसिद्ध थीं। गार्गी, मैत्रेयी, विश्वतारा, अपाला आदि प्रसिद्ध विदुषी महिलायें थी। उत्तर वैदिक काल में वर्णानुसार शिक्षा व्यवस्था के कारण महिलाओं को शिक्षा का स्तर कम होने लगा। बौद्धकाल में महिलायें मठों में रहकर शिक्षा प्राप्त करती थीं। शील भट्टारिका तथा विजयंका जैसी उच्च कोटि की कवियत्री इसी काल में हुयी हैं। सम्राट अशोक की बहन संघमित्रा ने विदेशों में बौद्ध धर्म का प्रचार किया। आयुर्वेद, मीमांसा, वेदान्त आदि का अध्ययन करने वाली महिलाओं की प्रतिभा उच्च कोटि की थी परन्तु मुस्लिम काल में बाल विवाह व पर्दा प्रथा के कारण महिलाओं की शिक्षा के स्तर में कमी आने लगी। शिक्षा

राजघरानों व धनी सम्पन्न परिवार की महिलाओं तक ही सीमित होने लगी। मालवा के शासक गयासुद्दीन ने सारंगपुर में एक मदरसा खोला जहाँ सह–शिक्षा की व्यवस्था थी परन्तु पर्दा प्रथा के कारण बालिकायें प्रवेश नही ले पाती थी। इस काल में मीराबाई, जीजाबाई आदि विदुषी महिलाओं के साथी ही नूरजहाँ, रजिया सुल्तान, जहाँआरा कुशल प्रशासक तथा जेबुन्निसा, गुलबदन तथा सलीमा सुल्तान प्रसिद्ध लेखिका व कवियत्री थीं।

ब्रिटिशकाल में उच्च वर्ग की महिलाओं तक ही शिक्षा सीमित रहीं। सन् 1951 तक बालिकाओं के लिये 371 विद्यालय मिशनरियों द्वारा स्थापित किये जा चुके थे, जिनमें 86 आवासीय विद्यालय थे, जिनमें बालिकाओं की संख्या 11,193 थी।

सन् 1854 में बुड के घोषणापत्र में महिलाओं की शिक्षा के प्रति यह स्वीकार किया गया कि यदि भारतीयों का नैतिक व चारित्रिक विकास करना है तो महिलाओं की शिक्षित करना आवश्यक है। इस घोषणापत्र में बालिका विद्यालयों को विशेष अनुदान की व्यवस्था के साथ ही महिलाओं की शिक्षण कार्य के लिये प्रशिक्षण देने की भी व्यवस्था की गयी।

सन् 1882 में हन्टर कमीशन ने बालिका विद्यालय खोलने व संचालन के लिये अनुदान की संस्तुति की। इसके साथ ही बालिकाओं की निःशुल्क शिक्षा, छात्रवृत्ति, छात्रावास आदि की व्यवस्था की संस्तुति भी की। सन् 1902 में लार्ड कर्जन ने भारत में स्त्री शिक्षा का समर्थन किया। सन् 1907 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शान्ति निकेतन में स्त्री शिक्षा विभाग की स्थापना की। सन् 1916 में बम्बई में श्रीमती नाथीबाई वूमेन्स यूनीवर्सिटी तथा दिल्ली में लेडी हार्डिंग्ज़ मेडिकल कॉलेज की स्थापना की गयी।

सन् 1917 में बालिकाओं के लिये 18,121 प्राथमिक विद्यालय, 389 माध्यमिक विद्यालय, 12 आर्ट्स कॉलेज तथा 4 व्यावसायिक कॉलेज स्थापित हो चुके थे।

सन् 1925 में राष्ट्रीय महिला परिषद की स्थापना हुयी। सन् 1927 में अखिल भारतीय स्त्री शिक्षा सम्मेलन तथा सन् 1929 में शारदा अधिनियम द्वारा बाल विवाह पर रोक लग जाने के कारण बालिकाओं की

Social Research Foundation, Kanpur

शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुयी। सन् 1935 में राजस्थान में वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना हुयी।

महात्मा गाँधी ने स्त्री शिक्षा को एक नया आयाम दिया। उनके अनुसार 'हमारी सरकारी शिक्षा प्रायः भ्रमपूर्ण और हानिकारक है और यदि उनके दोष दूर भी कर दिये जाये तो भी मैं नहीं मानता कि यह स्त्रियों के लिये सर्वथा उपयुक्त है।' स्त्रियों को घरेलू कार्यों की व्यावहारिक शिक्षा के साथ ही पुरूषों के समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति

सन् 1947 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। विश्वविद्यालय आयोग (1948–49) ने पाठ्यक्रम में गृह प्रबन्ध, स्वास्थ्य शिक्षा तथा समान वेतन पर बल दिया।

भारतीय संविधान 1950 में अनुच्छेद 15(3) में बालिकाओं की विशेष शिक्षा व्यवस्था, धारा 39 में समान अधिकार तथा 243डी(3) में नगर पालिका चुनाव में स्त्रियों के आरक्षण का प्रावधान किया गया। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952) ने बालिकाओं के लिये स्कूल खोलने तथा गृह विज्ञान के साथ संगीत, कला की शिक्षा तथा पाठ्यसहगामी क्रियाओं में बालिकाओं की सहभागिता को महत्व दिया।

सन् 1958 में राष्ट्रीय महिला शिक्षा समिति का गठन किया गया, जिसमें स्त्री शिक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये, जिनमें निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था, ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षिकाओं को मकान तथा भत्ता देना, प्रौढ़ स्त्रियों के लिये लघु पाठ्यक्रम का निर्माण आदि प्रमुख थे।

राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद (1959), श्रीमती मेहता समिति (1962), राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था, लिंग–भेद समाप्त करना, स्कूल भवनों का निर्माण, छात्रावास की व्यवस्था व आयु सीमा में छूट देने आदि कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968) में बालिकाओं की शिक्षा में अपव्यय अवरोधन रोकने हेतु कई सुझाव प्रस्तुत किये तथा लिंग–भेद, स्थान व धर्म

Social Research Foundation, Kanpur

के आधार पर बिना भेदभाव के शिक्षा का समान अवसर देने की संस्तुति की।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में स्त्री शिक्षा की प्रगति के विषय में कई ठोस सुझाव प्रस्तुत किये गये जिससे वे अपने आत्म सम्मान की रक्षा कर सकें। साथ ही विभिन्न प्रकार के शोषण व घरेलू हिंसा के मुक्त हो सकें। इनमें निरक्षरता दूर करना, समान पाठ्यक्रम, शिक्षक–शिक्षण प्रशिक्षण तथा सहायक सेवाओं को प्रोत्साहित करना प्रमुख हैं।

स्त्री शिक्षा की राष्ट्रीय योजना (1988) में उच्च शिक्षा में बालिकाओं के प्रवेश हेतु 30ः आरक्षण की व्यवस्था, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, रोजगारपरक कार्यक्रमों पर विशेष बल दिया गया।

राममूर्ति समिति रिपोर्ट (1990) के अनुसार बालिकाओं की शिक्षा को घरेलू कार्य प्रभावित करते हैं। अतः उनके अभिभावकों को शिक्षा के प्रति जागरूक करना आवश्यक है। आँगनबाडी कार्यक्रम को जारी रखना, क्षेत्रीय असमानता दूर करना, पिछड़े जिलों तथा अनुसूचित जनजातियों की बालिकाओं की शिक्षा को प्राथमिकता देना तथा संचार माध्यमों के प्रयोग से बालिकाओं की शिक्षा का प्रसार करना आदि राममूर्ति समिति रिपोर्ट (1990) तथा इसकी समीक्षा समिति (1992) की विशेष सिफारिशें थीं।

बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार हेतु सरकार के प्रयास

इन सभी समस्याओं को दूर करने हेतु भारत सरकार निरन्तर प्रयासरत् है। बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति सुधारने हेतु सरकार ने अनेक समितियों व आयोगों का गठन किया।

महिला सामाख्या योजना (1988)

इस योजना के तहत शिक्षा द्वारा महिला को समानता देने हेतु आठ राज्यों के 51 जिलों मे विभिन्न कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। सन् 2014 में विशेष बैठक मे बालिकाओं की शिक्षा हेतु अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। बालिकाओं की अनौपचारिक शिक्षा हेतु 1.18 लाख केन्द्र बनाये गये। ग्रामीण व कमजोर वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा हेतु स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा आर्थिक सहायता दी जा रही है।

Social Research Foundation, Kanpur

बालिका समृद्धि योजना (1997)

यह योजना अगस्त 1997 में ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों मे बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु अगली कक्षा में जाने पर प्रोत्साहन राशि दी जाती है।

इन्दिरा गाँधी बालिका छात्रवृत्ति योजना (2005–06)

इस योजना के तहत इकलौती कन्या संतान को 6 से 12 कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान किया गया है तथा विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रवृत्ति दिये जाने का प्रावधान है।

बालिका प्रोत्साहन योजना (2006–07)

इस योजना के तहत कक्षा 8 की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली बालिका को कक्षा 9 में प्रवेश लेने पर 3000/– की एक मुश्त धनराशि दी जाती है।

साक्षरता भारत मिशन (2009)

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस (8 सितम्बर) के अवसर पर इसे प्रारम्भ किया गया। इस योजना का उद्देश्य मुख्यतः महिलाओ की उच्च शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा को समुन्नत व सुदृढ़ बनाना है तथा लैंगिक अन्तर को कम करके 10: तक लाना है।

राजीव गाँधी किशोरी बालिका सशक्तीकरण योजना (2010)

नवम्बर 2010 को देश के 200 जिलों में इस योजना को गरीबी रेखा से नीचे 11 से 18 वर्ष की किशोरियों के पोषण, स्वास्थ्य, जीवन कौशल संबंधी शिक्षा हेतु प्रारम्भ किया गया।

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना (2004)

बालिकाओं के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से इस योजना का प्रारम्भ किया गया। अब तक लगभग 3.6 लाख बालिकाओं को 3500 विद्यालयों में शिक्षित किया जा चुका है।

Social Research Foundation, Kanpur

सुकन्या समृद्धि योजना (2015)

बालिकाओं की सुरक्षा व आर्थिक कल्याण हेतु इस योजना को शुरू किया गया। अभिभावक बैंक में अपनी बेटी के नाम खाता खोलकर टैक्स का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओं योजना (2015)

कन्या भ्रूण हत्या को रोकने, लिंग भेद समाप्त करने, बालिकाओं की सुरक्षा तथा लिंगानुपात सुधारने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा 100 करोड़ रू0 के अनुमानित बजट के द्वारा 100 जिलों में प्रारम्भ की गयी।

इन प्रमुख योजनाओं के अतिरिक्त सी.बी.एस.ई. स्कॉलरशिप (2016) के अन्तर्गत रू0 500/– प्रतिमाह ट्यूशन फीस में छूट का प्रावधान है।

National Scheme of Incentive to Girls के तहत माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं को रू0 3,000/– प्रति वर्ष छात्रवृत्ति, उच्च शिक्षा में रू0 5,000/– तथा तकनीकी शिक्षा हेतु 'प्रगति' छात्रवृत्ति रू0 30,000/– तथा कोर्स के दौरान 10 महीने तक रू0 2,000/– प्रतिमाह दिये जाते हैं।

कन्या सुमंगला योजना (2019) उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 11 अक्टूबर 2019 करे 1200 करोड़ रूपये के बजट से प्रारम्भ की गयी इस योजना का उद्देश्य परिवार की 2 बेटियों को वित्तीय लाभ पहुँचाना है।

सरकार द्वारा बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति को सुदृढ़ हेतु चलायी जा रही योजनाओं के अतिरिक्त अनेक छळे जैसे CARE INDIA का बालिका शिक्षा कार्यक्रम (GEP) बालिकाओं की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु प्रतिबद्ध है। डॉ0 देशमुख द्वारा STEM (Science, Technology, Engineering and Mathematics) के अन्तर्गत बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहन करना, 10 अक्टूबर 2018 को सफ़ीना हुसैन तथा वक़ार अहमद द्वारा क्ष्ठ कार्यक्रम को प्रारम्भ किया गया, जिसमें राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में 140 गाँवों में 166 स्कूल खोले गये, जिसमें 7300 बालिकायें लाभान्वित हुयीं।

Social Research Foundation, Kanpur

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2019) में यू0आर0जी0 (Under Represented Group) के अन्तर्गत बालिका शिक्षा की स्थिति सुधारने हेतु विभिन्न नीतियों व योजनाओं को शीघ्र ही क्रियान्वित किया जायेगा।

Condition of women in India-
a quick outlook

STATE	%OF FEMALE LITERACY RATE	STATE	%OF FEMALE LITERACY RATE
KERELA	92.0	DAMAN &DIU	79.7
MIZORAM	89.4	GUJARAT	67.3
LAKSHADWEEP	88.2	HARYANA	66.8
TRIPURA	83.1	ORISSA	64.4
ANDAMAN &NICOBAR ISLANDS	81.8	MADHYA PRADESH	60
CHANDIGARH	81.4	MAHARASHTRA	75.5
PONDICHERRY	81.2	BIHAR	53.3
DELHI	80.9	RAJASTHAN	52.7
WHOLE INDIA		65.46%	(Year - 2011)

Source:indiaonlinepages.com

बालिकाओं की शिक्षा में समस्यायें एवम् बाधक तत्व

यद्यपि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार हेतु सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा कई प्रयास किये गये। पंचवर्षीय योजनाओं में बहुत–सा धन व्यय किया गया। वर्तमान सरकार बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार के लिये अनेक योजनओं को क्रियान्वित कर रही हैं। अनेक NGOs तथा निजी संस्थायें बालिका शिक्षा की उन्नति के लिये प्रयासरत् है। परन्तु आज भी भारतवर्ष में बालिकाओं की शिक्षा में संतोषजनक प्रगति नहीं हो रही है। अनेक बाधक तत्व व समस्यायें उनकी शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न करते हैं :–

1. बालिकाओं का शीघ्र विवाह उन्हें शिक्षा बीच में ही छोड़ने पर विवश कर देता है। एक अध्ययन के अनुसार 14 वर्ष से कम उम्र की 18 लाख से अधिक बालिकायें विवाहित हैं।
2. 15 से 18 वर्ष की अवस्था में लगभग 16 लाख बालिकायें गर्भधारण कर लेती हैं। हर वर्ष 15 वर्ष से कम लगभग 1 लाख बालिकायें ऐसे

Social Research Foundation

शिशुओं को जन्म देती हैं जो कुपोषण का शिकार होते हैं या मानसिक व शारीरिक रूप से अक्षम होते हैं। इन सबका कारण अशिक्षा है।

3. गरीबी के कारण बालिकायें शिक्षा से वंचित रहती हैं। कम उम्र में बहुत ही कम वेतन पर कार्य करके परिवार का भरण पोषण करती हैं तथा अक्सर कुदृष्टि व यौन हिंसा का शिकार होती हैं। एक अध्ययन के अनुसार बाल मजदूरों में 11 प्रतिशत बालिकायें होती हैं। इसके अतिरिक्त घर में छोटे भाई–बहनों की देखभाल, घर के कार्य व घर से विद्यालय दूर होना भी स्कूल न जाने के कारण है। एक अध्ययन में पाया गया कि 50 प्रतिशत ग्रामीण बालिकायें स्कूल के मार्ग में सामूहिक दुष्कर्म का शिकार हुयीं। इसीलिए अभिभावक घर से दूर विद्यालय में नहीं भेजना चाहते।
4. सह–शिक्षा विद्यालयों में अलग शौचालय न होना, बालकों द्वारा छेड़छाड़ व प्रताड़ित किया जाना तथा यौन शोषण आदि के कारण बालिकायें स्कूल छोड़ देती हैं।
5. लिंग भेद व असमानता के कारण बालिकाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता है, उनके स्थान पर बालकों की शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाता है।
6. महिला शिक्षिकाओं की कमी भी बालिकाओं की शिक्षा में बाधक होती है। अभिभावक पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षिकाओं के संरक्षण में अपनी बालिकाओं को अधिक सुरक्षित मानते हैं।
7. प्राकृतिक आपदाओं जैसे भूचाल, बाढ़ या बीमारी के कारण बहुत सी बालिकायें स्कूल छोड़ देती हैं। आय के साधन के रूप में वेश्यावृत्ति को अपना लेती हैं। Infosys Foundation देवदासी प्रथा को समाप्त करने तथा बालिकाओं की शिक्षा के प्रति बहुत सराहनीय कार्य कर रहा है।
8. युद्ध क्षेत्र के आस–पास रहने वाली बालिकायें डर के कारण शिक्षा से वंचित रहती हैं।

Social Research Foundation, Kanpur

9. अभिभावकों की नकारात्मक सोच के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली बालिकायें भी नौकरी करने या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने हेतु अपने शहर से बाहर नहीं जा पातीं।

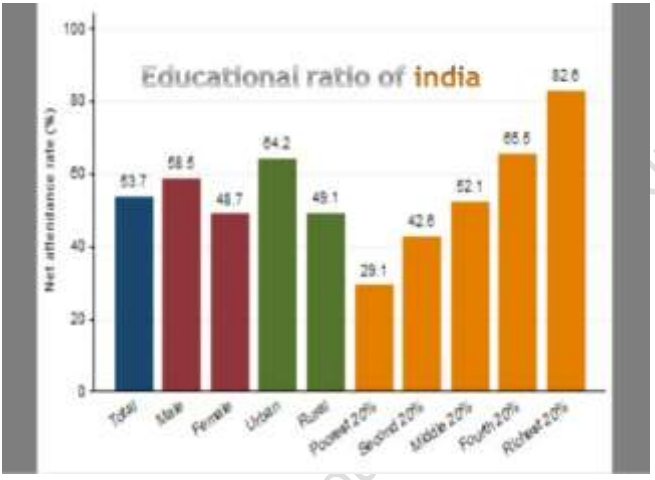

बालिकाओं की शिक्षा की आवश्यकता एवम् महत्व

बालिकाओं का शिक्षित होना आज हमारे समाज के लिये अनिवार्य आवश्यकता बन गया है यदि राष्ट्र की बालिकाएँ शिक्षित होगी तो राष्ट्र सुरक्षित व शिक्षित होगा तथा देश की अर्थव्यवस्था सुधारने में सहायता मिलेगी।

1. भारत की जनसंख्या पर नियन्त्रण किया जा सकेगा।
2. दहेज प्रथा, परदा प्रथा व शीघ्र विवाह पर रोक लगायी जा सकेगी।
3. घरेलू हिंसा व यौन शोषण व दुष्कर्म जैसे अपराधों पर अंकुश लग सकेगा।
4. बालिकायें अपने अधिकारों के प्रति सचेत होंगी तथा अन्धविश्वासों व कुरीतियों का विरोध कर सकेंगी। कन्या भ्रूण हत्या, देह व्यापार जैसी सामाजिक बुराइयों को रोक सकेंगी। शिशु व मातृ मृत्यु दर में कमी आयेगी तथा कुपोषण, बीमारियों की संभावना कम होगी।
5. राजनीति में सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर सकेंगी।

6. विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करके देश की सेवा कर सकेंगी।
7. परिवार की आय बढ़ाने में सहायक होंगी। बालिकाओं की छुपी प्रतिभा का पता लगाने के लिये उन्हें शिक्षित करना आवश्यक है।
8. यदि बालिकायें शिक्षित होंगी तो वे पर्यावरण प्रदूषण, जल की समस्या, स्वास्थ्य, पोषक आहार एवम् स्वच्छता के प्रति स्वयं तो जागरूक होंगी ही समाज को भी जागरूक करने में सहायक होगी तथा स्वस्थ जीवन शैली द्वारा परिवार व समाज का उत्थान कर सकेंगी।
9. शिक्षित महिलायें अपने बालक बालिकाओं को संस्कार दे सकेंगी, मूल्यों के प्रति, ईश्वर के प्रति आस्थावान बना सकेंगी, जिससे वे मानसिक विकृतियों से बच सकें। विशेषकर बालकों को अच्छे संस्कार दे सकेंगी जिससे वे समाज में दुष्कर्म, यौन शोषण, हिंसा जैसी घटनाओं की ओर प्रवृत्त न हों।

बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति सुधारने हेतु सुझाव

भारतवर्ष में बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति सुधारने हेतु आवश्यक है कि –

1. सरकार द्वारा बनायी गयी योजनाओं का उद्देश्य बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रेरित करना है परन्तु ये सुविधायें व धनराशि उन जरूरतमन्द छात्राओं तक नहीं पहुँच पाती जिनकी उन्हें आवश्यकता है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में । अतः आवश्यकता है भ्रष्टाचार समाप्त करने की तथा ईमानदार व कर्मठ कार्यकर्ताओं की जो वास्तव में बालिकाओं की शिक्षा के लिये कार्य कर सकें तथा ये योजनायें मात्र कागजी कार्यवाही बनकर न रह जायें। प्रायः लक्ष्य पूर्ति हेतु गलत प्रकार से इन योजनाओं पर कार्य होते देखा गया है।
2. यद्यपि अनेक स्वयंसेवी संस्थायें बालिकाओं की शिक्षा के उन्नयन हेतु सराहनीय कार्य कर रहे हैं परन्तु प्रायः यह अनुभव किया जाता है कि उनका उद्देश्य अपनी संस्था का नाम का प्रचार–प्रसार अधिक होता है।

Social Research Foundation, Kanpur

3. माता–पिता तथा अभिभावकों को बालिकाओं की शिक्षा के लिये जागरूक करना अत्यन्त आवश्यक है। कुछ अभिभावक बालिकाओं को पराया धन मानते हैं। उन्हें पढ़ाने के बजाय उनका विवाह करना अधिक आवश्यक समझते हैं। वे बालिकाओं को पढ़ने या नौकरी करने हेतु शहर से बाहर नहीं भेजना चाहते। अतः इनकी प्रतिभा घर की चाहरदीवारी में दम तोड़ देती है।
4. महिलाओं को विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया जाये। उन्हें रोजगार के अवसर प्रदान किये जाये। उन्हें कौशल विकास का प्रशिक्षण देकर लघु उद्योग, कुटीर उद्योग लगाने हेतु प्रेरित किया जाये।
5. बालिकाओं की सुरक्षा हेतु सुदृढ़ व्यवस्था की जाये उनको जूडो–कराटे तथा अन्य शारीरिक क्षमता में वृद्धि करने वाली क्रियाओं का प्रशिक्षण दिया जाये, जिससे वे अपनी रक्षा स्वयं करने में सक्षम हो सकें।
6. पुरूषों को अपनी सोच को बदलना होगा तथा स्त्रियों को बराबरी का हिस्सेदार बनाना व प्रगति के लिये प्रोत्साहित करना होगा।
7. यद्यपि अनेक महिलायें राजनीति में सक्रिय है तथा उच्च पदों पर आसीन है। सरकार ने भी 33 प्रतिशत का आरक्षण लोक सभा तथा विधान सभा में महिलाओं हेतु किया है। अतः शिक्षित तथा कर्मठ महिलाओं को राष्ट्र सेवा हेतु राजनीति में आना चाहिये।
8. बालिकाओं की शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन किये जायें। उन्हें पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही व्यावहारिक ज्ञान अवश्य दिया जाये। गृह विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान के साथ ही मूल्यों व संस्कारों की शिक्षा देना आवश्यक है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक बालिकाओं की शिक्षा के उत्थान के लिये कई प्रावधान किये गये हैं, जिसमें जेण्डर समावेशी कोष (6.8 (पैरा) 2020) की स्थापना सराहनीय प्रयास है। यह राज्यों के लिये उपलब्ध कराया जायेगा, जिसमें उनकी योजनाओं व नीतियों द्वारा बालिकाओं को सुरक्षित व स्वस्थ वातावरण दिला सकें।

Social Research Foundation, Kanpur

सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े हुए समूहों में अपनी आधी संख्या महिलाओं की है। इसीलिये राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में बालिकाओं कें की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया, (पैरा 6.7) बालिकाओं की शिक्षा क्षेत्र में आने वाली बाधाओं एवं अभावों के कारण अधिकांश बालिकाएं शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाती हैं। महाविद्यालय आने–जाने का समुचित प्रबन्ध व किराया न होना, घर के कार्य, छोटे भाई–बहनों की देखभाल, फीस व ड्रेस आदि का प्रबंध न कर पाना आदि अनेक कारण हैं, जो बालिकाओं की शिक्षा की राह में रोड़ा बनते हैं। यदि विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में जेण्डर समावेशी फण्ड उपलब्ध होगा तो छात्राओं को सहायता दी जा सकेगी। (पैरा 6.9) कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों का अधिक विस्तार किया जायेगा। सह शिक्षा वाले विद्यालयों में अलग टॉयलेट की व्यवस्था तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अध्याय 3 में बालिकाओं के सुरक्षित छात्रावास व यातायात के साधनों को उपलब्ध कराने की घोषणा की गयी है। बालिकाओं के प्रति हिंसा व अपराध की घटनाओं को रोकने में भी ये योजनायें कारगर साबित होंगी।

इस प्रकार बालिकाओं की शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने हेतु नयी शिक्षा नीति सकारात्मक व अनुकूल वातावरण निर्मित करने में सफल सिद्ध होगी।

बदलते भारत में महिलाओं की साक्षरता दर लगातार बढ़ रही है। परन्तु आज भी यह पुरूषों से कम है। शहरी क्षेत्रों में यह आंकड़ा लगभग समान है परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति में विशेष सुधार नहीं हुआ है। अतः रूढ़िवादी मानसिकता को त्यागने की तथा महिलाओं को सम्मान के साथ–साथ शिक्षा, व्यवसाय, नौकरी में बराबरी का स्थान देने की तथा सरकार द्वारा चलायी जा रही नीतियों, योजनाओं में पूर्ण सहयोग देकर बालिकाओं को शिक्षा के लिये प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार होने से राष्ट्र का सांस्कृतिक, आर्थिक व नैतिक विकास स्वयं ही हो जायेगा तथा शिक्षित

Social Research Foundation, Kanpur

महिलायें पोषक–आहार, स्वच्छता, जल, पर्यावरण के प्रति संवेदनशील व जागरूक होकर राष्ट्र की उन्नति में सहायक होंगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सारस्वत, डॉ0 मालती (2016) भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास, आलोक प्रकाशन, लखनऊ, पृष्ठ सं0 340–342।*
2. *वर्मा, दीप्ति (2008) महिला उत्थान के सम्बन्ध में गाँधी जी के विचार (पी–एच.डी.) शोधगंगा*
3. *वर्मा, कीर्ति (2015) स्त्री शिक्षा का इतिहास, रोशनी पब्लिकेशन, कानपुर पृष्ठ सं0 55–64।*
4. *तिवारी, शालिनी (भारतीय महिलाओं की दिशा एवं दशा)।*
5. *त्रिपाठी, केसरी नंदन एवम् आलोक कुमार (2015–16) उत्तर प्रदेश सामान्य अध्ययन, बौद्धिक प्रकाशन, इलाहाबाद पेज नं 288।*
6. *www.tomorrowmakers.com(14-11-2018)*
7. *www.performanceindia.com, modi govt step for girl education*
8. *slideshare.net, mobile girl child education*
9. *learnpick.in, importance of women education*
10. *www.unicef.org*
11. *www.academia.edu, Sushma N. Jogan*
12. *www.slideshare.net, 24 may 2015 – Impaortance of education of girl child*
13. *en.wikipedia.org*
14. *www.google.com*
15. *www.covestro.com/stem/girl education*
16. *www.hindi.theprint.in (Suman Mishra, 28 August 2020)*

Social Research Foundation, Kanpur

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

सल्तनत कालीन शासन व्यवस्था और षडयंत्र

वगताराम चौधरी
सहायक आचार्य
इतिहास विभाग
श्री राजेन्द्र सूरि कुन्दन जैन
राजकीय महिला महाविद्यालय
जालोर, राजस्थान, भारत

Social Research Foundation, Kanpur

भारतीय इतिहास में सल्तनत काल 1206 से 1526 ई. तक का माना जाता है और इसे ''सल्तनत–ए–दिल्ली' या 'सल्तनत–ए–हिन्द' भी कहा जाता है। मुहम्मद गौरी के आक्रमणों के बाद भारतीय राजाओं का प्रतिरोध, गौरी की विजय, कुतुबुद्दीन ऐबक का सत्तासीन होकर दिल्ली साम्राज्य पर नियंत्रण करना, उसके प्रशासनिक, राजनैतिक, सामजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक कार्य ..... इल्तुतमिश का ऐबक के बाद शासक बनना, रजिया सुल्तान का उभार, बलवन का मजबूत और आक्रामक शासन, खिलजियों, तुगलकों और लोदियों की शासन–प्रणाली आदि सल्तनत काल के अहम पड़ाव रहे है।

प्रत्येक शासक के समय में षड़यंत्रों और कुचक्रों की घटनाएँ व्यापक स्तर पर होती रही है। कहीं–कहीं तो ऐसे उदाहरण भी सामने आते है जब शासक का कत्ल कर किसी अन्य रिश्तेदार, सेनापति या दरबारी ने गद्दी कब्जा ली हो। डॉ. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने एक उदाहरण देते हुए लिखा है – 'मुईजुद्दीन बहरामशाह इल्तुतमिश का तीसरा पुत्र था। उसके वजीर मुहाजुद्दीन को सुलतान से अलग शिकायतें थी। इस प्रकार एक सर्वव्यापी षड़यंत्र रचा गया। मंगोलों के हमले के समय मुहाजुद्दीन ने सुलतान की सेना को भड़काया। दिल्ली पर सेना ने हमला कर बहरामशाह का कत्ल कर दिया।'' [1]

अलाउद्दीन खिलजी के समय मंगोलों के आक्रमण और षड़यंत्रों के कारण उभरे भयंकर घटनाक्रमों का वृतांत्त देखा जाए तो तत्कालीन राजनीति के दूषित चेहरों से घृणा होने लगती है। डॉ. कालूराम शर्मा ने इस प्रकार के घटनाक्रमों पर टिप्पणी करते हुए एक घटना विशेष पर लिखा है –''मंगोलों ने घात लगाकर जफर खाँ और उसके सैनिकों को चारों तरफ से घेर कर मार डाला। इस अवसर पर अलाउद्दीन और उलूग खाँ पास ही युद्ध संचालन कर रहे थे परन्तु दोनों भाइयों ने जफर खाँ को बचाने का प्रयास नहीं किया।'' [2]

जूना खाँ ने अपने चाचा जलालुद्दीन फिरोज खिलजी की हत्या कर शासन हथिया लिया। खिलजी वंश के अंतिम शासक कुतुबुद्दीन मुबारक शाह की उसके प्रधानमंत्री खुसरों खाँ ने हत्या कर दी। कुछ समय पश्चात गयासुद्दीन तुगलक ने खुसरों खां से गद्दी हथिया ली। इस तरह सत्ता के लिए सल्तनत काल में भयंकर स्तर पर खूनखराबा और मारकाट होती रही। षड़यंत्र रचे जाते रहे। अपने रक्तसंबंधियों का कत्ल कर गद्दी हथियाने की घटनाएँ हुई।

फिरोजशाह तुगलक जैसे शासकों ने भ्रष्टाचार और षड़यंत्रों को बढावा दिया और अंततः षडयंत्रकारी व्यवस्था ने स्वयं फिरोजशाह के लिए भी मुश्किले खड़ी की। डॉ. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव ने सल्तनतकाल में गुजरात के शासक महमूद बेगड़ा पर टिप्पणी करते हुए उसके समय में हुए षड़यंत्रों और कुचक्रों को सिलसिलेवार ढंग से समझाया है– ''पुर्तगाली सूबेदार डॉ. निन्हो डी कुन्हा ने बहादुरशाह (महमूद बेगड़ा का वंशज) को धोखा देकर उसके अपने एक जहाज पर बुलाया और विश्वासघात कर समुद्र में डूबो दिया।'' [3]

मुस्लिम शासकों ने अपने ही धर्म के शासकों से युद्ध किये षडयंत्र और विश्वासघात किये और सत्ता हथिया ली। अनेक हिन्दू शासकों के साथ ही षडयंत्र और क्रूरता के साथ अमानवीय आचरण कर उनके राज्यों पर कब्जा किया गया।

स्वयं मुहम्मद तुगलक को भी अपने ही परिवारजनों और दरबारियों के षडयंत्रों तथा विश्वासघातों को झेलना पड़ा। स्वयं मुहम्मद

Social Research Foundation, Kanpur

तुगलक ने अपने शासक गयासुद्दीन तुगलक को मरवाकर सत्ता काबिज की थी। ''हनोज दिल्ली दूर अस्त'' जैसा वाकया सल्तनतकालीन षड़यंत्रों का सबसे बड़ा उदाहरण माना जा सकता है। मुहम्मद तुगलक के गुरू निजामुद्दीन औलिया और सुलतान गयासुद्दीन तुगलक के मध्य खुला संघर्ष और मनमुटाव था। विद्रोह दबाने गये गयासुद्दीन ने मुहम्मद तुगलक को कुछ समय के लिए सत्ता सौपी और विद्रोह कुचलने चला गया। मुहम्मद ने अपने गुरु निजामुद्दीन की नीतियों पर त्वरित अमल शुरू किया। गयासुद्दीन खबर मिलने पर कुपित हुआ और दिल्ली आकर मुहम्मद तथा निजामुद्दीन को कुचलने का संदेश भिजवाया। निजामुद्दीन ने पत्र भेजकर गयासुद्दीन को संदेश भिजवाया कि 'हनोज दिल्ली दूर अस्त' अर्थात 'दिल्ली अभी दूर है' और लौटते हुए गयासुद्दीन का कत्ल करवाकर सत्ता मुहम्मद तुगलक को दिलवा दी। स्वयं मुहम्मद तुगलक मौलवियों और धर्माचार्यों के साथ–साथ दरबारियों और रिश्तेदारों के दबाव में रहा। उसे अनेक षड़यंत्रों और विद्रोहों का भी सामना करना पड़ा।

मुहम्मद गौरी ने 1192 ई. के तराइन युद्ध के बाद दिल्ली की सत्ता पर कुतुबुद्दीन ऐबक को बैठाया और ऐबक को अनेक कुचक्रों का सामना करना पड़ा। ऐबक ने तो शुरूआती समय में स्वयं को सुल्तान तक घोषित नहीं किया, क्योंकि गौरी की सत्ता के दावेदारों में अनेक ताकतवर गुलाम शामिल थे।

लोदियों के समय में तो भयंकर कुचक्र हुए और कई प्रकार की राजनैतिक चुनौतियाँ उभरीं। सिकंदर लोदी हो या इब्राहीम लोदी हो सबके समय में भयंकर षड़यंत्र हुए और सत्ताएँ हिलाने तथा बेदखल करने की कोशिशें जारी रही। इब्राहीम लोदी को तो सर्वाधिक षड़यंत्रों और चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

फिरोजशाह तुगलक जैसा ताकतवर सुल्तान भी अपने शासन के अंतिम दिनों में अनेक समस्याओं से घिर गया और तमाम प्रकार के षड़यंत्रों का सामना उसे करना पड़ा। इतिहासकार लिखते है वजीर की हत्या करवाकर मुहम्मद खाँ वास्तविक शासक बन गया, फिरोज नामधारी सुलतान बना रह गया।'' [4]

Social Research Foundation, Kanpur

फिरोज के समय में दासों के विभाग 'दीवान–ए–बंदगान की स्थापना शासन–व्यवस्था के लिए नासूर बन गई और दासों ने एक बार भयंकर विद्रोह किया जिसे विवके के बल पर सुलझाकर शांत किया गया। दासों के प्रति अति सहिष्णुता और अत्यंत उदारता की नीति ने शासन व्यवस्था के लिए नित नये खतरे पैदा कर दिये। फिरोज के जीवित रहते ही उसके कल्याणकारी कार्यों पर पानी फेर दिया गया और पीड़ा तथा पश्चाताप से फिरोज का मानमर्दन हुआ। लोदियों के समय में दिल्ली सल्तनत को जो चुनौतियाँ मिली वे आगे जाकर इस वंश के लिए पतनकारी सिद्ध हुई। लोदियों की लचर प्रशासनिक व्यवस्था ने षड़यंत्रों के लिए आग में घी का काम किया और विद्रोहों की बाढ़ सी आ गयी। सल्तनत काल के मुस्लिम शासकों के साथ–साथ हिन्दू शासकों को भी अनेक कुचक्रों का सामना करना पड़ा। यदि षड़यंत्रों और विद्रोहीं पर किसी सल्तनतकालीन शासक ने व्यवस्थित रूप से नियंत्रण किया है तो वह अलाउद्दीन खिलजी है।

खिलजी की शासन व्यवस्था अर्थतंत्र की मजबूती, सुगठित सेना और आक्रामक तरीके से विद्रोह दबाने की शैली ने अन्य सलतनकालीन सुलतानों के मुकाबले उसे इतना अधिक ताकतवर बना दिया कि उसके समय में षड़यंत्र करने वाले एक बारगी तो भयंकर रूप से कांप जाते थे। दिल्ली सल्तनत को ऐबक और इल्तुतमिश ने संवारा और आगे चलकर बलबन ने मजबूत और विकसित किया, उसे आगे के लगभग 100 वर्षों तक अनेक राजनीतिक झंझावातों का सामना करना पड़ा और फिरोज तुगलक तथा अलाउद्दीन जैसे शासक ही बड़ी हद तक दिल्ली सल्तनत का इकबाल बुलंद रख पाए।

कामेश्वर प्रसाद ने दिल्ली तख्त के लिये संघर्ष करने वाले सल्तनकालीन खिलजियों पर टिप्पणी करते हुए लिखा है ''खिलजियों में सुलतान की मृत्यु के बाद अथवा उसके जीवन काल में ही महत्वाकांक्षी व्यक्ति शासक बनने के लिए षड़यंत्र और तलवार का सहारा लेते थे। इस प्रक्रिया में अमीरों की बन आती थी तो सदैव अपना प्रभाव बढ़ाना चाहते थे। जलालुद्दीन फिरोज खिलजी की षड़यंत्र रचकर अलाउद्दीन ने हत्या

Social Research Foundation, Kanpur

करवाई और सुलतान बना। उसके शासनकाल के उत्तरार्द्ध में मलिक काफूर ने षड़यंत्र कर शहाबुद्दीन के दो पुत्रों–खिज्र खाँ और शादी खाँ की आंखें फोड़वाकर मार डाला। मुबारक खाँ को मारने का षड़यंत्र हुआ लेकिन उसने स्वयं काफूर की हत्या करवा डाली।''[5]

दिल्ली सल्तनत में लगातार उभरे षड़यत्रों के मूल में जाकर कारणों पर विचार किया जाए तो हम देखते हैं कि तुर्क, अफगानों में उत्तराधिकार के नियम तय नहीं थे। सैद्धान्तिक रूप से मुस्लिम सिद्धान्तों के अनुसार सुलतान को पुरुष, व्यस्क एवं धर्म में आस्था रखने वाला व्यक्ति होना चाहिए था। किन्तु रजिया और मुहम्मद तुगलक जैसे शासकों ने जैसे इन सिद्धान्तों का खंडन ही कर डाला था। सुलतानों को पद वंशानुगत नहीं था, बल्कि ''मिल्लत'' को ही अधिकार था कि वह सुलतान का चुनाव करे। सिद्धान्तः इस्लामी व्यवस्था को बनाए रखने के बावजूद मुस्लिम शासन व्यवहार में इनका पालन नहीं कर सके। 'शरा' को अहमियत देते हुए भी दिल्ली के सुलतान निर्वाचन से सुलतानशाही जैसे व्यवस्था नहीं बना पाएं। राजपूतों के प्रभाव में आकर वंश आधारित शासन चलाने के प्रयास बढ़ने लगे जिससे पारिवारिक षड़यंत्रों की भरमार हुई और एक भाई दूसरे भाई के खून का प्यासा होने लगा। वास्तव में तलवार की मजबूती रखने वाला व्यक्ति तो शासक बनता ही था किन्तु उससे भी अधिक चतुर और परिस्थितियों को आक्रमक ढंग से भुनाने वाला व्यक्ति सत्ता को कब्जे में करता था।

सल्लतनतकाल स्वार्थों और लिप्साओं से भरे रक्तरंजित इतिहास का गवाह रहा है। शासकों के बड़े से बड़े गुनाह भी जनता माफ कर देती थी। मुहम्मद तुगलक द्वारा गद्दी पर षड़यंत्रपूर्वक कब्जा करने के बाद जनता और दरबारियों के प्रति किया गया उसका व्यवहार इसकी पुष्टि करता है– ''दिल्ली प्रवेश करते समय उसने खुले हाथों जनता पर सोने–चाँदी के सिक्कों की बौछार की। दरबारियों को भी पर्याप्त धन दिया गया। अपने समर्थकों एवं विश्वास पात्रों के बीच उसने पदों एवं उपाधियों का वितरण भी किया। इससे जनता और दरबारी सभी भूल गए कि उसने अपने पिता की हत्या कर गद्दी प्राप्त की थी।'' [6]

Social Research Foundation, Kanpur

इस प्रकार गौरी के बाद कुतुबुद्दीन, इल्तुतमिश, रजिया और बलबन जैसे गुलामवंशीय शासकों ने तमाम प्रकार के विद्रोहों, संघर्षों और षड़यंत्रों के बावजूद दिल्ली सल्तनत को मजबूत किया वहीं बलबन के राजत्व का सिद्धांत अनेक षड़यंत्रों और कुचक्रों पर भारी पड़ा।

खिलजियों में फिरोज, अलाउद्दीन आदि ने बेहतरीन से शासन संभाला किन्तु कुतुबुद्दीन मुबारकशाह और नासिरूद्दीन खुसरो खां जैसे शासकों के समय हुए षड़यंत्रों ने बाजी पलट दी।

गयासुद्दीन बलवन, मुहम्मद तुगलक, फिरोज तुगलक आदि का शासन भी षड़यंत्रों के प्रसंगों से भरा रहा है। सैयद वंश से लेकर लोदी वंश तक षड़यंत्रों की कहीं अनकही घटनाएँ हुई।

वास्तव में समूचा सलतनतकाल षडयंत्रों की कथाओं से भरा पड़ा है किन्तु इतिहास विदों के लिए इन षड़यत्रों में भी पर्याप्त आलोचनात्मक सामग्री है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *दिल्ली सल्तनत – (799 से 1526 ई. तक) डॉ. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव पृष्ठ 107–108, शिवलाल अग्रवाल एडं कंपनी आगरा।*
2. *भारत का इतिहास (1200–1760 ई.) शर्मा, व्यास, पृष्ठ 84 पंचशील प्रकाशन जयपुर।*
3. *दिल्ली सल्तनत (799 से 1526 ई. तक) डॉ. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव पृष्ठ 251, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी आगरा*
4. *भारत का इतिहास (1206–1526) कामेश्वर प्रसाद, पृष्ठ 86 भारती भवन, पटना*
5. *भारत का इतिहास (1206–1526) कामेश्वर प्रसाद, पृष्ठ 61 भारती भवन, पटना*
6. *भारत का इतिहास (1206–1526) कामेश्वर प्रसार, पृष्ठ 68, भारती भवन पटना*

Social Research Foundation, Kanpur

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

समीक्षा – ''पिताश्री का त्याग''

उत्सव जैन

नौगामा

जिला बांसवाड़ा, (राजस्थान)

Social Research Foundation, Kanpur

प्रस्तावना

पिताश्री का महान उपकार नामक पुस्तक में माता–पिता, परिवार में सौहार्दपूर्ण वातावरण में रहकर संस्कारित जीवन जीने का वर्णन पढ़ने योग्य है। यह कृति नई पीढ़ी में नई ऊर्जा, साहस संस्कार एवं समाज में मर्यादित रहकर जीवन यापन का अच्छा चित्रण किया गया है।

वर्तमान में अपनी संतान को कैसे आत्मनिर्भर बनाना, पिताजी की जिम्मेदारियाँ, पाश्चात्य संस्कृति से परे रहना, समाज एवं रिश्तेदारों में ताल–मेल, बच्चों को शिक्षित करना, बेटियों को पढ़ाकर आत्मनिर्भर बनाना, संस्कारित परिवार में बेटियों का ब्याह करना, योग्य वर देखना, क्योंकि आज खानपान एवं खानदान दोनों पर विचार करना जरूरी हो गया है। इसका अच्छा लेखन कर सुखद जीवन के महत्व को लेखक ने दर्शाया है। एकल परिवार के परिणाम एवं संयुक्त परिवार के आनन्द को ख्यातिनाम कवि एवं साहित्यकार उत्सव जैन जिला बांसवाड़ा (राजस्थान) ने कृति में अच्छी रचना के माध्यम से समझाया। यह कृति घर–घर तक पहुँचे। ऐसी लेखक की भावना है। कि तथा मैं इनके प्रयासो की सराहना करता हूँ।

पिता श्री का महान उपकार

परम पिता परमेश्वर कहते ही पिताजी का नाम पवित्रता, त्याग, समर्पण, साहस, स्वाभिमान के साथ जुड़ जाता है। ईश्वर भी जानता है कि पिता का दायित्व ही सर्वोपरि है। इसलिये प्रितृ सत्तामक राज्य में पुत्र–पुत्री की उत्पत्ति पर पिताजी का नाम लिखा जाता है। इससे यह स्पष्ट होता हैं

कि जितना माँ का त्याग–समर्पण है। उतना पिताश्री का भी है। किन्तु माँ का ममत्व संतान को बड़ा करने तक जिम्मेदारी समझे तो पिता का दायित्व समाज की मर्यादा पुत्र–पुत्री की शिक्षा, संस्कार, परिवार, विवाह उस पर पूरी जिम्मेदारी आ जाती है। पिताजी को पग–पग पर सर्तक रहना पड़ता है। क्योंकि संतान संस्कारवान् निकली तो पिताजी को गर्व होता है। वरना आज स्थिति नई पीढ़ी की देख रहे है। व्यसन, बेरोजगारी, गलत वातावरण में संतान को अनुशासित रखना समुद्र में मोती ढूढ़ना जैसा लगता है। क्योंकि संतान बीज की भांति है, उसको समय पर ध्यान नहीं दिया तो अंकुरित नहीं होगा। उसी प्रकार संतान का नैतिक शिक्षा नहीं दी गई तो भावी पीढ़ी पर गलत परिणाम देखने को मिलेगें। इसीलिये पिताजी स्वंय त्याग एवं निःस्वार्थ भावना से परिवार के प्रति समर्पित होकर भूख, प्यास को सहन करते हैं वह कभी अपनी सन्तान को दुखी नहीं देखना चाहते है। हम सब ने देखा है कि पुत्र के बड़ा होने पर योग्य लड़की ढुढना पिताजी की जिम्मेदारी बनती है। क्योंकि योग्य सुशील बहू नहीं मिली तो पूरे खानदान की इज्जत धूमिल हो जाती है। वर्तमान में काफी उदाहरण देखने को मिलते है कि सास–बहू में झगड़ा, बूढ़े सास–ससूर की सेवा नहीं करना, बूढ़े सास–ससूर को बुढ़ापे में दो रोटी के लिए मोहताज होना पड़े शादी के बाद अपना स्वयं का बेटा पराधीन केवल बहू की ना समझी से अलग–अलग हो जाना। कई बार देखा है आजकल बहू द्वारा दहेज एवं अन्य आरोपों से पूरे परिवार को अदालत के चक्कर काटने पड़ते है। केवल बहू के दिमाग में सास–ससूर को अपना न समझना ही बड़ी भूल माना जाये तो कोई दोराय नहीं। बहू यह समझ ले की ससुराल भी मेरी जन्म स्थली, माता–पिता एवं अपना ही परिवार है ऐसा समझ ले तो कोई ताकत नहीं कि परिवार को कोई आंच आ सके। लेखक कहता हैं कि बहू में यह संस्कार अपने माता–पिता से मिल जाये कि ससुराल ही मेरी जिन्दगी का आधार स्तम्भ है तो वही बहू परिवार, खानदान का नाम रोशन कर सकती है। रामायण को यदि आज की बहू पढ़ ले तो ससुराल में विपरीत परिस्थितियों में सीताजी ने सास–ससुर के वचनों का पालन किया वह जग

Social Research Foundation, Kanpur

जाहिर है। भले सास ने चौदह साल का वनवास दे दिया लेकिन राजा जनक की खानदानी सुपुत्री ने अपने पिताजी से भी शिकायत न करते हुए स्त्री धर्म को निभाया। वरना सीताजी चाहे वह कर सकती थी। लेकिन उसने सोचा यह कर्मो का फल ही है। आज ऐसा समय आता तो पहले सास–ससुर को कटघरे में खड़े कर देते। अपने पति को सम्बन्ध विच्छेद हेतु कानुनी कार्यवाही करते। आप जानते हो पिताजी पर कितनी बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है। रामायण में यह प्रसंग पढ़ने पर आश्चर्य होता है। राजा दशरथ अपनी पत्नी को वचनबद्ध होने से अपने पुत्र श्रीराम को भी नहीं कह सकते। बहू से बात करना तो दूर ऐसी विपरीत परिस्थिति में पिता का दायित्व कैसे निभाया होगा ? यह सोचने का विषय हैं।

इसलिए पूरे खानदान की रीढ़ की हड्डी यदि पिताजी है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। जहाँ तक महिलाओं का मामला है। वहॉ पिताश्री को मौन रहने में ही फायदा है। कई बार वर्तमान में पिताजी पर इतने सामाजिक दबाव आ जाते है कि स्वयं पिताश्री इधर कुआँ उधर खाँई वाली स्थिति आ जाती है। उस समय स्वयं का निर्णय, अनुभवों से लिया हुआ ज्ञान ही आत्म विश्वास को जगाता है।

वर्तमान में यह देखा गया है कि अपनी लाड़ली बेटी के लिए योग्य वर की एवं पूरे खानदान की जानकारी के बाद सम्बन्ध करना अति आवश्यक है वरना वर पक्ष काफी बार धोखा दे देता है। उस समय उस बेटी का दाम्पत्य सुख खत्म हो जाता है। उसमें पिताश्री की भूमिका अहम् रहती है। हम सबने देखा है कि बेटी की शादी के बाद विदाई होती है। तो पिताश्री को सबसे ज्यादा दुख होता है। क्योंकि बेटी पिताजी का एक सहारा माना जाता है। बहू तो सेवा सुश्रुषा में कमी नहीं रखती फिर भी बेटी का ममत्व माँ से भी ज्यादा पिताश्री पर रहता है। साथ ही बेटी को पिताश्री का स्वाभिमान, हौसला ही आगे बढ़ाता है। इसलिये हर बेटी को पिताश्री पर गर्व है। जिनके पिता अल्प आयु में इस दुनिया में नही है उनका परिवार दुख के सागर में डुबा रहता है। उस समय बेटी का दुख देखा नहीं जाता है। बेटी मानो बेसहारा हो जाती है और इधर बेटी का

Social Research Foundation, Kanpur

ससुराल जाना पिताजी के लिये अकेलापन महसूस होता है। यह संसार बड़ा विचित्र है। हम सबने देखा है। बेटी लगातार ससुराल में रहते हुए अपने सास–ससुर के साथ अपने पिताश्री के बारे में ज्यादा चिन्तित रहती है। यदि इस दरम्यान पिताजी का स्वर्गवास हो जाये तो बेटी सबसे ज्यादा रोती है। वह जानती है कि पिताजी थे तब तक यह घर परिवार भाई–भाभी मेरे थे। पिताजी के बाद दूरियाँ स्वतः बन जाती है। भाई–भाभी बुलावे या नहीं बुलावे वहां बेटी का अधिकार कम हो जाता है। आपको मालूम होगा पिताजी की मृत्यु के समाचार सुनते हो बेटी का विलाप सबके ऑखो में ऑसू ला देता है। जब शव यात्रा का समय आता है बेटी पिताजी के अंतिम दर्शन के बाद पैतृक निवास पर बेटी द्वार के दहलीज पर खड़ी होकर रोती है कि अब मेरा अन्दर प्रवेश अधिकार पूर्वक नही पराधीन होकर माँ को मिलने, भाई–भाभी को मिलने आना पड़ेगा। देखो क्या विचित्र स्थिति होती है। पिताश्री की मौजूदगी में पूरा अधिकार बेटी का था। पिताजी जाने के बाद वहीं मकान वही जन्मस्थली परायी लगती है। तो आप मानो पिताजी का प्रभाव त्याग इस बात का द्योतक है कि परिवार के मुखियाँ के बिना घर सूना–सूना लगता है। यद्यपि यह कहने में मुझे कोई संकोच नहीं कि माँ की ममता कोई कम नहीं है। उसका वात्सल्य सम्पर्ण धरती के समान है क्योंकि गंभीरता, साहस, करूणाा माँ के बराबर कोई इस दुनिया में सर्वोपरि स्थान नहीं ले सकता।

दम्पति सुख के बाद संतानोर्त्पात्त में माता–पिता की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। बच्चों के परवरिश से लेकर शिक्षा, संस्कार, रोजगार कर उनकी शादियाँ यह सब कठिन काम है। फिर भी संसार रूपी गाड़ी को चलाने के लिये यह अतिआवश्यक है। इसमें भी अपना भाग्य, धर्म अच्छे कर्म ही सहयोग करते है। वरना कहा गया है कि

Social Research Foundation, Kanpur

''पुतः कपूत तो क्यों धन संचय।
पुत सपूत तो क्यों धन संचय''।।

अतः पुत्र–पुत्री योग्य बन जाये यह सब अच्छे संस्कारों के परिणाम माने जाते है वरना ''भाग्य हीन खेती करे, बैल मरे या सूखा पड़े'' वाली स्थिति भी आती है। लेकिन उस समय आदमी को धैर्य नहीं खोना चाहिये। हिम्मत से काम लेते हुए यह सोचना चाहिये कि इतिहास के पन्नो को देखा जाये तो महाराणा प्रताप, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, हाडारानी का प्रसंग सुनते है तो वह संकट वह परिस्थितियाँ आज नहीं है। केवल हमनें आधुनिकता की दौड़ में तनाव, दिल और दिमाग में बिठा रखा है। देख लो महाराणा प्रताप को जिन्होंने अपनी संतान को घास की रोटी खिलाने की स्थिति वह समय कैसा होगा। उस समय साहस से काम लिया जो अमर हो गये। वर्तमान में आवश्यकताऐं बढ़ा दी। आवक कम रही। भौतिक संसाधन बढा दिये परिवार में अकेलापन आदमी पर अधिक बोझ होने से जिम्मेदारीयॉ बढ़ जाती है। आज का समय कोई सहयोग की भावना से कार्य नहीं करके स्वार्थपन आ गया। पहले संयुक्त परिवार से काम का बंटवारा सभी को अपने–अपने कार्य की जिम्मेदारी तथा सौहार्दपूर्ण स्वच्छ वातावरण, खुली जगह बिमारियाँ कम, खानपान में शुद्धता से उम्र में बढ़ोतरी रही। अब एकान्तवाद ओर भय का वातावरण लौकिक शिक्षा में नैतिक शिक्षा का अभाव संस्कारों की कमी, रोजागारोन्मुक शिक्षा का अभाव प्रदूषित वातावरण से आदमी परेशानी में अपना जीवन यापन कर रहा है। ऐसे वातावरण में अपनी संतान को संस्कारित, शिक्षित एवं आत्म निर्भर बनाना बड़ा मुश्किल सा प्रतीत होता है। इसलिये परिवार के मुखिया पर दोहरी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। घर का मुखिया स्वयं अपने लिये इस आपाधापी में सुविधा आत्मकल्याण नहीं कर पूरे परिवार के लिये ''कोल्हू के बैल'' की भांति दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में अपना जीवन समाप्त कर देता है। लेखक कहता हैं कि संतान को प्रातः देवदर्शन एवं माता–पिता के चरण स्पर्श अनिवार्य करने पर दैनिक चर्या में शान्ति का वातावरण एवं संस्कारो में बढ़ोत्तरी होगी। वरना वर्तमान समय देखते हुए ऐसा लग रहा है

Social Research Foundation, Kanpur

कि अपनी संतान अपने रिश्तेदार, परिवार को भूल कर त्यौहार आदि को भूल कर, कम्प्यूटर, मोबाईल से दिमाग में प्रदूषित वातावरण से सेवा सुश्रुषा, त्याग, करूणा, यह केवल भाषा के शब्द मात्र रह जायेगें। जो अपने पिताजी ने त्याग किया। उसे भूल जायेगें।

महापुरूषों, बुजुर्गो के अनुभव को अनिवार्य रूप से नई पीढ़ी को बताना चाहिये। अन्यथा फिल्मों के फूहड गानो में नई पीढ़ी उलझ जायेगी। फैशन की दौड में पुरूष एवं महिलाओं के वस्त्र कम कर दिये आज आवश्यकता है पुराने गानों की जो दिल और दिमाग में राष्ट्रभक्ति, समाज, परिवार, माता–पिता के बारे में ज्ञानवर्द्धक बना सके। आज जरूरत है खुब लड़ी मर्दानी वो तो झॉसी वाली रानी थी। सारे जहॉ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा। क्या जरूरत पड़ी पैसों के खातिर फिल्मी गीतकारों ने मुन्नी बदनाम हुई, प्यार किया तो डरना क्या जैसे गीत पूरे वातावरण में संस्कार विहिन बना दिया। अतः आज इस पर जोर दिया जाये कि फूहड़ गानों पर रोक लगाकर स्वच्छ वातावरण पैदा करने वाले हमारी संस्कृति के अनुरूप गाने बाजार में आवे तो नई पीढ़ी में परिवार, देश, समाज के प्रति क्या हमारे कर्तव्य है वह मालूम पड़ेगा। अन्यथा पाश्चात्य सस्कृति में हम डूब जायेगें। फिर अपनी संतान अपने काबू में नही रहेगी। कौन भाई बहिन, कौन माता–पिता कौन रिश्तेदार यह प्रश्न अपनी संतान अपने से पूछेगी। उस समय ऐसा लगेगा। "चिड़िया चुग गई खेत" वाली कहावत चरितार्थ होगी।

इसलिये पिताजी पर यह जिम्मेदारी ओर आ पड़ी की ऐसे दुषित वातावरण से अपनी संतान को दूर भले नही रख सके लेकिन सर्तक जरूर कर सके। आज बच्चे शिक्षा रोजगार के लिये देश के महानगरो, विदेशों में रहते है। उस समय अभिभावक की जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि वह पाश्चात्य संस्कृति में हमारी संतान न डूब जाये। बराबर नैतिक शिक्षा, मर्यादा, अनुशासन हमारी संस्कृति की जानकारी देते हुए पिता श्री की भी जिम्मेदारी बनती है कि वह स्वयं कुव्यसनों से दूर समाज में मिलनसार, परिवार एवं रिश्तेदारों से मेलजोल रखकर अपना जीवनयापन करे तो ही सुसंस्कारित परिवार बन सकता है। मैं जानता हूँ कि पिताजी स्वयं अपनी

Social Research Foundation, Kanpur

संतान को सुखी देखने के लिये भूख प्यास सहन कर कड़ी मेहनत कर अपने परिवार का पालन पोषण करते है। भले वह किसान हो, नौकरी वाले हो, व्यापारी हो इसमें परिवार का मुखिया अपनी जान जोखिम में डालकर समाज में अपना स्थान बराबर रखता है। उस समय संतान एवं परिवार की भी जिम्मेदारी बनती है कि पिताजी के कार्यो में हाथ बढ़ाये, एकता में बल है यदि संतान यह सोचले तो वह संतान अपने परिवार समाज देश का नाम ऊँचा कर सकता है। आज सभी रास्ते खुले है। आज हम पत्र–पत्रिकाओं में पढ़ते है कि खेलों के लिये इतनी सुविधा है कि खिलाड़ी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम ऊँचा कर रहे है। कम्यूटर, मोबाईल, इन्टरनेट यह आधुनिक यंत्र का यदि सही सदुपयोग करे तो रोजगार के साथ–साथ ज्ञानवर्द्धक भी है। आपको उदाहरण स्वरूप बताना चाहूँगा कि अभी–अभी बनेगा कौन करोड़पति, यह सामान्य ज्ञान कम्प्युटर के माध्यम से ''एक पंथ दो काज'' कहावत चरितार्थ करते हुए कही प्रतिभाऐं उस मंच पर आकर करोड़पति, लखपति बनी साथ ही अपने समाज का नाम गांव का नाम रोशन किया। उस समय ऐसा लगता है कि आधुनिक यंत्र बुरे नहीं है ? आज कहीं इंजीनियर के पद पर देश–विदेश में युवा प्रतिभाऐं कार्यरत है। मोबाईल सेवा ने देश–विदेश में अपना जाल फैलाकर कहीं लोंगो को रोजगार दिया। यह अपनी सोच पर निर्भर है कि आधुनिक यंत्रो का सदुपयोग करे या दुरूपयोग। शिक्षा के क्षेत्र में भी काफी सुधार हुआ। आज छात्र 100 में से 100 अंक ला रहा है। प्रतियोगिताओं में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर रहा है। आज से ठीक पचास साल पूर्व ही देखा जाय तो पढ़ने की सुविधा बहुत कम थी। दस से पन्द्रह किलोमीटर की सीमा में बड़े विद्यालय नही थे। माता–पिता गरीबी की रेखा में जीवनयापन करने से अपनी संतान की सही शिक्षा नहीं दे पाते थे। अनपढ़ में जीवन समाप्त कर देते थे। उस समय पिताजी बैल गाडी, हल से खेती, छोटी किसी व्यापारी के वहॉ नौकरी अनपढ़ माँ किसी मध्यम वर्ग के वहॉ बर्तन मॉज कर दो समय की रोटी तक सीमित, बच्चे भूखे प्यासे रहकर समय निकाल देते। आज समय परिवर्तित होकर कहीं रोजगार के साधन,

Social Research Foundation, Kanpur

परिवहन सेवा, आधुनिक कृषि यंत्र प्रत्येक गांव में बड़े विद्यालय, महाविद्यालय की सुविधा पाठ्य पुस्तकें, कोचिंग सेन्टर, प्रशिक्षित अध्यापकों का मार्गदर्शक, छात्रावासों की सुविधाऐं आदि से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अपने माता–पिता अपनी संतान को आगे बढ़ा सकते है। अब पिताजी पर जिम्मेदारी वर्तमान को संभाला तो भविष्य महान है। यह मानकर चलना पड़ेगा। ऐसे समय में लौकिक शिक्षा के साथ–साथ नैतिक शिक्षा पर विशेष ध्यान देना पड़ेगा। वरना ज्यादा सुख–सुविधा में संतान भ्रमित हो जायेगी। उस समय पिताजी को भी बार–बार अपनी संतान को सत्संग, मांगलिक कार्यक्रमों, त्यौहारों, पर्वो, सामाजिक कार्यो में विशेष भाग लेने के लिए प्रेरित करने से पाश्चात्य संस्कृति हावी नहीं होगी। बच्चों में शाकाहारी भोजन के गुणों के बारे में बार–बार बताने से शाकाहारी भोजन ही करेगें। आज देश–विदेश में कई परिवार मांसाहार को छोड़कर शाकाहारी बन गये। अंग्रेजी दवाईयों का सेवन त्याग कर प्राकृतिक आयुर्वेदिक औषधियों का विशेष सेवन करते हुए अपनी मूल संस्कृति को बढ़ावा देने लगे। यह सत्य है कि बादलों की ओट में आने से सूर्य डूब नहीं जाता। यह मात्र विज्ञापनों में नई पीढ़ी को अधिक भ्रमित किया। आज भी प्राकृतिक सम्पदा इतनी है कि हमें मांसाहार को उपयोग करना जरूरी नहीं है। यह मात्र अपने स्वार्थ एवं स्वाद ने निर्मम पशु पक्षियों की हत्या कर एक व्यवसाय का रूप ले लिया। इससे हम अपने पैरों पर ही कुल्हाड़ी मार रहे है। प्राकृतिक सम्पदा की कमी, हम स्वार्थवश पेड़ों को काट रहे, खनन चट्टानों की कर रहे, जंगलो को उजाड़ रहे, यह हमारे लिये घातक है तथा पर्यावरण के अभाव में हमारा जीवन अन्धेरे में डूब जायेगा ऐसी परिस्थितियों में पिताश्री को अपने परिवार पर नियंत्रण रखते हुए स्वच्छ वातावरण पैदा करने की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। फिर भी हमनें देखा है कि पिताजी ऐसी परिस्थितियों में भी अपनी संतान के लिये हमेशा चिन्तित जरूर रहते है परन्तु परिवार में ऐसा आभास नहीं होने देते। हमनें देखा है बेटी व्यस्क होने पर समाज में रिश्तेदारों में अपने स्वार्थवश दबाव की स्थिति बन जाती है। कहीं रिश्तेदार नाराज भी हो जाते है पिताजी चाहते है मेरी बेटी अच्छे

Social Research Foundation, Kanpur

संस्कारित परिवार, सुख समृद्धि वाले शिक्षित परिवार में जावे। किन्तु कुछ समाजकंटक परेशानी खड़ी कर देते है। ऐसी स्थिति में निर्णय लेना टेढी खीर है। यही परीक्षा की घड़ी है इसमें सामंजस्य बिठाना सभी रिश्तेदारों को खुश रखना एक अग्नि परीक्षा से कम नहीं है। उस समय माँ की ममता अलग बेटी पर छाई रहती है। बेटी का स्वयं निर्णय अलग होता है। पिताजी को दूर दृष्टि से निर्णय लेना पड़ता है। सोचो यह जिम्मेदारी पिताजी पर कम है। लेखक यह बार–बार कहता हैं कि माँ जन्म देने वाली होने से महान उपकार है लेकिन पिताजी के हौसले पर भी हमें गर्व होना चाहिए कि वर्तमान समय में पिताश्री का त्याग, साहस, करूणा, ममत्व कितना मायने रखता है। धन्य है ऐसे पिताश्री जो विपरीत परिस्थितियों में आत्म चिन्तन कर तालमेल के साथ सही निर्णय लेकर बेटी को सुखद जीवन का नक्शा अपने दिल और दिमाग में रखते है। यह बेटी के रिश्तो में अपना निर्णय, अनुभव, वार्ताओं, प्यार एवं ठोस कदम उठाकर भविष्य के उज्जवलता को ध्यान में रखकर तालमेल बिठाना पड़ता है। मैनें यह देखा है जब आर्थिक स्थिति कमजोर हो तो संतान की प्रतिभा को कम आंका जाता है। जबकि गरीबों में पलने वाली संतान आत्म निर्भर कैसे बने उसके लिये चिन्तित रहती है। लेकिन उस समय गरीबी हावी हो जाने से रिश्तेदार अपना उल्लू सीधा करने में रहते है। जबकि होना यह चाहिए कि अच्छे पैसे वाले रिश्तेदार मदद कर अपने कुल की शोभा बढ़ावे, सहायता करे ताकि वह परिवार आर्थिक रूप से सक्षम हो सके। ऐसा मानना चाहिए कि वह भी मेरा रिश्तेदार है। मेरा परिवार है। किसी को असाध्य रोग होने पर उसकी सेवा करना मानवधर्म है। क्योंकि धर्म के अनुसार चार प्रकार का दान करना पुण्य का काम है। उसमें औषधि रोगी को देना उससे मरीज को बड़ी राहत मिलती है। यह भी पुण्य का काम है। मैनें ऐसे परिवार देखे है जिनके परिवार में कैंसर, किडनीया खराब हो जाना, दम की बिमारी आदि रोग लम्बे समय तक इलाज रोगी की सेवा मांगते है। ऐसी स्थिति में परिवार मे मुखिया पर पूरा भार आ पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में मानव धर्म निभाना चाहिये। आज वर्तमान में खान–पान बिगड़ने से सभी किसी न

Social Research Foundation, Kanpur

किसी बिमारी से ग्रस्त है। परन्तु कुछ बीमारियां पूरे परिवार को आर्थिक, शारीरिक रूप से निर्बल बना देती है उस समय रिश्तेदार एवं सम्पन्न लोग अपना फर्ज निभा देवे तो सोने में सुहागा होगा। क्योंकि अकेले मुखिया इन परेशानियों में समाज परिवार की जिम्मेदारियाँ नहीं निभा सकता। क्योंकि हम जानते है कि :–

कविता –पिताजी

पिताजी के बिना घर,
सूना– सूना लगता है।
कुछ दिन देदो बेटो को जिम्मेदारी,
घर में महाभारत मच जाता है।
सास–बहू का झगड़ा,
चौराहे पर आ जाता है।
पिताजी का कुछ दिन प्रवास,
घर में तहलका मचा देता है।।
पिताजी के बिना घर,
सूना– सूना लगता है।
अब आप सोचो जिसके पिता श्री
अल्पआयु में संतान छोड़ चले जाते है।।
उनके परिवार को पूछो,
वह कैसे जीवन यापन करते है।
पूरा घर टूट जाता,
अकेलापन महसूस करते है।।
उस समय कौन साथ देता,
सब दूर हो जाते है।
मुझे तो उन शहीदों को देख आश्चर्य होता,
अपनी संतान को छोड़ शहीद हो जाते है।।
उस संतान उस माँ को पूछो,
वह जीवनयापन कैसे करते है।

Social Research Foundation, Kanpur

घर का मुखिया नहीं रहा,
उस पर चिन्तन कौन करते है।।
पुण्यशाली वे है जिनके माता–पिता
स्वच्छ एवं दीर्घायु है।
जिम्मेदारियों से मुक्त संतान,
अपनी आयु बढ़ाते है।।
अच्छे संस्कारों के परिणाम,
जिनके माता–पिता जीवित है।
रोज दिवाली सा लगता
पोता–पोती जिनकी गोदी में खेल रहे है।।
उस कुटुम्ब को नमन करो,
जो दादा–दादी को देख रहे है।
कैसे संतान बड़ी हो जाती पता नहीं चलता,
जिनके माता पिता साथ में है।।
परिवार में आनन्द आता,
माता–पिता को मिलने रोज मेहमान आते है।
बच्चे घर को खेल मैदान बना देते,
क्योंकि दादा–दादी धर पर है।।
कौन डरायेगा उन बच्चों को
जिनके दादा–दादी चलते फिरते है।।
बन्धुओं जो माता से अलग हुए,
उनका परिवार दुखी है।।
घर का मुखिया रहे अलग,
यह संस्कारों की कमी है।।
माता–पिता हमें सिखाते यह तो,
मानों हमारा सौभाग्य है।।
अनुभव, हिम्मत नई ऊर्जा,
यह उनका आशीष है।

Social Research Foundation, Kanpur

ले लो पिताश्री से ज्ञान
इनके पास अनुभव का खजाना है।।
नई पीढ़ी को नई मालूम,
समाज में मर्यादा में कैसे रहना है।
पैसा सब कुछ नहीं बन्धुओं,
पूर्वजों के बताये मार्ग पर चलना है।।
इसलिये एकल परिवार में मजा नही,
संयुक्त परिवार का आनन्द लेना है।
रिश्तेदारों, भाईयों, बहनों के रिश्ते,
संतान को पहचान कराना है।।
वहीं देगे अच्छे संस्कार,
यही तो पिताश्री से सीखना है।
इसलिये उत्सव जैन कहता,
पिताश्री का उपकार हमें कभी नहीं भूलना है।।

बन्धुओं इस रचना से यह साफ जाहिर है कि जो शिक्षा हमें पाठ्य पुस्तकों में नही मिलती वह घर, परिवार, रिश्तेदारों, माता–पिता से प्राप्त होती है। मैं तो कहता हूँ कि विदेशी भाषा, आधुनिक यंत्रो का ज्ञान वर्तमान समय को देखते भाषा, आधुनिक यंत्रो का ज्ञान वर्तमान समय को देखते हुए अपनी संतान के देना चाहिये। लेकिन पिताजी एवं अभिभावक यह सुनिश्चित कर लेवे कि अपने बेटे–बेटी को अपने मामा, काका, दादा–दादी, मासी तथा निकटतम रिश्तेदारों के वहॉ मेहमान या शादी–ब्याह, त्यौहारों की याद दिलाते हुए जरूर उनके घर पर भेजे। अपने घर पर रिश्तेदारों को बार–बार आमंत्रित करने से बच्चों में सद्भावना, प्रेम, अपनत्व की भावना संस्कारो का आदान–प्रदान, खान–पान, रहन–सहन, रिति–रिवाज, सांस्कृतिक विरासत की याद से परिवार में स्नेह बना रहेगा। मुझे अच्छी तरह से याद है बुजुर्ग लोग त्यौहारों मांगलिक कार्यक्रमों में नाच गाना को देखकर हमारी प्राचीन संस्कृति याद आ जाती है। बुजुर्ग लोग साफा, पगड़ी, टोपी हमारी शान को याद दिलाते बुजुर्ग महिलाओं का पहनावा मर्यादा का द्योतक है। यह नई पीढ़ी को सिखने की मानो

Cosmic Research Foundation, Kanpur

पाठशाला है। आज बच्चे कम्प्यूटर, मोबाईल तक सीमित हो गये। यहॉ पर पिताश्री अपने संरक्षक, अपने अभिभावक को कुछ समय निकालकर बच्चों को प्राचीन खेल, रिश्तेदारों की पहचान करना भी बहुत जरूरी है। कहीं लोग बिना काम का तनाव लेकर बैठ जाते है। मेरी बेटी मेरा कहना नही मानती, बेटा मेरे वश में नहीं है। बहू रोज झगड़े करती है। यह सब हमारी कमजोरी का परिणाम है। क्योंकि नींव कच्ची होगी तो महल ढह जायेगा। स्वयं को पहले संस्कारित होकर अपनी संतान को संस्कारित करना जरूरी है। यदि पिताश्री नशा के आदी है तो संतान पर नियन्त्रण कैसे संभव है। पिताश्री धुम्रपान करते है तो यह आदत छोड़ने पर ही हम अपनी संतान को संस्कारित करने की पहल कर सकते है। इसीलिये पिताजी को त्याग की मूर्ति कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। क्योंकि पिताजी को समय–समय पर अपने निर्णयों में परिवर्तन करना पड़ता है। कुछ निर्णय परिवार की भलाई में अपनी भलाई मानना पड़ता है। कुछ निर्णय समाज को देखकर करने पड़ते है। इसीलिये किसी ने ठीक कहा है – देश में राजा, समाज में गुरू और परिवार में पिता श्री कभी साधारण नहीं होते, निर्माण और प्रलय दोनों उन्ही के हाथों में होते है। पिताजी के अनुभव, साहस, नई सोच उनके त्याग को नमन करते हुए आपके सुझावों की प्रतिक्षा में विराम लेता हूँ ।

Social Research Foundation, Kanpur

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

शिक्षक एवं राष्ट्र

कल्याणी गुप्ता
शोध छात्रा
संगीत विभाग
दयालबाग ऐजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
दयालबाग, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी
शोध निर्देशक
दयालबाग ऐजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
दयालबाग, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Social Research Foundation, Kanpur

सारांश

भारतीय संस्कृति के निर्माण में तथा एक समृद्धशाली राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक एक सुदृढ़ व्यक्तित्व की भांति कार्य करता है। ज्ञान की वृद्धि करना, उसमें नित नवीन परिवर्तन करना, सुधार करना तथा उस ज्ञान को प्रत्येक व्यक्ति के मध्य विधिपूर्वक प्रसारित करना ही एक शिक्षक का मुख्य उद्देश्य होता है। शिक्षक न केवल किताबी ज्ञान प्रदान कराते है, अपितु व्यवहारिक ज्ञान को भी अपने शिष्यों व विद्यार्थियों के मध्य प्रदान कराते है। जिसके फलस्वरुप एक समृद्धशाली व विकसित राष्ट्र का निर्माण होता है, साथ–ही–साथ एक शिक्षक एक सुसभ्य एवं सुसंगत राष्ट्र और विश्वकल्याण की भावना का भी विकास करते है। एक शिक्षित व्यक्ति अनेक लोगों को शिक्षा प्रदान कराता है और वह शिक्षा ही राष्ट्र की प्रगति व उसके विकास में अहम भूमिका निभाती है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की भूमिका, शिक्षा, शिक्षक एवं राष्ट्र के मध्य अर्न्तसम्बन्ध पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये गए है।

मुख्य शब्द– संस्कृति, शिक्षा, शिक्षक, समाज, राष्ट्र।

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही भारत देश अपनी विविध संस्कृति के लिए जाना जाता है। भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। संस्कृति किसी भी समाज के बौद्धिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास की सूचक होती है, जो कि एक सम्पूर्ण राष्ट्र का निर्माण करती है। भारत देश विभिन्न संसाधनों व संस्कृति से सम्पन्न एक समृद्धशाली राष्ट्र है। भारत देश की संस्कृति अत्यन्त प्राचीन एवं गौरवपूर्ण है। प्राचीन काल से ही भारत देश को, भारतीय संस्कृति को, भारतवासियों को इस सम्पूर्णता के शिखर पर पहुँचाने में हमारे शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पुराणों के मतानुसार भारतीय संस्कृति को समृद्धशाली एवं उन्नत बनाने में हमारे ऋषियों, मुनियों, संतों, भक्तों, दार्शनिकों, विचारकों, गुरुओं, आचार्यों, शिक्षकों इत्यादि का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता, भौतिकता, ग्रहणशीलता, प्राचीनता, नवीनता, निरन्तरता, लचीलापन, सहिष्णुता, लोकहित, विश्व कल्याण और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना अर्न्तनिहित है। मानव जीवन में हमारे आचरण, खान–पान, वेशभूषा, साहित्य, कला, दर्शन, सामाजिक व राजनीतिक संगठन, शिक्षा, विज्ञान, इतिहास, इत्यादि में भारतीय संस्कृति की एक स्पष्ट झलक दिखाई देती है। राष्ट्र की प्रगति के लिए ही मनुष्य संस्कृति के उन पोषक तत्वों को ग्रहण करता है, जो कि समाज की प्रगति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। भारतीय संस्कृति एक समृद्धशाली राष्ट्र के निर्माण में सहायक की भांति कार्य करती है।

भारत देश विभिन्न संस्कृति से सम्पन्न देश है। प्राचीन काल से ही भारत देश को 'विश्व गुरु' के नाम से भी जाना जाता है। इस ज्ञान का बोध हमें हमारे शिक्षकों के माध्यम से ही प्राप्त होता है। हमारे भारत देश में शिक्षक को गुरु के समतुल्य स्थान प्राप्त है। शिक्षक ही एक राष्ट्र का निर्माता होता है व शिक्षक के द्वारा ही हमारे अन्दर नैतिकता, अखण्डता, शांति, एकता इत्यादि गुण प्रवाहित किए जाते है और इन सभी गुणों को

Social Research Foundation, Kanpur

आत्मसात् कर हम एक अच्छे नागरिक बनते है। जिसके परिणामस्वरुप हमारे भीतर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का विकास होता है।

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा व शिक्षा पद्वति पर निर्भर करता है। शिक्षा के अनेकों आयाम है, जैसे– स्कूल शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा इत्यादि। भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का भी इतिहास है। वास्तविक अर्थ में शिक्षा का तात्पर्य 'ज्ञान' से है और ज्ञान प्राप्ति का मार्ग 'शिक्षक' द्वारा ही परिपूर्ण होता हैं। शिक्षक दिन–रात मेहनत कर एक बालक को प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के रुप में परिवर्तित करता है। अतः शिक्षा का मानव जीवन के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

शिक्षा शब्द की व्युत्पत्ति 'शिक्ष' धातु से हुई है। जिसका अर्थ 'सीखने, ज्ञान प्राप्त करने या विद्या ग्रहण करने' से लिया जाता है। साधारण शब्दों में शिक्षा का अर्थ 'ज्ञान प्राप्त करने' से है। शिक्षा के द्वारा ही हम अपने व्यवहारों व संस्कारों का निर्माण करते है। शिक्षा को हम मुख्यतः दो रुपों में ले सकते है। जो कि इस प्रकार से है–

1) व्यापक शिक्षा, 2) संकुचित शिक्षा।

'व्यापक' अर्थ के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य 'मानव के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास' है। 'संकुचित' अर्थ के अनुसार, वो शिक्षा आती है जो केवल 'शिक्षण संस्थानों' में दी जाती है। जब हम घर, परिवार, समाज, कुटुम्ब समुदाय में कुछ भी सीखते है, तो वह 'व्यापक शिक्षा' है और 'संकुचित शिक्षा' में निश्चित अवधि व पाठ्यक्रम है। जिसका मूल्यांकन किया जाता है तथा उसकी उपाधि प्राप्त होती है।

शिक्षा मानव को एक सामाजिक प्राणी बनाती है तथा हमारी सांस्कृतिक धरोहर को भविष्य में आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करने के काबिल बनाती है। शिक्षा के माध्यम से मानव का सम्पूर्ण विकास होता है। सामाजिक जीवन में अपने कर्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक अच्छा शिक्षक छात्रों को अपनी संस्कृति और राष्ट्र गौरव से परिचित कराता है। शिक्षक अपने मन,

Social Research Foundation, Kanpur

वचन और व्यवहार से एक आदर्श प्रस्तुत करके समस्त छात्रों में राष्ट्र–भक्ति की भावना उत्पन्न करता है।

भारत में सदैव ही शिक्षकों का सर्वाधिक सम्मान किया जाता है। शिक्षक का मुख्य लक्ष्य होता है– 'राष्ट्र निर्माण के लिए नई पीढ़ी को तैयार करना।' भारत देश सदैव गुरुकुल परम्परा के प्रति समर्पित रहा है। भारत देश में वशिष्ठ, संदीपन, धौम्य आदि आचार्यों के गुरुकुलों से श्री राम, कृष्ण, सुदामा जी जैसे अनेकों शिष्य निकले। जिन्होंने विश्व वसुधा को सद्ज्ञान का आलोक प्रदान किया। (https://hindi.speakingtree.in) अतः कहा जा सकता है, कि शिक्षक की राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है। जो हमें ज्ञान की राह दिखाये, सही अर्थ में वही एक सच्चा शिक्षक होता है। शिक्षक हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाते है। हिन्दु धर्म में शिक्षकों के लिए यह भी कहा गया है कि 'आचार्य देवो भवः' यानि कि 'शिक्षक' या 'आचार्य' ईश्वर के समान होते है।' (hindi.webdunia.com)

एक बच्चे के प्रथम शिक्षक सर्वप्रथम उसके माता–पिता ही होते है। तत्पश्चात् वह विद्यालयीन शिक्षा ग्रहण करता है। जहां पर उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है तत्श्चात् वह पूर्ण रुपेण स्कूली शिक्षा व उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। जो कि मानव जीवन में शिक्षा का महत्व को दर्शाता है। यही कारण है कि महान शिक्षाविद् डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में पूरे भारत वर्ष में 5 सितम्बर को 'शिक्षक दिवस' के रुप में मनाया जाता है। एक व्यक्ति अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ–न–कुछ सीखता ही रहता है। नये–नये अनुभव प्राप्त करता है। सर्वप्रथम एक बालक जन्मोपरान्त अपने माता–पिता से चलना, उठना, बैठना, खाना–पीना, बोलना इत्यादि क्रियाएँ सीखता है। तत्पश्चात् विद्यालय में शिक्षक से तथा जीवन पर्यन्त अनेकों लोगों से कुछ–न–कुछ सीखता ही रहता है। इस प्रकार वह जो भी ग्रहण करता है, जो भी सीखता है वह सब ज्ञान है और वह जिस किसी से भी जो कुछ भी सीखता है। वह सभी लोग उस व्यक्ति के शिक्षक ही होते है।

Social Research Foundation, Kanpur

शिक्षक को भगवान के समान एक अनमोल उपहार माना जाता है। जिस तरह ईश्वर पूरे ब्रह्माण्ड का निर्माता होता है। उसी प्रकार एक अच्छा शिक्षक एक अच्छे व एक पूर्ण राष्ट्र का निर्माता माना जाता है। शिक्षक हमको हमेशा सौहार्द पूर्ण मन से कार्य करने के लिए प्रेरित करते है। शिक्षा के माध्यम से ही समाज में फैली कुरीतियाँ, सामाजिक समस्याएँ व भष्ट्राचार इत्यादि को खत्म किया जा सकता है। शिक्षक अपने ज्ञान की ज्योति से हमें प्रकाशित करते है और हमारा उचित मार्गदर्शन करते है। किसी भी समाज को विकसित करने के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है, कि वहां के लोग भी शिक्षित हो। एक शिक्षित व्यक्ति अपने ज्ञान के माध्यम से अपने आस–पास फैली कुरीतियों को, भ्रष्टाचार को, अन्धविश्वास को व अज्ञानता को समाप्त कर सकता है तथा अपने ज्ञान से अन्य व्यक्तियों को भी शिक्षा प्रदान करता है। शिक्षक ज्ञान के सागर के समान होता है। जो कि दूसरों को शिक्षा प्रदान करता है। इसीलिए यह कहा भी जाता है कि 'शिक्षक उस मोमबत्ती की भांति है, जो कि स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशित करता है।'

एक शिक्षक एक अच्छे और आदर्श व्यक्तित्व का रुप भी माना जाता है। क्योंकि वह बच्चों का भविष्य तो सँवारते ही है। साथ–ही–साथ शिक्षक प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को बनाने में निस्वार्थ भाव से अपनी सेवा प्रदान करते है। किसी राष्ट्र का मूर्तरुप उसके नागरिकों में ही निहित होता है। शिक्षक न केवल विद्यार्थी के व्यक्तित्व का निर्माता होता है, बल्कि वह उसे सामाजिक ज्ञान भी प्रदान कराता है। शिक्षक की भूमिका केवल छात्रों को केवल किताबी ज्ञान प्रदान करने तक ही सीमित नहीं होती है, बल्कि वह छात्रों को पढ़ाई के अलावा उन्हें सामाजिक जीवन से सम्बन्धित दायित्वों का बोध कराते है तथा उन्हें जीवन जीने की कला भी सिखाते है तथा उन्हें समाज के निर्माण व विकास के योग्य बनाना भी एक शिक्षक का ही दायित्व होता है।

एक निपुण शिक्षक अपनी शिक्षण शैली से विद्यार्थीयों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास करता है। राष्ट्रीयता का भाव जहां एक ओर

Social Research Foundation, Kanpur

विद्यार्थीयों को राष्ट्रभक्त और आदर्श नागरिक बनाता है। वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता का विकास भी कराता है। उसी कारणवश भारतवर्ष में प्राचीनकाल से अनेकों ऋषि–मुनियों व गुरुओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन कालीन ग्रथों में वर्णित है कि भगवान राम, अर्जुन इत्यादि ने भी अनेकों वर्षों तक आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी।

एक शिक्षक सुसभ्य एवं शान्तिपूर्ण राष्ट्र और विश्व का निर्माण करते है। एक शिक्षक को अपने सभी छात्रों को एक सुन्दर एवं सुरक्षित भविष्य देने के लिए तथा सारे विश्व में शान्ति एवं एकता की स्थापना के लिए, उनके कोमल मन मस्तिष्क में भारतीय संस्कृति और सभ्यता के रुप में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के विचाररुपी बीज बोने चाहिए। शिक्षक एक व्यक्ति को कुशल नागरिक व सम्पूर्ण व्यक्तित्व प्रदान करता है। शिक्षक अपने शिष्य अपने शिक्षा के जरिये व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का निर्माण करता है। शिक्षा एक मजबूत ताकत है, जिससे हम समाज को एक सकारात्मक बदलाव की ओर ले जा सकते है।

शिक्षा का मुख्य आधार शिक्षक ही होता है। छात्रों को समाज के निर्माण के योग्य बनाना भी एक शिक्षक का ही दायित्व होता है। शिक्षक ही एक सुदृढ़ और विकासशील देश की मजबूत नींव है और प्रत्येक छात्र और समाज का भविष्य शिक्षकों के हाथ में पूरी तरह सुरक्षित है। आज भले ही आधुनिक युग में शिक्षा का स्वरुप दिन–प्रतिदिन बदलता जा रहा है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व बढ़ रहा है जैसे– आई० आई० टी०, आई० आई० एम० विश्वविद्यालय तथा इन्टरनेट पर अधिकांश शिक्षण बेब पोर्टल होने के बाबजूद भी 'क्लासरुम शिक्षा' और 'शिक्षक' का महत्वपूर्ण स्थान है। उच्च शिक्षा और उच्चतम शिक्षा हेतु इन्टरनेट शिक्षण का महत्वपूर्ण स्थान है। परन्तु शिक्षक ही समाज की आधारशिला है। वह मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है और भविष्य में भी समाज को उचित राह दिखाने के मार्ग पर अग्रसर है और इसी कारण भारतीय संस्कृति में शिक्षक को माता–पिता से भी उच्च स्थान प्राप्त है। किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा, शिक्षा पद्वति व शिक्षित नागरिकों

Social Research Foundation, Kanpur

पर ही निर्भर करता है। शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहार कुशलता और योग्यता प्रदान करती है।

शिक्षा में अनेकों उद्देश्यों की पूर्ति शिक्षकों के माध्यम से होती है। शिक्षा का उद्देश्य एक उत्तरदायी नागरिक व समाज का निर्माण करना भी होता है तथा एक सर्वश्रेष्ठ शिक्षक वही होता है, जो कि जीवन पर्यन्त स्वयं एक विद्यार्थी बना रहता है। इस प्रक्रिया में वह पुस्तकों के साथ–साथ अपने विद्यार्थियों से भी बहुत कुछ सीखता है। इस प्रकार एक विकसित समृद्ध एवं हर्षित राष्ट्र व विश्व के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है।

वर्तमान समय में जबकि कोरोना वायरस एक महामारी का रुप लेकर सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। सम्पूर्ण विश्व के सभी राज्यों में, यहां तक कि भारत देश में कोरोना वायरस पूर्ण रुप से अपने पैर पसार चुका है तथा संकट की इस परिस्थिति में भी शिक्षा के क्षेत्र में अनेकों सम्भावनाएं खोजी जा रही है। जिसमें कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों को ऑनलाइन क्लासेस के माध्यम से शिक्षित कर रहे है। कोरोना वायरस महामारी ने दुनिया भर में लाखों लोगों को शिक्षित करने के तरीके में भी परिवर्तन कर लिया है और साथ ही 'होम स्कूलिंग' की परिस्थितियां तैयार की गई है। जो कि शिक्षा के क्षेत्र में एक सार्थक कदम है। इसके साथ ही मोबाइल फोन, लैपटॉप, दूरदर्शन इत्यादि के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा रही है। शोद्यार्थियों को भी बेबिनार के माध्यम से लगातार जोड़ा जा रहा है। जो कहीं–न–कहीं सकारात्मक रुप से राष्ट्र के विकास की ओर अग्रसर है और भविष्य में आने वाली पीढ़ी के लिए भी ज्ञान प्राप्ति के रुप में प्रगतिशील है।

अतः हम कह सकते है कि शिक्षक ही एक समृद्धशाली राष्ट्र की नींव होता है और एक सम्पूर्ण विकसित राष्ट्र का निर्माण करता है। शिक्षक और राष्ट्र एक–दूसरे से घनिष्ठ रुप से अर्न्तसम्बन्धित है। एक समृद्धशाली राष्ट्र के निर्माण में एक शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान है। एक शोद्यार्थी होने के नाते इस विषय के चयन के माध्यम से यह मेरा सार्थक प्रयास है कि राष्ट्र निर्माण में शिक्षा, शिक्षण पद्वति, गुरुओं व शिक्षकों को सम्मान की

Social Research Foundation, Kanpur

भावना प्रदान करना तथा भविष्य में आने वाली पीढ़ी व शिक्षक बनने के मार्ग पर अग्रसर नागरिकों को शिक्षक व शिक्षा पद्वति की महत्वता से अवगत कराना। जिससे कि वह भी भविष्य में राष्ट्र निर्माण की ओर अग्रसर हो सके तथा आने वाली पीढ़ी को भी इस योग्य बना सके कि वह भी एक समृद्धशाली राष्ट्र के निर्माण में पूर्ण रुपेण सक्षम हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Aneja, Dr. Neena, [nov14 to oct 15], role of teachers in Nation Buildings, Journal of information, knowledge and research in humanities and social, volume 3, Issue 2, ISSN: 0975-6701, p.g.149-152 www.ejournal.aessangli.in*
2. *Sharma, Rajiv, [August 2018], Kku iznkrk ds #i esa f"k{kd dh tfVy Hkwfedk, in journal of Advances and scholarly Researches in Allied Education, volume XV, Issue No 6, ISSN: 2230-7540, p.g.295-301 http://ignited.in/a/58046*
3. *http://www.indianyouth.net/role-of-teachers-in-nation-building/*
4. *www.learncram.com>hindi-essay*
5. *https://hindi.speakingtree.in/blog/content-378909*
6. *hindi.webdunia.com*

Social Research Foundation, Kanpur

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

States of Matter Review

Seema Garg
Associate professor
Department of Chemistry
S.P.C. Government College
Ajmer, Rajasthan, India

Social Research Foundation, Kanpur

Introduction

1. The word “matter” refers to everything in the universe that has mass and takes up space.
2. Individual matter of state is a collection of a large number of atoms, ions or molecules.
3. States of matter are generally described on the basis of qualities that can be seen or felt.
4. A state of matter can be defined as a set of states distinguished from another set of states by a phase transition.
5. For many centuries, it was considered that there were only three states of matter solid, liquid and gas. Water is the best example because it represents naturally in the three states.
6. The development of new technologies has been discovered other six states matter i.e., plasma, QGP, QSL, degenerate state, Bose-Einstein Condensate and Super ionic Ice till date.
7. Some other states are believed to be possible but remain theoretical.

Classification of Matter

1. Matter can be classified into two broad categories: pure substances and mixtures.
2. A pure substance is a form of matter that has a constant composition (meaning it's the same everywhere) and properties that are constant throughout the sample (meaning there is only one set of properties such as melting point, density, surface tension, viscosity, taste, flavour, colour, boiling point, etc. throughout the matter).
3. Pure substances further divide into two classes: Elements and compounds.
4. Element: A pure substance that cannot be broken down into chemically simpler components is an element. For example: aluminium, iron, silver, gold, copper, sulphur, oxygen etc.
5. Compounds: A pure substance that can be broken down by chemical changes are called compounds. For example: mercury oxide, sucrose, silver chloride, sodium chloride etc.
6. A mixture is a physical blend of two or more components. It further classified into two classes: Homogeneous (or Solution) and Heterogeneous.

Social Research Foundation, Kanpur

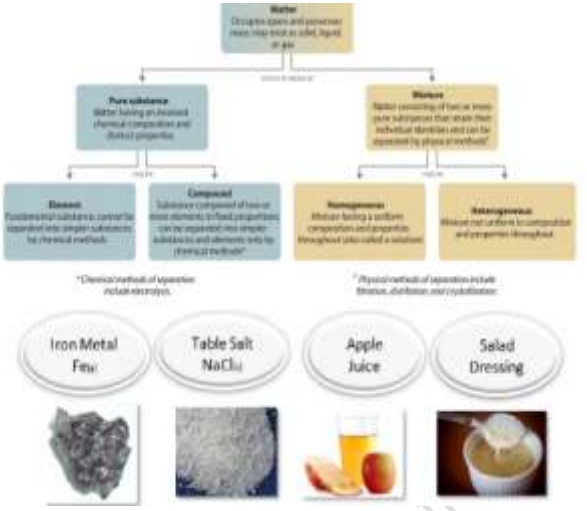

Changing States of Matter

A state of matter is also characterized by phase transitions. A phase transition indicates a change in structure and can be recognized by change in properties. A distinct state of matter can be defined as any set of states distinguished from any other set of states by a phase transition. Water can be said to have several distinct solid states. The appearance of superconductivity is associated with a phase transition, so there are superconductive states.

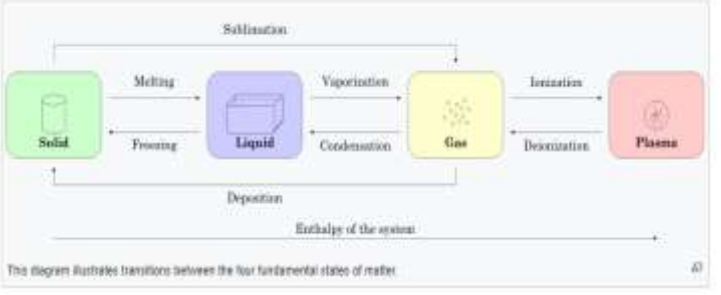

Phase describes the physical state of matter. The key word to notice is "physical". Matter only moves from one phase to another by physical means. If energy is added (increasing the temperature) or if energy is taken away (freezing something), you can create a physical change.

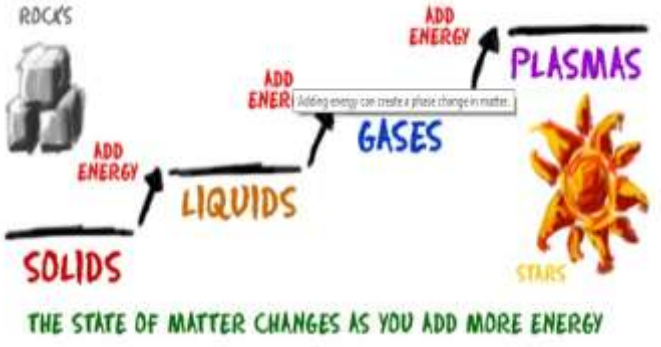

Types of States of Matter

Generally, states of matter are distinguished by changes in the properties of matter related to external factors such as pressure and temperature.

Types of states of matter are broadly classified as follows:

1. Solids
2. Liquids
3. Gases
4. Plasma
5. Bose-Einstein Condensate
6. Quantum Spin Liquid (QSL)
7. Degenerate State
8. Quark-Gluon Plasma (QGP)
9. Super ionic ICE

Solids

In a solid, constituent particles (ions, atoms, or molecules) are closely packed together. The forces between particles are so strong that the particles cannot move freely but can only vibrate. As a result, a solid has a stable, definite shape, and a definite volume. Solids can only change their shape by force, as when broken or cut. For example: diamond, graphite, fibre glass, wood, metal, Iodine, Teflon etc.

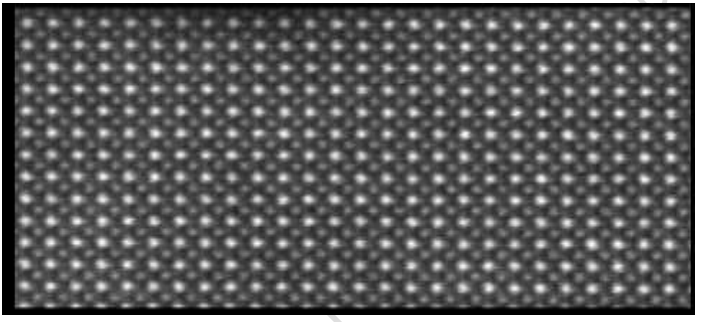

Liquids

A liquid is a nearly incompressible fluid that conforms to the shape of its container but retains a (nearly) constant volume independent of pressure. The volume is definite if the temperature and pressure are constant. When a solid is heated above its melting point, it becomes liquid, given that the pressure is higher than the triple point of the substance.For example, mercury, water, molten lava, Bromine, petrol, oil etc.

Social Research Foundation

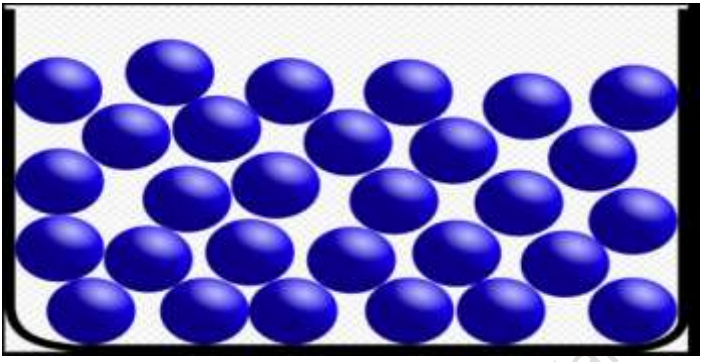

Gases

Gas molecules have enough kinetic energy so that the effect of intermolecular forces is small (or zero for an ideal gas), and the typical distance between neighbouring molecules is much greater than the molecular size. A gas has no definite shape or volume, but occupies the entire container in which it is confined. A liquid may be converted to a gas by heating at constant pressure to the boiling point, or else by reducing the pressure at constant temperature. For example: Nitrogen, Oxygen, CO_2, Helium etc.

Plasma

The plasma state was discovered by Irving Langmuir in 1928. It is an ionized gas at a high temperature. Plasma is gas that is superheated to the point some of its electrons break away from their nuclei and join other nuclei. Plasma are electrically conductive, produce magnetic fields and electric currents, and respond strongly to electro-magnetic forces. Plasma does not have definite shape or volume. In fact, it is estimated that 99% of the matter in the observable universe is plasma.

A plasma lamp, showing some of the more complex things plasma can do. The colours come from the gas in the lamp. Each type of gas makes a different colour.

Gas-filled tubes often contain plasma. This one shows neon. The colour of the tube gives a hint to the gas inside.

The Phenomenon of Lightning in sky.

Bose-Einstein Condensate

In 1924, Satyendra Bose and Albert Einstein predicted the existence of a new state of matter by applying statistics to quantum mechanics. According to the two physicists, when matter cools to temperatures just above absolute zero, in some cases the particles that constitute it all fall to the same low energy level or quantum state. This situation violates the principles of quantum physics: the particles become indistinguishable from one another and form a sort of "super-atom." [3]However, researchers believe the B.E. condersates may someday be used to make atomic lasers or super accurate clocks.

Research Foundation, Kanpur

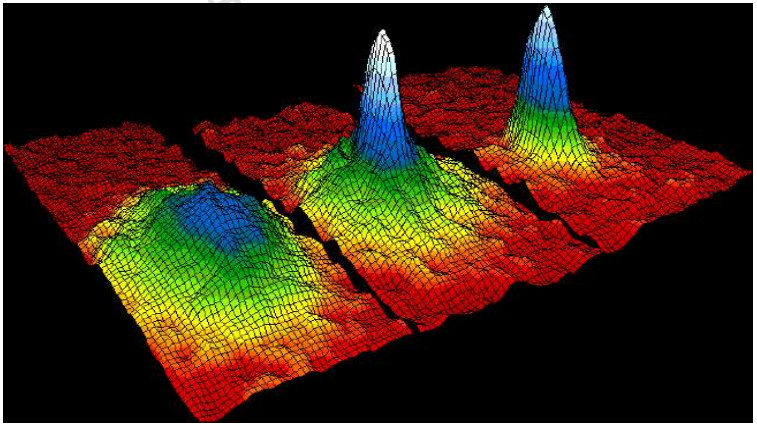

Velocity- distribution data (3 views) for a gas of rubidium atoms, confirming the discovery of a new phase of matter, the Bose–Einstein condensate. Left: just before the appearance of a Bose–Einstein condensate. Centre: just after the appearance of the condensate. Right: after further evaporation, leaving a sample of nearly pure condensate.

Quantum Spin Liquid

Nobel Prize winner Philip Warren Anderson was the first to predict the existence of quantum liquid spins in the 1973 as the ground state for a system of spins on a triangular lattice that interact antiferromagnetically with their nearest neighbours; i.e., neighbouring spins seek to be aligned in opposite directions. A quantum spin liquid state was first discovered in cesium chlorocuprate Cs_2CuCl_4 with a triangular lattice. QSL states supporting materials may helpful in data storage, memory, and high temperature super conductivity products.

The curious thing is that, certain conditions of pressure and temperature, some minerals under exhibit regions in this state, among them, herbersmithite.

Frustrated Ising spins on a triangle

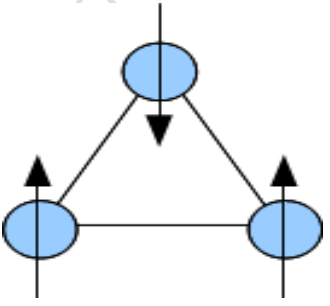

Research Foundation, Kanpur

Herbertsmithite, the mineral whose ground state was shown to have QSL behaviour

Degenerate State

Degenerate matter occurs due to gravitational pressure in certain types of collapsed stars. Matter composed of electrons, protons, neutrons or other fermions and follows Heisenberg Uncertainty Principle and Pauli's exclusion Principle. Since two particles cannot occupy the same space at the same moment, this causes the atoms to degenerate and lose their structure. For example: White dwarf, proton degeneracy, neutron degeneracy, metallic hydrogen, strange matter etc. In 1996, a tiny amount of degenerate metallic hydrogen was produced in a Lab. By applying high temp. and pressure but it existed for a microsecond.

A comparison between the white dwarf IK Pegasi B (center), its A-class companion IK Pegasi A (left) and the Sun (right). This white dwarf has a surface temperature of 35,500 K.

Super Ionic Ice

Water as a beginning and as an end. Water is the only substance present in nature in the three classical states, and it is also the substance in which, at the beginning of 2018, a new

form or state of arrangement was discovered: super ionic ice. To achieve this, ice crystals were subjected to a pressure 2 million times higher than atmospheric pressure and at a temperature close to 5,000°C. That brutal pressure forces the ice to adopt a very compact packing, but, at the same time, the high temperature dissolves the bonds of the water molecule. The result is that in super ionic ice two phases coexist: one liquid and one solid. Oxygen atoms adopt a crystalline structure, through which hydrogen nuclei flow. It is believed that super ionic ice could exist in large quantities in gaseous and icy giant planets such as Uranus or Neptune, within which the appropriate conditions for its formation are found. If it were confirmed that other substances subject to similar conditions also adopt this arrangement, we would be in the presence of a new state of matter.

1. Classical four states of matter are observable in everyday life.

2. Modern states are known to exist extremely in drastic conditions of nature.
3. Some other states are believed to be possible but remain theoretical for now. For a complete list of all exotic states of matter in as below in tabular form.

V · T · E	States of matter (list)
State	Solid · Liquid · Gas / Vapor · Plasma
Low energy	Bose–Einstein condensate · Fermionic condensate · Degenerate matter · Quantum Hall · Rydberg matter · Rydberg polaron · Strange matter · Superfluid · Supersolid · Photonic matter
High energy	QCD matter · Lattice QCD · Quark–gluon plasma · Color-glass condensate · Supercritical fluid
Other states	Colloid · Glass · Crystal · Liquid crystal · Time crystal · Quantum spin liquid · Exotic matter · Programmable matter · Dark matter · Antimatter · Metastable inner-shell molecular state · Magnetically ordered (Antiferromagnet · Ferrimagnet · Ferromagnet) · String-net liquid · Superglass

References

1. https://www.livescience.com/46506-states-of-matter.html

2. https://en.wikipedia.org/wiki/State_of_matter

3. https://www.bbvaopenmind.com/en

4. https://www.livescience.com/54652-plasma.html

5. https://en.wikipedia.org/wiki/listofstatesofmatter

Social Research Foundation

Research Current, ISBN : 978-81-951728-0-1

Coprophilous Fungi

Neena Srivastav
Assistant Professor
Department of Botany
D.S.N P.G. College
Unnao, Uttar Pradesh, India

Vinay Kumar Tiwari
Assistant Professor
Department of Botany
D.S.N P.G. College
Unnao, Uttar Pradesh, India

Social Research Foundation, Kanpur

There is a whole spectrum of fungi that spend their entire life on herbivore droppings. They are called Coprophilous (= dung loving) fungi. There are hundreds of species of fungi found on dung not to mention hundreds more microscopic species including amoebae, ciliates, flagellates, and other protozoa, rotifers ,tardiagrades, nematodes etc plus of course algae and all kinds of arthropods such as springtails and always of course insects and/or their larvae. Coprophilous fungi not only have interesting life cycles but they are often aesthetically very attractive.

Dung fungi survive passage through the GIT (Gastro intestinal Tract), germinate and grow in the freshly deposited dung. They form adhesive spores that are actively and violently discharged. The spores are deposited on vegetation, and are then consumed by herbivores to complete the cycle. Dung is an ideal medium for microbial growth as it consists of plant material plus the microbiota associated with its digestion.

The material is complex and includes carbohydrates, fatty acids, vitamins and amino acids. The fungi found growing in dung include those that have passed through the animal/ and saprobes that land deposition of the faeces.However, most studies of the ecology of dung have notes that the fungi on the surface consist of a group of recognizable taxa commonly including.

Zygomycota and related

Pilobolus, Pilaira, Mucor, Phycomyces and Piptocephalis, rhizopus, Syncehalastrum.

Ascomycota

Ascobolus, Saccobolus, Sordaria, Podospora, Chaetomium.

Basidiomycota

Coprinus and Nidulariales Herbivore dung supports a wide variety of coprophilous fungi. Herbivore dung typically contains plant material digested to varying extents. There are various mushroom producing coprophilous species specially in the genera Coprinus, Panaeolus and Psilocybe.A sequence of fruiting bodies appearing on dung can be seen by incubating a dung sample after the observations of many weeks. If freshly collected herbivore dung is allowed to incubate, a succession of fruiting structures may be observed. Commonly, the first fungi to sporulate are members of the zygomycota; they are followed by members of Ascomycota and then Basidiomycota.

The spores of many dung fungi are on the dung at the time it is dropped by an animal, for the animal will have swallowed many fungal spores in the course of feeding. Once released from their dung-inhabiting fruiting bodies, the spores of many drug fungi end up falling onto grass and leaves. May

Social Research Foundation, Kanpur

species of dung fungi have spores with thick walls, which weaken during passage through an animal's gut and so readly the spores for germination, once they have been dropped with animal's dropping. At the time the dung drops to the ground there are likely to be a number of fungal species with spores ready to germinate.

Dung fungi are among a variety of fungi found growing on faeces.Dung fungi have a close relationship with their herbivorous hosts. Their life cycle is closely adapted to using dung; elements of dispersal, reproduction and growth after insights into a complex interaction.

References

1. *Ann Bell's Books, Dung fungi: an illustrated guide to coprophilous fungi in New Zealand (Published by Victoria University Press, 1983).*
2. *An illustrated guide to the Coprophilous Ascomycetes of Australia (Published by Centralbureau Voor Schimmel Cultures, Utrecht, in 2005).*
3. *Coprophilous fungi from dung of the Greater one-horned Rhino in Kaziranga National Park, India and its implication to Paleoherbivory and Paleoecology (Sadhan K Basumatary and H.Gregory Mc Donald). Article published online by Cambridge University Press, volume 88, Issue 1, July 2017, PP. 14-22.*

Social Research Foundation, Kanpur